04 - संयुक्त राष्ट्र में दिखी भारत-पाकिस्तान की वास्तविक सोच

05 - एआई के दौर में महात्मा गांधी के प्रबंधकीय कौशल का महत्व

A Daily News Magazine

इंदौर

शनिवार, 04 अक्टूबर, 2025

06 - पीडब्ल्यूडी को अब दोबारा भेजना होगा प्रपोजल, मंडी के सामने लगता है बार...

07 - हमारे समाज का दर्पण बन गया है नवरात्र

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 346, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

भारत के 'सॉलिड' सुरक्षा तंत्र को ठोस 'विज़न' की दरकार

ले.जन. एच.एस. पनाग (रिटा.)

पिछले दिनों 'सुधारों का वर्ष : भविष्य की खातिर परिवर्तन' विषय पर 16वीं कंबाइंड कमांडर्स कॉन्फ्रेंस हुई। इसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'इंडियन आर्म्ड फोर्सेस विज़न 2047' को प्रस्तुत किया गया। यह विज़न 'विकसित भारत 2047' के लक्ष्य से जुड़ा है। इसके लिए ऐसी सेना की जरूरत बताई गई है, जो भारत की रणनीतिक स्वायत्तता और राष्ट्रीय हितों की पूरी तरह रक्षा कर सके।

प्रधानमंत्री ने 2025 को 'सुधारों का वर्ष' मानते हुए कहा कि रक्षा मंत्रालय और सेनाओं को भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए मिलकर काम करना होगा। आत्मनिर्भरता बढ़ाने और नई खोज (इन्वोवेशन) के लिए तेज़ी से कदम उठाने होंगे। यह निर्देश ऐसे समय पर आए हैं जब भारतीय वायुसेना ने तीनों सेनाओं के एकीकरण और थिएटर कमांड्स बनाने को लेकर मतभेद जताए हैं। 'इंडियन आर्म्ड फोर्सेस विज़न 2047' के विस्तार से बिंदु अभी गोपनीय रखे गए हैं और सार्वजनिक तौर पर उपलब्ध नहीं हैं, लेकिन माना जा रहा है कि इसमें सुरक्षा से जुड़े छोटे, मध्यम और लंबे समय तक के खतरों से निपटने के लिए कदम तय होंगे और नई तकनीक का इस्तेमाल भी शामिल होगा। सबसे बड़ा सवाल यह है कि इस विज़न को किस प्रक्रिया से तैयार किया गया है–क्या यह सेनाओं का खुद का मसौदा है या फिर यह सरकार की सुरक्षा नीति और रणनीति से निकला है?

भारत जैसे उभरते देश के लिए यह ज़रूरी है कि उसके पास राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा एक साफ विज़न, रणनीति और नीति हो। साथ ही, उसे इतनी सैन्य शक्ति भी बनानी होगी जिससे दुनिया में अपनी सही जगह बना सके। 2014 में जब से भाजपा सरकार ने बहुमत के साथ सत्ता संभाली है, तब से उसने राष्ट्रीय सुरक्षा को अपनी प्राथमिकता बनाया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक मज़बूत नेता माने जाते हैं। उनके पास सुरक्षा को लेकर स्पष्ट सोच है और वे सेना में बदलाव पर लगातार जोर देते रहे हैं। । 2014 और 2015 में कंबाइंड कमांडर्स कॉन्फ्रेंस में उनके भाषणों से यह साफ दिखा था। भारत के पास सुरक्षा प्रबंधन के लिए सभी ज़रूरी संस्थाएं मौजूद हैं। लेकिन इतनी राजनीतिक इच्छाशक्ति और संस्थाओं के होने के बावजूद भारत के पास अब तक कोई औपचारिक राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति या नीति नहीं है। सेनाएं जब भी रणनीति बनाने की कोशिश करती हैं तो उन्हें राजनीतिक भाषणों या फिर उन विचारों पर निर्भर रहना पड़ता है जो रक्षा मंत्रालय और पीएमओ द्वारा जाँचे गए होते हैं। इसका उदाहरण पाकिस्तान के मामले में दिखा। प्रधानमंत्री ने एक राजनीतिक सभा में 'न्यू नॉर्मल' की घोषणा कर दी। यानी एक युद्ध खत्म होने के बाद रणनीति तय की गई। अगर कोई औपचारिक राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति पहले से होती तो उसमें पहले ही स्पष्ट विकल्प मौजूद होते और पहलगाम हमले का तुरंत जवाब देना आसान हो जाता। असल में सेना ने 'न्यू नॉर्मल' जैसी रणनीति 25 साल पहले ही सुझा दी थी, लेकिन राजनीतिक टालमटोल और सेना के भीतर की देरी के कारण इसे कभी आधिकारिक रूप नहीं दिया गया। राष्ट्रीय सुरक्षा बहुत व्यापक विषय है. इसमें कई पहलू आते हैं - जैसे भू-रणनीति (जियो-पॉलिटिक्स), सेना, अर्थव्यवस्था, संसाधन, ऊर्जा, सूचना प्रणाली, खाद्य सुरक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, साइबर सुरक्षा सेना देश को भौतिक सुरक्षा देती है और जब राष्ट्रीय हितों पर खतरा आता है तो उनकी रक्षा करती है। राष्ट्रीय सुरक्षा का विज़न आमतौर पर अगले 15-20 साल की रणनीतिक परिस्थितियों और संभावित खतरों को ध्यान में रखकर बनाया जाता है। इसमें सेनाओं के लिए अल्पकालिक (शॉर्ट टर्म), मध्यकालिक (मीडियम टर्म) और दीर्घकालिक (लॉन्ग टर्म) लक्ष्य तय होते हैं। ज़्यादातर रणनीति का जोर अल्पकालिक और मध्यकालिक लक्ष्यों पर रहता है और इसकी समीक्षा हर 5 साल में की जाती है।

सरकार की जिम्मेदारी है कि वह राष्ट्रीय सुरक्षा की रणनीति और योजना बनाए। इसके लिए बजट भी तैयार करना पड़ता है। यह काम तार्किक रूप से राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद (एनएससी) का होना चाहिए, लेकिन फिलहाल यह जिम्मेदारी डिफेंस प्लानिंग कमिटी को दी गई है। इस कमिटी की कमान राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) के पास है और रक्षा मंत्री इसके अध्यक्ष होते हैं, जबकि रक्षा मंत्री का असली काम रक्षा नीति बनाना और उसे लागू कराना होना चाहिए। राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति असल में राष्ट्रीय रक्षा नीति के लिए एक ढांचा तैयार करती है। यह तय करती है कि कैसे सुरक्षा लक्ष्यों को हासिल किया जाए। इसमें यह भी शामिल है कि सैन्य साधनों (फौजी क्षमता) को कैसे विकसित और मजबूत किया जाए। रक्षा नीति का मकसद होता है कि दिए गए रक्षा बजट का अधिकतम और सही इस्तेमाल हो।

यानी, राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति और रक्षा नीति मिलकर यह तय करती हैं कि सेना को कैसे तैयार किया जाए और उसकी क्षमताओं को कैसे बढ़ाया जाए। इसके आधार पर सैन्य रणनीति बनती है, जो असल में सेना के इस्तेमाल का खाका तय करती है। यह पूरी प्रक्रिया ऊपर से नीचे (सरकार से सेना तक) चलनी चाहिए और क्रियान्वयन नीचे से ऊपर (सेना से सरकार तक रिपोर्टिंग) होना चाहिए। हमारी व्यवस्था अभी भी 20वीं सदी की लड़ाइयों के हिसाब से बनी हुई है। इसलिए बदलाव सेना को भविष्य के हाई-टेक युद्धों के लिए तैयार नहीं कर पाता। 'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद पता चला कि भारतीय वायुसेना ने अच्छा प्रदर्शन किया, लेकिन उसे गुणवत्ता और संख्या के लिहाज़ से और मज़बूत करने की ज़रूरत है। पिछले 13 साल से 114 एमआरसीए (लड़ाकू विमान) की ज़रूरत बनी हुई है, लेकिन अभी तक यह पूरी नहीं हुई। अगर औपचारिक रणनीति होती तो यह ज़रूरत 2020 तक पूरी हो जानी चाहिए थी। अब हमें वही विमान दोगुनी-तिगुनी कीमत पर खरीदने पड़ेंगे। हम संकट आने पर ही छोटे-छोटे बदलाव करते रहे हैं, इसलिए हमारी सैन्य क्षमता पिछले 20 सालों से लगभग वैसी ही बनी हुई है। भारत 20वीं सदी वाली सेना के साथ 21वीं सदी की लड़ाई नहीं जीत सकता। इसलिए ज़रूरी है कि सेना की संरचना बदली जाए, उसका पुनर्गठन हो और नई-नई तकनीकें उसमें शामिल की जाएं। इसी सोच के तहत 'इंडियन आर्म्ड फोर्सेस विजन 2047' सही दिशा में उठाया गया कदम है। इसमें समयबद्ध योजना और तय बजट के साथ बड़े पैमाने पर बदलाव का खाका बनाया जा सकता है। असल में यह योजना एक तय 'नेशनल सिक्योरिटी विजन' से निकलनी चाहिए थी, लेकिन चूंकि ऐसी कोई सुरक्षा दृष्टि, रणनीति या रक्षा नीति तय नहीं है, इसलिए 'इंडियन आर्म्ड फोर्सेस विजन 2047' का भविष्य अभी अनिश्चित दिख रहा है। अभी की स्थिति यह है कि हम सैन्य मामलों में पाकिस्तान से थोड़े ही आगे हैं, जबकि चीन से काफी पीछे हैं।

2047 तक डेवलप्ड इकोनॉमी बनने का है टारगेट

● वित्तमंत्री बोलीं-ग्लोबल झटकों को झेल सकता है भारत ● सीतारमण ने कहा-इसके लिए 8 फीसदी ग्रोथ रेट जरूरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि मौजूदा ग्लोबल उथल-पुथल का भारत की जीडीपी ग्रोथ पर सीमित प्रभाव पड़ेगा। उन्होंने कहा कि भारत बाहरी दबाव सहने और व्यापार-ऊर्जा असंतुलन से निपटने में सक्षम है। सीतारमण ने बताया कि भारत का टारगेट 2047 तक डेवलप्ड इकोनॉमी बनना है। विकसित भारत के लक्ष्य को हासिल करने के लिए 8 फीसदी की ग्रोथ रेट की जरूरत है। शुक्रवार (3 अक्टूबर) को नई दिल्ली में चौथे कौटिल्य इकोनॉमिक कॉन्क्लेव का उद्घाटन करते हुए वित्त मंत्री ने यह बात कही। सीतारमण ने कहा कि भारत की

इकोनॉमिक ग्रोथ की रीढ़ डोमेस्टिक फैक्टर्स यानी घरेलू कारक हैं। उन्होंने कहा कि दुनिया अनिश्चितता और अस्थिरता के दौर से गुजर रही है। जिसे वे एक टेम्परेरी डिसरप्शन यानी रुकावट के बजाय स्ट्रक्चरल बदलाव मानती हैं। सीतारमण ने कहा कि भारत का टारगेट 2047 तक विकसित अर्थव्यवस्था बनना है। साथ ही आत्मनिर्भरता को मजबूत करना है। हालांकि, उन्होंने स्पष्ट किया कि आत्मनिर्भरता का मतलब क्लोज्ड इकोनॉमी की ओर बढ़ना नहीं है। विकसित भारत के लक्ष्य को हासिल करने 8 फीसदी की ग्रोथ रेट चाहिए।

सुप्रभात

वो और मैं

नदी के तटों की भाँति

साथ तो चलते हैं, सम्मुख होकर

भी समानांतर रहते हैं

एक ही दिशा में, एक लक्ष्य लिए

एकसाथ रहते हुए भी

कभी दूर तो कभी

समीप बहते हैं

एकत्व हैं हम जीवन में

पूरक हैं परस्पर भी

विरुद्ध न जाने क्यों

अनायास हो जाते हैं

अस्तित्व हैं, एक दूसरे पर

निर्भरता में बँधे

तभी हम कदाचित

फिर से निकट आ जाते हैं...

- काव्याक्षरा

अबकी बार पाकिस्तान को भूगोल से ही मिटा देंगे...

● आर्मी चीफ ने सेना के जवानों से कहा-आप तैयार रहें

जनरल बोले-भगवान ने चाहा तो जल्द मौका मिलेगा

जयपुर (एजेंसी)। श्रीगंगानगर में आर्मी चीफ जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने कहा- जिस तरह से भारत ने ऑपरेशन सिंदूर 1.0 में संयम रखा है, अबकी बार भारत ये संयम नहीं रखेगा। इस बार हम आगे की

कार्रवाई करेंगे और कुछ इस तरह की कार्रवाई करेंगे कि पाकिस्तान को सोचना पड़ेगा कि उसे भूगोल में रहना है या नहीं।

अगर पाकिस्तान को भूगोल में अपनी जगह बनानी है, तो उसे अब आतंकवाद को संरक्षण देना बंद करना पड़ेगा। सेना प्रमुख ने जवानों से कहा कि अब आप अपनी पूरी तैयारी करके रखें, अगर भगवान ने चाहा तो जल्द ही ये मौका मिलेगा।

सेना प्रमुख शुक्रवार सुबह घड़साना के गांव 22 एमडी में आर्मी छावनी पहुंचे थे। न्यूज एजेंसी के अनुसार आर्मी चीफ ने कहा- ऑपरेशन सिंदूर में भारतीय सेना ने पाकिस्तान के 9 आतंकी ठिकानों को नष्ट किया, जिसमें 100 से ज्यादा आतंकी मारे गए थे। ऑपरेशन सिंदूर हमारी जिंदगी से इस तरह से जुड़ गया है कि जब तक हम जीवित रहेंगे, तब तक यह हमारे साथ रहेगा।

ऑपरेशन सिंदूर में आतंकियों के 9 ठिकाने नष्ट किए

सेना प्रमुख ने कहा- पहलगाम में आतंकी हमला होने के बाद जब भारत ने ऑपरेशन सिंदूर शुरू किया था। उस समय पूरा विश्व भारत के साथ जुड़ गया था। पूरे विश्व ने इस आतंकी हमले की निंदा की थी। उन्होंने कहा- भारत ने पाकिस्तान में 9 टारगेट हिट किए थे, इनमें से 7 आर्मी ने और 2 वायु सेना की ओर से हिट किए गए थे। आर्मी चीफ जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने कहा- जिन आतंकी ठिकानों को भारत ने खत्म किया था, उनका सबूत भी पूरी दुनिया को दिखाया है। अगर भारत सबूत नहीं दिखाता तो पाकिस्तान इन सबको छुपा लेता। उन्होंने कहा कि इस बार भारत पूरी तैयारी के साथ है। आर्मी चीफ जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने कहा- ऑपरेशन सिंदूर 1.0 में अच्छा काम करने वाले सेना के तीन अधिकारियों को विशेष रूप से सम्मानित किया। कार्यक्रम में बीएसएफ की 140वीं बटालियन के कमांडेंट प्रभाकर सिंह और हवलदार मोहित गैरा को सम्मानित किया गया।

मप्र में पहली बार सोयाबीन में पीला मोजेक पर राहत

13 जिलों के किसानों को बांटे 653 करोड़ रुपए, सीएम बोले- सोयाबीन भावांतर का पैसा जल्द मिलेगा

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शुक्रवार को कहा कि प्रदेश में सोयाबीन फसल में पीला मोजेक रोग लगने पर पहली बार सरकार राहत राशि दे रही है। उन्होंने किसानों को आश्वस्त किया कि सरकार के पास धन की कोई कमी नहीं है। किसान अपनी सोयाबीन फसल बेचने के लिए पंजीयन कराएं, सभी को भावांतर की राशि भी जल्दी मिलेगी। सीएम यादव ने कहा कि भावांतर में अगर एक हजार रुपए देना पड़ा तो वह भी सरकार देगी।

इससे पहले मुख्यमंत्री ने सिंगल क्लिक से अतिवृष्टि और बाढ़ प्रभावित किसानों के खातों में 653.34 करोड़ रुपए की राहत राशि जमा कराई। इस दौरान उन्होंने किसानों से संवाद भी किया। सीएम यादव ने कहा कि किसानों की समस्याओं को सरकार हमेशा प्राथमिकता देती है। उन्होंने किसानों को राष्ट्र की रीढ़ बताते हुए कहा कि जैसे सीमाओं पर जवान देश की रक्षा करते हैं, वैसे ही खेतों में किसान देशवासियों के लिए अनवरत मेहनत करते हैं।

13 जिलों के किसानों को दी राशि- सरकारी आंकड़ों के अनुसार 13 जिलों की 52 तहसीलों के 8 लाख 84 हजार 772 किसान अतिवृष्टि और बाढ़ से प्रभावित हुए हैं। राहत राशि जिन जिलों के किसानों को दी गई है उनमें मंदसौर, विदिशा, सिवनी, बड़वानी, नीमच, रतलाम, दमोह, बुरहानपुर, मंडला, उज्जैन, खंडवा और शहडोल शामिल हैं। सीएम यादव ने कहा कि जो कहा है वह किया है और जो कहते हैं वह करते हैं। 6 जिलों में 322 करोड़ की राशि सोयाबीन फसल प्रभावित किसानों को बांटी गई है। उन्होंने कहा कि किसानों के लिए हमने वार देखा न त्योहार लोगों की समस्याओं को प्राथमिकता दी है।

रतलाम के किसानों को 171 करोड़ दिए, दस अक्टूबर को किसान सम्मेलन में जाएंगे सीएम

रतलाम जिले के किसानों से चर्चा करते हुए मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने कहा कि 171 करोड़ रुपए रतलाम के किसानों को बांटे गए हैं। राजस्व मंत्री करन सिंह वर्मा ने कहा कि किसी भी जिले को एक बार में इतनी राशि पहली बार दी गई है। सीएम मोहन यादव ने कहा कि वे 10 अक्टूबर को रतलाम आएंगे और वहां के किसान सम्मेलन में शामिल होंगे। भाजपा विधायक राजेंद्र पांडेय ने कहा कि बीमा कंपनियों से भी किसानों को राशि सीएम दिला रहे हैं, इसलिए किसान खुश हैं। किसान प्रहलाद पाटीदार ने कहा कि दो बार सोयाबीन की फसल लगाई थी जो बारिश के कारण नष्ट हो गई है।

मंदसौर के किसान बोले- दिवाली से पहले सरकार ने कराई दिवाली- मंदसौर जिले के किसान रामदास बैरागी ने कहा कि सोयाबीन पीला मोजेक पर पहली बार चिंता की गई और राहत राशि सरकार और प्रशासन ने दिलाई है। सरकार ने ऐसा करके दीवाली से पहले दीवाली कराई है। रेखा देवी ने कहा कि सरकार ने किसानों के लिए दरियादिली दिखाई है। दीवाली के पहले सरकार ने किसानों की बल्ले बल्ले कर दी है। गरोठ निवासी ओमप्रकाश ने कहा कि सरकार ने बुरे वक्त में मदद की है। 63 हजार रुपए मिले हैं। सुनीता शर्मा ने कहा कि मुख्यमंत्री ने किसानों के लिए जो सोचा है, उसके लिए वे सीएम मोहन यादव का धन्यवाद करती हैं। नीमच जिले के किसानों के साथ चर्चा के दौरान भाजपा नेताओं ने कहा कि कांग्रेस विरोध करने की तैयारी में थी, लेकिन सरकार ने समय पर राहत देकर कांग्रेसियों का मुंह बंद कर दिया है। अनावारी के आधार पर बीमा कंपनियों से राहत राशि दिलानी की मांग की गई।

अमित शाह ने कुरुक्षेत्र में पुलिस का वर्किंग सिस्टम देखा

रोहतक में डेयरी प्लांट का उद्घाटन किया, बोले-सभी जरूरतें पूरी होंगी

रोहतक/कुरुक्षेत्र (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह शुक्रवार को हरियाणा दौरे पर रहे। उन्होंने कुरुक्षेत्र में ब्रह्मसरोवर के पास मेला ग्राउंड में 3 नए आपराधिक कानूनों पर आधारित प्रदर्शनी देखी। उन्हें दिखाया गया कि डायल 112 कैसे रिस्पॉन्स करती है, घटनास्थल पर पहुंचकर जांच कैसे की जाती है और पुलिस थाने में कैसे वर्किंग होती है। शाह 12 जिलों में 825 करोड़ के प्रोजेक्ट्स का उद्घाटन व शिलान्यास भी करेंगे। इससे पहले, अमित शाह रोहतक की महर्षि दयानंद यूनिवर्सिटी के खेल मैदान में पहुंचे। यहां उन्होंने साबर डेयरी प्लांट का उद्घाटन किया। उनके साथ सीएम नायब सैनी भी मौजूद रहे। रोहतक में अमित शाह ने कहा कि यह लगभग 350 करोड़ रुपए की लागत से तैयार किया गया देश का सबसे बड़ा दही, छाछ, योगर्ट और मिठाई उत्पादन केंद्र है। अब यहीं से पूरे एनसीआर की जरूरतें पूरी होंगी। इससे

आय बढ़ेगी। आने वाले समय में 75 हजार डेयरी समितियां बनाई जाएंगी। उधर, अमित शाह के आने से पहले छात्र संगठनों ने विरोध प्रदर्शन किया। छात्र संगठनों ने आरोप लगाया है कि कार्यक्रम के लिए रात को ग्राउंड में सड़क बनाने और कच्चे ग्राउंड में रोलर चलाकर उसे खराब कर दिया गया है। इसे देखते हुए पुलिस ने छात्र नेता प्रदीप देशवाल को पुलिस ने हाउस अरेस्ट किया है। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने खादी एवं ग्राम उद्योग आयोग द्वारा आयोजित खादी कारीगर महोत्सव में की बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की। रोहतक में आयोजित कार्यक्रम में मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने खादी की पगड़ी पहना कर उनका स्वागत किया। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने अपने संबोधन में कहा कि खादी कारीगर महोत्सव में गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह के हरियाणा में पधारने पर बहुत-बहुत स्वागत है। आज हरियाणा की धरा एक नए स्वदेशी आंदोलन की साक्षी बन रही है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 30 °c न्यूनतम 25°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ शनिवार, 04 अक्टूबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

आरएसएस के कार्यक्रम में छाए रहे आंबेडकर

● मनुस्मृति नहीं, अब भीम स्मृति से चलेगी सरकार

नागपुर (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी स्थापना दिवस के अवसर पर गुरुवार को आयोजित कार्यक्रम में दलित चिंतक और संविधान निर्माता डॉ. भीमराव आंबेडकर के विचारों का विशेष उल्लेख किया गया। संघ प्रमुख मोहन भागवत और पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद दोनों ने ही अपने संबोधन में आंबेडकर के सिद्धांतों को उल्लेख किया। मुख्य अतिथि के तौर में कार्यक्रम में शामिल हुए पूर्व राष्ट्रपति ने पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के भाषण का हवाला देते हुए कहा कि उनकी सरकार मनुस्मृति नहीं, भीम स्मृति (संविधान) के आधार पर चलेगी। उन्होंने कहा, हम भीमवादी हैं। जिसका अर्थ है कि हम आंबेडकर के विचारों पर चलने वाले हैं। अपने संबोधन में आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने भी आंबेडकर का उल्लेख करते हुए सामाजिक एकता का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि आंबेडकर ने देश की एकता की नींव को अंतर्निहित सांस्कृतिक एकता बताया था। भागवत ने चेतावनी दी कि पड़ोसी देशों की तरह भारत में भी कुछ ताकतें अस्थिरता फैलाने की कोशिश कर सकती हैं, जिनसे सतर्क रहने की जरूरत है। कोविंद ने अपने भाषण में डॉ. आंबेडकर और आरएसएस संस्थापक डॉ. केबी हेडगेवार को राष्ट्र निर्माता बताया। उन्होंने कहा कि दोनों ने समाज और देश की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आपको बता दें कि संघ अपने सौवें वर्ष में प्रवेश कर रहा है और इस मौके पर वह आंबेडकर के विचारों और अपनी वैचारिक पृष्ठभूमि के बीच साम्यता दिखाने पर बल दे रहा है। विशेष रूप से अनुसूचित जाति समुदाय में आंबेडकर की पूजनीय छवि को देखते हुए संघ ऐक्टिव है।

मराठा आरक्षण पर अपने ही उठा रहे 'उंगली'

● पंकजा मुंडे ने कहा-हमारी थाली से मत छीनिए

बीड़ (एजेंसी)। महाराष्ट्र सरकार में मंत्री पंकजा मुंडे मराठा आरक्षण को लेकर अपनी ही सरकार के खिलाफ विरोध दर्ज करवाती नजर आ रही हैं। गुरुवार को उन्होंने मराठों को सरकारी नौकरियों और एडमिशन के समय दिए जाने वाले आरक्षण का समर्थन किया। हालांकि उन्होंने कहा कि मराठों को यह आरक्षण ओबीसी जाति से छीनकर नहीं दिया जाना चाहिए, क्योंकि इस समुदाय के लोग पहले से ही भूख से जूझ रहे हैं। बीड़ जिले के सावरगांव घाट में दशहरा के अवसर पर आयोजित एक रैली को संबोधित करते हुए पंकजा ने कहा कि लोगों को जातिवाद के राक्षस को नष्ट करने की जरूरत है। उन्होंने कहा, गोपीनाथ मुंडे ने मराठा आरक्षण का समर्थन किया था और हम भी इसके पक्ष में हैं लेकिन इसे हमारी थाली से मत छीनिए। मेरा समुदाय आज भी भूख से जूझ रहा है। लोगों का संघर्ष देखने के बाद मेरी नींद उड़ गई है। उन्होंने कहा, मैंने कभी भी उन लोगों की जाति पर ध्यान नहीं दिया, जिनके लिए मैंने चुनाव प्रचार किया। मैंने इसे नजर अंदाज किया और हमेशा मानवता को महत्व दिया। आपको बता दें मराठा आरक्षण कार्यकर्ता मनोज जरांगे के मुंबई में 29 अगस्त से पांच दिन तक अनशन करने के बाद महाराष्ट्र सरकार ने दो सितंबर को एक सरकारी आदेश जारी किया गया था। इसके तहत मराठा समुदाय के पात्र सदस्य कुनबी जाति प्रमाण पत्र के लिए आवेदन कर सकेंगे।

मणिपुर में सुरक्षाबलों का अब तगड़ा ऐक्शन

नई दिल्ली (एजेंसी)। मणिपुर में सुरक्षा बलों के हाथ बड़ी कामयाबी लगी है। यहां पर सुरक्षा बलों ने मणिपुर में प्रतिबंधित कुकी संगठन के एक

प्रतिबंधित कुकी संगठन का चीफ और तीन उग्रवादी गिरफ्तार

स्वयंभू प्रमुख समेत चार उग्रवादियों को गिरफ्तार किया है। इस बात की जानकारी पुलिस ने दी है। दरअसल, सुरक्षा बलों ने बुधवार को चुड़चांपुर जिले के एस मुनुआम से चिन कुकी मिजो आर्मी के स्वयंभू कमांडर इन चीफ पाओखोलेन गुइटे को कस्टडी में लिया है। जानकारी के अनुसार, भारत-म्यांमार सीमा पार से हथियारों और नशीले पदार्थों की तस्करी में गुइटे शामिल था। सुरक्षा बलों ने उसके पास से दो एके-47 राइफल, विभिन्न प्रकार के गोलाबारुद के 181 राउंड, 1,00,000 रुपये नगद और एक कार बरामद की है। इसके अलावा सुरक्षा बलों ने गुरुवार को इंफाल पश्चिम जिले में अलग-अलग जगहों से प्रतिबंधित पीपुल्स लिबरेशन आर्मी के दो कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया। वे घाटी क्षेत्र में ईंट भट्टों के मालिकों और जनता से जबरन वसूली में शामिल थे।

जबलपुर में हुई बारिश, 17 और जिलों में गिरेगा पानी

रीवा, मऊगंज, सीधी-सिंगरौली में भारी बारिश का अलर्ट; आज भी स्ट्रॉन्ग सिस्टम रहेगा

भोपाल (नप्र)। जबलपुर में शुक्रवार दोपहर को बारिश हुई। आज मध्यप्रदेश के कुल 17 जिलों में भारी या अति भारी बारिश का अलर्ट है। मौसम विभाग ने 4 जिले- रीवा, मऊगंज, सीधी और सिंगरौली में अगले 24 घंटे के दौरान 8 इंच तक बारिश होने का अनुमान जताया है। स्ट्रॉन्ग सिस्टम की एक्टिविटी 4 अक्टूबर को भी बनी रहेगी। मौसम वैज्ञानिक अरुण शर्मा ने बताया, देश के पूर्वी और पश्चिमी हिस्से में डिप्रेशन और डीप डिप्रेशन एक्टिव है। वहीं, दो साइक्लोनिक सकुर्लेशन (चक्रवात) एक्टिव है। इनमें से एक साइक्लोनिक सकुर्लेशन सिस्टम एमपी के पूर्वी हिस्से के ऊपर एक्टिव है। जिसका असर शुक्रवार से देखने को मिलेगा। अगले 48 घंटे तक भारी बारिश का अलर्ट है।

तीन जिलों में बारिश- सीधी, सिंगरौली और मऊगंज जिले में शुक्रवार को बारिश हुई। सीधी में सुबह करीब 10:30 बजे से रुक-रुककर बारिश हो रही है। यहां पिछले 24 घंटे में 6.59 इंच बारिश दर्ज की गई है। सिंगरौली में भी दोपहर करीब 3 बजे बारिश शुरू हो गई। यहां बैढ़न समेत देवसर और सरई इलाके में भी बारिश जारी है। जिले में अति भारी बारिश का अलर्ट जारी किया गया है। मऊगंज के ग्रामीण इलाके में भी बारिश हुई।

इन जिलों में आज तेज बारिश की संभावना- मौसम विभाग ने रीवा, मऊगंज, सीधी और सिंगरौली में अति भारी बारिश का ऑरेंज अलर्ट बताया है। वहीं, जबलपुर, सतना, पन्ना, मैहर, दमोह, कटनी, उमरिया, शहडोल, अनूपपुर, डिंडौरी, मंडला, नरसिंहपुर और छिंदवाड़ा में भारी बारिश का यलो अलर्ट है। रविवार से सिस्टम कमजोर होगा। हालांकि, कहीं-कहीं हल्की बारिश हो सकती है।

नर्मदापुरम में आधा इंच से ज्यादा पानी गिरा- इससे पहले प्रदेश में दशहरे के दिन भी बारिश का दौर जारी रहा। नर्मदापुरम में आधा इंच से ज्यादा पानी गिर गया। वहीं, दतिया-नरसिंहपुर में आधा इंच बारिश हुई। भोपाल, इंदौर, छतरपुर के नौगांव, सागर, टीकमगढ़ में भी बूंदाबांदी हुई।

10 अक्टूबर तक विदा होगा मानसून- प्रदेश के 12 जिलों से मानसून विदा हो चुका है। इनमें ग्वालियर, श्योपुर, मुरैना, भिंड, दतिया, शिवपुरी, गुना, आगर-मालवा, नीमच, मंदसौर और रतलाम भी शामिल हैं। राजगढ़ और अशोकनगर के कुछ हिस्से से मानसून विदा हुआ है। मौसम विभाग की माने तो मानसून की वापसी के लिए अभी परिस्थिति अनुकूल नहीं है, लेकिन 10 अक्टूबर तक पूरे प्रदेश से मानसून विदाई ले लेगा।

बता दें कि इस साल मानसून ने मध्यप्रदेश में 16 जून को दस्तक दी थी। समय से एक दिन बाद मानसून प्रदेश में एंटर हुआ था। मौसम विभाग के अनुसार, 6 अक्टूबर तक प्रदेश के सभी जिलों से मानसून विदा हो जाता है, लेकिन नया सिस्टम बनने से विदाई की तारीख आगे भी बढ़ सकती है।

गुना में सबसे ज्यादा बारिश- इस बार गुना में सबसे ज्यादा पानी गिरा है। 65.6 इंच बारिश दर्ज हुई। मंडला-रायसेन में 62 इंच से अधिक और श्योपुर-अशोकनगर में 56 इंच से ज्यादा बारिश हो चुकी है। वहीं, शाजापुर, खरगोन, खंडवा, बड़वानी और धार सबसे कम बारिश वाले टॉप-5 जिलों में शामिल हैं।

सोनमवांगचुक की पत्नी की एससी में बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका

● बोलीं-एक हफ्ता हो गया, न पति की सेहत, न ही गिरफ्तारी की वजह पता

नई दिल्ली (एजेंसी)। सोनम वांगचुक की पत्नी गीतांजलि जे अंगमो ने अपने पति की रिहाई की मांग करते हुए सुप्रीम कोर्ट का रुख किया है। गीतांजलि जे अंगमो ने वांगचुक को तुरंत रिहा करने की मांग करते हुए हेबियस कार्पस (बंदी प्रत्यक्षीकरण) याचिका लगाई है। डॉ. अंगमो ने 2 अक्टूबर को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 32 के तहत सुप्रीम कोर्ट में रिट याचिका दायर की। उन्होंने दावा किया कि उनके पति की गिरफ्तारी अवैध है। अंगमो ने यह आरोप भी लगाया कि दिल्ली में हर जगह उनका पीछा किया जा रहा है। उनके एक कर्मचारी को भी हिरासत में रखा गया है। वांगचुक फिलहाल जोधपुर की जेल में हैं, उन्हें 24 सितंबर को लेह हिंसा भड़काने के आरोप में राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम के तहत 26 सितंबर को गिरफ्तार किया गया था। हिंसा में 4 लोग मारे गए थे। सोनम के अलावा बंद 56 आंदोलनकारियों में से 26 को 2 अक्टूबर को छोड़ दिया गया।

आमिर मुत्ताकी की भारत यात्रा बढ़ाएगी पाकिस्तान का टेंशन

मुनीर के देश को झटका, अमेरिका को भी लगेगी मिर्ची!

नई दिल्ली (एजेंसी)। अफगानिस्तान के विदेश मंत्री आमिर खान मुत्ताकी की भारत यात्रा से पहले बगराम एयरबेस विवाद ने पाकिस्तान और अमेरिका की बेचैनी बढ़ा दी है। आमिर खान मुत्ताकी ने साफ कह दिया है कि अफगानिस्तान की जमीन का एक इंच भी किसी विदेशी सेना को नहीं दिया जाएगा। उनका बयान तब आया जब अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बगराम एयरबेस को दोबारा अमेरिकी नियंत्रण में लेने की मांग की। मुत्ताकी ने दोहा समझौते का हवाला देते हुए कहा कि विदेशी ताकतें अफगानिस्तान की राजनीतिक स्वतंत्रता और संप्रभुता में हस्तक्षेप नहीं कर सकतीं। अफगानिस्तान में अमेरिकी प्रभाव खत्म करने और भारत के साथ तालिबान सरकार की बातचीत पाकिस्तान के लिए असुविधाजनक है। मुत्ताकी की भारत यात्रा को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद से मंजूरी मिल चुकी है, जिससे भारत और अफगानिस्तान के रिश्ते नए स्तर पर जा सकते हैं। यह पाकिस्तान की रणनीतिक भूमिका को कमजोर करेगा क्योंकि इस्लामाबाद हमेशा चाहता रहा है कि काबुल में भारत की हिस्सेदारी सीमित रहे। अमेरिका ने पहले मुत्ताकी की पाकिस्तान यात्रा रोकने की कोशिश भी की थी, जिससे यह संकेत गया कि अफगान नेतृत्व अपनी विदेश नीति में पाकिस्तान पर पूरी तरह निर्भर नहीं है। बगराम एयरबेस को अमेरिका रणनीतिक दृष्टि से बेहद अहम मानता है।

बिहार में चुनाव आयोग 2 दिन फाइनल मीटिंग

● दिल्ली लौटते ही ज्ञानेश करेंगे तारीखों का ऐलान

पटना (एजेंसी)। भारत निर्वाचन आयोग का फाइनल बिहार दौरा शुरू हो गया है। आगामी बिहार विधानसभा चुनाव के मद्देनजर केंद्रीय चुनाव आयोग की टीम शुक्रवार रात को पटना पहुंच गई है। देश के मुख्य चुनाव आयुक्त (सीईसी) ज्ञानेश्वर कुमार भी शनिवार को पटना आएंगे। 4 और 5 अक्टूबर को आयोग की टीम आगामी विधानसभा चुनाव की तैयारियों की समीक्षा के लिए दनादन बैठकें करेगी। फिर दिल्ली लौटने के बाद किसी भी समय सीईसी ज्ञानेश कुमार के द्वारा बिहार चुनाव की तारीखों का ऐलान किया जा सकता है। चुनाव कार्यक्रम घोषित होने के बाद बिहार में आदर्श आचार संहिता लागू हो जाएगी। चुनाव आयोग की बिहार के प्रमुख राजनीतिक दलों के साथ शनिवार 4 अक्टूबर को अहम बैठक है। यह बैठक पटना के होटल ताज में सुबह 10 बजे से दोपहर 12 बजे तक होगी।

● अमेरिका के दबाव के आगे कभी नहीं झुकेगा भारत

पुतिन बोले-मैं पीएम मोदी को जानता हूं, भारतीय अपमान बर्दाश्त नहीं करते

सोची (एजेंसी)। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने तेल खरीद के मुद्दे पर अमेरिकी दबाव की आलोचना की और कहा कि भारत झुकने वाला नहीं है। उन्होंने सोची शहर में गुरुवार को आयोजित वाल्दाई पॉलिसी फोरम को संबोधित करते हुए यह कहा कि पीएम मोदी कभी भी ऐसा फैसला नहीं करेंगे, जो भारत की संप्रभुता के खिलाफ हो। पुतिन ने कहा कि अगर रूस के ट्रेड पार्टनर्स पर ऊंचे टैरिफ लगाए गए, तो इसका असर पूरी दुनिया की ऊर्जा कीमतों पर पड़ेगा। कीमतें बढ़ेंगी और अमेरिकी फेडरल रिजर्व को मजबूरी में ब्याज दरें ऊंची रखनी होंगी।

यूरोपीय देशों से कहा-रूस का डर भूलकर चैन से सोएं

पुतिन ने कहा कि यूरोपीय संघ के नेता अपने देश की समस्याएं ठीक करने के बजाय लोगों में दहशत फैला रहे हैं और युद्ध का डर दिखा रहे हैं। वे बार-बार अपने लोगों से कहते रहते हैं कि रूस नाटो देशों पर हमला करने वाला है। मैं उनसे यही कहूंगा कि उन्हें इस बात को भूलकर चैन से सोना चाहिए।

योगी सरकार के ऐक्शन से भड़के पार्टी के ही नेता

'आई लव मोहम्मद' मामले में दी इस्तीफे की धमकी

जम्मू (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के बरेली और कानपुर जैसे शहरों में आई लव मोहम्मद के पोस्टर लेकर सड़कों पर उतरने वाली भीड़ के खिलाफ योगी सरकार की सख्ती पर भाजपा के अंदर ही आवाज उठी है। जम्मू-कश्मीर के भाजपा नेता जहांजैब सिरवाल ने योगी सरकार के ऐक्शन पर ऐतराज जताया है और कहा कि यह सबका साथ और सबका विकास के नारे के विपरीत है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार की पुलिस जिस तरह ऐक्शन ले रही है, वह बदले की कार्रवाई करने जैसा है। इससे मुसलमानों का भरोसा भाजपा सरकार पर कम हुआ है। उन्होंने कहा कि यदि इसमें सुधार नहीं किया गया तो मेरे पास इस्तीफा देने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचेगा। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश के जो हालात हैं, वह पीएम के विश्वास के विजन के खिलाफ हैं।

'कर्ज' पर नया सिस्टम लाने की तैयारी में आरबीआई

● ईएमआई नहीं चुकाई तो प्रोडक्ट इस्तेमाल नहीं कर पाएंगे ● मोबाइल में पहले से एप इंस्टॉल होगा, जो उसे बंद करेगा

मुंबई (एजेंसी)। भारतीय रिजर्व बैंक ऐसी व्यवस्था बनाने की तैयारी कर रहा है, जिसमें कंज्यूमर अगर ईएमआई नहीं चुकाए तो कर्ज पर खरीदा गया प्रोडक्ट और उसकी सेवाएं दूर से बंद की जा सकेंगी। इसका उद्देश्य मोबाइल, टीवी, वॉशिंग मशीन जैसे प्रोडक्ट्स के लिए छोटे कर्जों की वसूली को आसान बनाना है। आरबीआई ने बैंकों और वित्तीय संस्थानों से इस विषय पर चर्चा की है। फाइनेंस एक्सपर्ट आदिल शेट्टी बताते हैं कि रिजर्व बैंक को एक खास पहलू पर भी गौर करने की जरूरत होगी। फोन, लैपटॉप या इस तरह की अन्य चीजें खरीदने के लिए मिलने वाला कर्ज कोलेटरल-फ्री होता है। यानी इनके बदले ग्राहक की कोई संपत्ति गिरवी नहीं रखनी पड़ती। इसलिए इनकी ब्याज दर ज्यादा यानी 14-16 फीसदी होती है। ऐसे में यदि नई व्यवस्था लागू होती है तो ये कर्ज सुरक्षित लोन (जैसे होम, ऑटो लोन) की कैटेगरी में आ आएंगे। ऐसे में बैंकों को ये अधिकार देने से पहले ऐसे लोन की कैटेगरी बदलनी होगी और ब्याज दरें भी घटानी होंगी। आरबीआई जिस व्यवस्था पर विचार कर रहा है, वह मुख्य रूप से छोटे उपभोक्ता लोन (जैसे मोबाइल, स्मार्ट टीवी, वॉशिंग मशीन, इलेक्ट्रॉनिक्स) पर लागू होगी। ईएमआई पर खरीदे प्रोडक्ट में पहले से एप या सॉफ्टवेयर डालेंगे। ग्राहक किस्त नहीं चुकाता, तो उस सॉफ्टवेयर से वह प्रोडक्ट दूर से ही लॉक कर दिया जाएगा। नया नियम यह सुनिश्चित करेगा कि ग्राहक की पूर्व सहमति ली जाए और फोन लॉक होने पर भी उसका निजी डेटा सुरक्षित रहे। यानी यहां 'सेवाएं बंद' करने का मतलब है कि फोन (या डिवाइस) इस्तेमाल योग्य न रहे, जब तक बकाया चुकता न हो। यदि इन्हें लॉक करने की अनुमति बैंकों को दे दी जाती है तो उन्हें लाखों लोगों के डेटा का एक्सेस मिल जाएगा। ये डेटा वहां से लीक हो सकते हैं। इससे ब्लैकमेलिंग और फिरौती की घटनाएं बढ़ सकती हैं। आरबीआई और बैंकों को इस पहलू पर गौर करना पड़ेगा।

'नो एंट्री' में घुसने वाले 15 वाहनों पर कार्रवाई

इंदौर। शहर में सुगम सुरक्षित व सुखद यातायात के लिए वरिष्ठ अधिकारियों के दिशा निर्देशन में पुलिस द्वारा लगातार यातायात प्रबंधन का कार्य एवं नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहन चालकों के विरुद्ध चालानी कार्यवाही भी की जा रही है। इस अनुक्रम में वरिष्ठ अधिकारी के निर्देशन में लगातार नो एंट्री में भारी वाहनों पर निगरानी रख प्रभावी कार्यवाही की जा रही है। इस कड़ी में 2 अक्टूबर सुबह से 3 अक्टूबर की सुबह तक पुलिस प्रशासन के निर्देशों व नियमों का उल्लंघन कर नो एंट्री में भारी वाहनों को लाने वाले वाहन चालकों के विरुद्ध, इंदौर पुलिस द्वारा कार्यवाही करते हुए 15 वाहनों के विरुद्ध चालानी कार्यवाही की और उन्हें हिदायत दी गई कि प्रशासन द्वारा दिए गए दिशा निर्देशों का पालन करें। साथ ही सभी को प्रतिबंधित मार्गों का ध्यान रख, निर्धारित समय के अनुसार ही वाहनों को चलाने और प्रशासन द्वारा दिए निर्देशों का पालन कर सहयोग करने की समझाइश दी गई।

अवैध शराब और लाखों की ड्रग्स बरामद

इंदौर। शहर में ड्रायडे के एक दिन पहले बुधवार को सांवेर, चंदन नगर और गांधीनगर थाना क्षेत्र से अवैध शराब और लाखों की ब्राउन शुगर जब्त की है। कार्रवाई के दौरान तस्कर कार छोड़कर भाग निकला। उसकी तलाश में पुलिस की टीमें रवाना की गई है। सांवेर पुलिस द्वारा इंदौर-उज्जैन रोड पर चैकिंग की जा रही थी। इसी दौरान एक कार एमपी-09 डीक्यू-8063 का चालक चैकिंग पॉइंट पर पहुंचा और पुलिस को देख कार वहीं छोड़कर भाग निकला। कार से पुलिस ने 23 पेटी शराब जब्त की गई। इसी प्रकार, क्राइम ब्रांच द्वारा संदिग्धों की धरपकड़ के दौरान रेडीमेड क्लस्टर के पास एमआर 4 से अरशद और आमिर निवासी चंदननगर को हिरासत में लिया। तलाशी के दौरान दोनों के कब्जे से 23 ग्राम ब्राउन शुगर जब्त की गई। जब्त मादक पदार्थ की कीमत 2 लाख 30 हजार बताई जा रही है। पूछताछ में पता चला है कि दोनों आरोपी नशे के आदी है, वह लत पूरी करने के लिए ड्रग्स की तस्करी करते थे। वहीं, गांधीनगर पुलिस ने नैनोद गांव के पास घेराबंदी करते हुए आरोपी लोकेश पिता जवान सिंह डवरे निवासी नया बसेरा गांधी नगर को पकड़ा गया। तलाशी लेने पर उसके कब्जे से 12.79 ग्राम ब्राउन शुगर जब्त की गई। आरोपी के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत केस दर्ज किया गया है।

भाई को चैनल गेट की बात पर चाकू मारा

इंदौर। हाथीपाला क्षेत्र युवक ने चैनल गेट लगाने की बात पर बड़े भाई को चाकू मार दिया। सेन्ट्रल कोतवाली पुलिस को फरियादी ईसे अहमद पिता मुनीर अहमद निवासी साउथ हाथीपाला ने बताया कि मैं काम करने के बाद घर पहुंचा और खाना खाने बैठा था। बेटा उमर खान घर का चैनल गेट लगा रहा था, तभी छोटा भाई मुनीर अहमद आया और चैनल गेट लगाने को लेकर गालियां देने लगा। मैंने गाली देने से मना किया तो उसने हमला किया। इसी प्रकार, मूसाखेड़ी के महेश पिता राजकुमार वर्मा ने बताया कि वह घर के सामने कचरा फेंक रहा था। तभी पड़ोसी अशोक पिता प्रहलाद मीणा ने चाकू मार दिया। चंदन नगर में पति-पत्नी के बीच विवाद में साले ने जीजा का सिर फोड़ दिया। पुलिस ने स्कीम 71 झोपड़पट्टी निवासी सुभाष पिता दशरथ बिल्लोरे की रिपोर्ट पर उसके साले रामजाने पर केस दर्ज किया है।

चंदन की लकड़ी चुराते रेवती रेंज में 4 युवकों को पुलिस ने पकड़ा

- बरामद लकड़ी की कीमत लाखों रुपए में बताई जा रही

इंदौर। बाणगंगा पुलिस ने रेवती रेंज में चंदन की लकड़ी चुराते चार युवकों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार युवकों ने बाप-बेटा भी शामिल है। आरोपियों के पास से काटी गई चंदन के पेड़ की लकड़ियां भी बरामद की गई है। पुलिस को जानकारी मिली कि चार आरोपी चुपचाप जंगल में घुसकर चंदन के पेड़ काट रहे थे। गुप्त सूचना के आधार पर बाणगंगा पुलिस ने मौके पर पहुंचकर चारों आरोपियों विक्रम पिता गिरधारीलाल निवासी ग्राम खोरिया तहसील महिद्पुर, ईश्वर पिता मदनलाल सोलंकी, राधेश्याम पिता मदनलाल सोलंकी निवासी महिद्पुर और बहादुर खां उर्फ सलीम खां निवासी आगर मालवा को गिरफ्तार किया है। आरोपियों से बरामद लकड़ी की अनुमानित कीमत लाखों रुपए में बताई जा रही है। पुलिस ने चारों आरोपियों के खिलाफ संबंधित धाराओं में केस दर्ज कर आगे की जांच शुरू कर दी है। प्रारंभिक पूछताछ में आरोपियों ने माना है कि वे चंदन की लकड़ी को बेचने के उद्देश्य से चोरी कर रहे थे। आरोपी कुछ दिन पहले ही इंदौर आए थे और रेवती रेंज क्षेत्र की रैकी की थी। रेंज क्षेत्र में ज्यादा चहल पहल नहीं होने से वे रात में पेड़ काट रहे थे, तभी पुलिस पहुंच गई थी। उल्लेखनीय है कि वन विभाग और बीएसएफ की संयुक्त निगरानी के बावजूद चंदन की तस्करी की यह घटना सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल खड़े करती है। पुलिस अब यह भी पता लगाने में जुटी है कि क्या इस गिरोह का कोई बड़ा नेटवर्क है।

साले ने पत्थर से जीजा का सिर फोड़ा

इंदौर। चंदन नगर क्षेत्र में पति-पत्नी के बीच विवाद के दौरान साले ने जीजा पर पत्थर से हमला करते हुए उसका सिर फोड़ दिया। पुलिस ने स्कीम 71 झोपड़पट्टी निवासी सुभाष पिता दशरथ बिल्लोरे की रिपोर्ट पर उसके साले राम जाने के खिलाफ केस दर्ज किया। फरियादी ने पुलिस को बताया कि मेरी व पत्नी अनिता की आपस में कहासुनी हो रही थी। तभी मेरा दूर का साला राम जाने मुझे गालियां देने लगा। जब मैंने गालियां देने से मना किया तो राम जाने ने पत्थर से मेरे सिर में मार दिया जिससे चोट लगकर खून निकलने लगा। रामजाने बोला कि आईन्दा अनिता से कुछ कहा तो तुझे जान से खत्म कर दूंगा।

शस्त्र केवल युद्ध के साधन नहीं, बल्कि अनुशासन और मर्यादा का प्रतीक भी

मुख्यमंत्री ने विजयादशमी पर्व पर इंदौर में शस्त्र पूजन में भाग लिया

इंदौर। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने विजयादशमी के पर्व पर इंदौर पुलिस लाइन में आयोजित भव्य शस्त्र पूजन कार्यक्रम में परम्परागत शौर्य परम्परा का निर्वहन करते हुए हिस्सा लिया। इस अवसर पर उन्होंने मां कालका की आराधना के साथ परम्परागत तलवार, भाला से लेकर अत्याधुनिक एके-47 और अन्य अस्त्र-शस्त्रों का वैदिक मंत्रोच्चार के बीच विधि-विधान से पूजन किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि विजयादशमी केवल बुराई पर अच्छाई की विजय का पर्व ही नहीं, बल्कि यह शौर्य, साहस और कर्तव्यनिष्ठा का संदेश देने वाला उत्सव है। शस्त्र केवल युद्ध का साधन नहीं, बल्कि अनुशासन और मर्यादा के प्रतीक भी हैं। हमारी पुलिस और सुरक्षा बल इन्हीं शस्त्रों के माध्यम से समाज की रक्षा का संकल्प लेते हैं। इस परंपरा का संरक्षण करना हम सबका दायित्व है। मुख्यमंत्री ने कहा कि विजयादशमी पर रावण दहन के साथ शस्त्रों का पूजन भी व्यापक रूप से होना चाहिए। उन्होंने प्रदेश में शस्त्र पूजन की परंपरा को और व्यापक रूप में मनाने के लिए नई सोच और नए संकल्प के साथ इसे आगे बढ़ाने की आवश्यकता बताई।

डॉ यादव ने कहा कि इस पर्व को हर जिले में जन सहभागिता और सांस्कृतिक उत्साह के साथ मनाया जाना चाहिए ताकि यह परंपरा और भी सशक्त हो। उन्होंने कहा कि शस्त्र और सैनिक एक दूसरे के पर्याय है। भारतीय परम्परा में शिव और शक्ति को एक ही माना गया है। हमारे यहां अर्धनारीश्वर की पूजा होती है। सभी त्योहार और पर्व आनंद और उल्लास के साथ मनाया जाना चाहिए।

आयोजन के प्रारंभ में पुलिस कमिश्नर संतोष कुमार सिंह ने कहा कि शस्त्र पूजन की परंपरा पुलिस बल में उत्साह और कर्तव्यनिष्ठा का संचार करती है। विजयादशमी का यह पर्व पुलिस बल को शौर्य, पराक्रम और सेवा भाव के साथ जनता की सुरक्षा के लिए सदैव तैयार रहने की प्रेरणा देता है। उन्होंने कहा कि इंदौर में आमजन एवं जनप्रतिनिधियों के सहयोग से सुरक्षा भावना को मजबूत बनाया जा रहा है। इंदौर में कानून एवं व्यवस्था बनाये रखने तथा यातायात व्यवस्था को और अधिक बेहतर बनाने के लिये इंदौर पुलिस आमजन के साथ मिलकर कारगर प्रयास कर रही है। नवदुर्गा उत्सव में इसके बेहतर और सकारात्मक परिणाम मिले है। वॉलेंटियर एवं मोहल्ला समितियों की सहभागिता को भी बढ़ाया जा रहा है।

कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री ने पुलिस वाहन का भी पूजन किया। उन्होंने शस्त्रागार का अवलोकन भी किया। मुख्यमंत्री डॉ यादव को इस अवसर पर गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। कार्यक्रम के अंत में अतिरिक्त पुलिस आयुक्त आरके सिंह ने आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर सशस्त्र पुलिस बल के बैंड ने धार्मिक गीतों और भजनों की मधुर प्रस्तुतियां दी। उनकी स्वर लहरियों ने पूरे समारोह स्थल को भक्तिमय वातावरण में सराबोर कर दिया और कार्यक्रम को और अधिक गरिमामय बना दिया।

कार्यक्रम में सांसद शंकर लालवानी, महापौर पुष्यमित्र भार्गव, संभाग आयुक्त डॉ सुदाम खाड़े, पुलिस कमिश्नर संतोष कुमार सिंह, कलेक्टर शिवम वर्मा, नगर निगम आयुक्त दिलीप कुमार यादव, विधायक महेन्द्र हार्डिया, मालिनी गौड़, मधु वर्मा तथा गोलू शुक्ला, जिला पंचायत अध्यक्ष रीना मालवीय सहित अनेक जनप्रतिनिधि विशेष रूप से मौजूद रहे।

विजया दशमी पर कई जगह रावण दहन, 111 फ़ीट का पुतला जलाया

शहर में कई जगह पर रावण दहन और सांस्कृतिक आयोजन

इंदौर। शहर में विजयादशमी पर कई जगह रावण के पुतले का दहन हुआ। रावण दहन का मुख्य आयोजन दशहरा मैदान, चिमनबाग मैदान, विजय नगर मैदान, तिलक नगर, छावनी सहित अन्य स्थानों पर हुआ। कई कॉलोनियों में भी रहवासियों ने रावण दहन किया। दशहरा मैदान पर 111 फीट ऊंचा रावण और 250 फ़ीट की लंका जलाई गई।

दशहरा मैदान पर 111 फीट ऊंचे रावण का दहन किया गया। यहां 250 फीट की लंका तैयार की गई थी। इसे लोहे के एंगल की मदद से खड़ा किया था। रावण दहन के पहले प्रताप चौराहा से दशहरा मैदान तक भव्य शोभायात्रा निकली, जिसमें रामजी और हनुमानजी के वेश में युवा शामिल हुए। रावण दहन से पहले राम-रावण युद्ध होगा उसके बाद आतिशबाजी हुई। खेमा इंडस्ट्रीज पिछले 50 साल से ज्यादा समय से यहां निःशुल्क आतिशबाजी करती आ रही है। इस आयोजन में हजारों की संख्या में लोग रावण दहन देखने पहुंचे। दशहरा उत्सव समिति ने भी चिमनबाग मैदान पर 111 फीट के रावण का दहन किया। 51 सालों से चिमनबाग मैदान पर समिति द्वारा रावण एवं लंका का दहन किया जाता आ रहा है।

तिलक नगर में 51 फीट ऊंचे रावण और 100 फीट की लंका का दहन किया गया। यह आयोजन का 65वां साल है। जबकि, छावनी नंबर-2 मैदान में 121 फीट के रावण का दहन हुआ। यहां तेलंगाना के टी राजा भी शामिल हुए। आयोजन में बड़ी संख्या के लोग रावण दहन देखने पहुंचे। विजय नगर रावण दहन समिति द्वारा इस बार भी 61 फीट ऊंचे रावण का दहन किया हुआ। यहां समिति द्वारा लगातार 1982 से रावण दहन का प्रोग्राम किया जा रहा है। समिति का यह 43वां साल है। इस वर्ष भी 61 फीट ऊंचे रावण का दहन किया। आयोजन स्थल पर गन्नू महाराज की भजन संध्या का आयोजन हुआ। जिसमें राम, जानकी, राधाकृष्ण, हनुमान, शिव पार्वती के रूप में कलाकार प्रस्तुति दी।

कार की टक्कर से युवक घायल

इंदौर। शाम करीब 4 बजे गिटार चौराहा पर एक कार चालक ने युवक को टक्कर मार दी, इससे वह घायल हो गया। इस मामले में पुलिस ने कार नंबर के आधार पर चालक के खिलाफ शिकायत दर्ज की तो एक वीडियो वायरल हुआ, जिसमें लोगों ने कार चालक का नाम रिपोर्ट में नहीं होने का आरोप लगाया। जानकारी के अनुसार पलासिया थाना क्षेत्र के गिटार चौराहे पर घटना हुई है। पुलिस को फरियादी इमरान पिता लियाकत खान (39 साल) निवासी तलावली चांदा ने शिकायत दर्ज करवाई कि कार (एमपी 09 एई 9175) के चालक ने लापरवाही पूर्वक कार चलाकर फरियादी को टक्कर मार दी। पुलिस ने कार भी जब्त कर ली है। इधर इस मामले में एक वीडियो वायरल हो रहा है, जिसमें एक बुजुर्ग पर कार चलाने की बात कही जा रही है। लोगों ने वीडियो में आरोप लगाया कि पुलिस ने बुजुर्ग का नाम रिपोर्ट में नहीं लिखा है, जबकि उन्होंने कई लोगों को ठोका है।

साइबर ठग ने पेट्रोल पंप पर फर्जी बैंक खाते से पैसे चुकाए, पकड़ाया

निशानदेही पर फर्जी खातों के एटीएम और अन्य सामग्री जब्त

इंदौर। कनाड़िया पुलिस ने ऐसे बदमाश को पकड़ा है, जो फर्जी बैंक खाते से पेट्रोल पंप पर राशि चुकाता था। गरीबों के बैंक खाते में रुपए कर उनसे नकद राशि हथिया लेता था। इस तरह की कई वारदातें आरोपी कर चुका था।

लंबे समय से पुलिस को फर्जी बैंक खाते से राशि चुकाने की शिकायत मिल रही थी। शिकायत के बाद पुलिस ने जांच की चौकाने वाली जानकारी सामने आई। मामले में पुलिस ने साइबर ठगों के लिए बैंक खाते उपलब्ध कराने वाले बदमाश को गिरफ्तार कर लिया है। गिरफ्तार आरोपी का नाम तरुण पिता भेरुलाल मीणा निवासी भेसोदा मंडीभानपुरा जिला मंदसौर है। अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त जोन-2 अमरेन्द्र सिंह ने बताया कि एसीपी कुंदन मंडलोई के मार्गदर्शन में थाना प्रभारी सहर्ष यादव की टीम ने आरोपी को घेराबंदी कर पकड़ा। आरोपी से कड़ी पूछताछ की जा रही है। उसकी निशानदेही पर फर्जी बैंक खातों के एटीएम कार्ड और अन्य सामग्री बरामद हुई है।

टेलीग्राम लिंक के जुड़ा - पुलिस ने बताया कि तरुण ने कनाड़िया क्षेत्र स्थित बिंजालिया फ्यूल्स एंड एनर्जी पेट्रोल पंप और गंगोत्री डेवलपर्स प्राइवेट लिमिटेड के पेट्रोल पंप पर भी ऑनलाइन ठगी से प्राप्त धनराशि को नकद कराने के मामले में भूमिका निभाई थी। आरोपी गिरोह के साथ टेलीग्राम लिंक के माध्यम से जुड़ा था। उसे ठग गिरोह द्वारा फर्जी खातों में भेजी जाने वाली ठगी की रकम प्रतिदिन टेलीग्राम लिंक के जरिए मिलती और वह उनका उपयोग कर अन्य लोगों के बैंक खातों या विभिन्न स्थानों पर ट्रांसफर कराकर नकदीकरण करता था। तरुण गरीब लोगों के बैंक खातों का सहारा लेकर फर्जी खातों की रकम को पेट्रोल पंप और अन्य जगहों पर ट्रांसफर कर चुका करता था। नकदी निकलने के बाद वह अपना कमीशन काटकर बाकी रकम टेलीग्राम के माध्यम से गिरोह को भेज देता था। फिलहाल मामले की विस्तृत तफ्तीश जारी है और आरोपी के नेटवर्क व अन्य सहयोगियों की पहचान के लिए पूछताछ की जा रही है।

लिव इन में दो साल रखा, फिर शादी से इंकार, एफआईआर

महिला की शिकायत, शोषण व धोखाधड़ी का मामला

इंदौर। चंदन नगर थाना क्षेत्र में शादीशुदा महिला ने प्रेमी पर शादी का झांसा देकर शोषण और धोखाधड़ी का आरोप लगाया है। महिला की शिकायत पर पुलिस ने आरोपी सुरेश मेहरा के खिलाफ रेप और अन्य धाराओं में एफआईआर दर्ज कर उसकी तलाश शुरू कर दी है। पुलिस के मुताबिक, पीड़िता की शादी वर्ष 2022 में हातोद निवासी युवक से हुई थी। शादी के बाद वह इंदौर रहने आई, जहां उसकी पहचान सुरेश मेहरा से हुई। सुरेश ने बातचीत बढ़ाई और कुछ समय बाद महिला को शादी का प्रस्ताव दिया। महिला ने भी पति को छोड़ने के लिए हामी भर दी और दोनों का रिश्ता आगे बढ़ा। नवंबर 2023 में सुरेश ने महिला को नावदा पंथ स्थित टाउनशिप में कमरा दिलवाया और वहीं लिव-इन में साथ रहने लगा। इस दौरान उसने कई बार शादी का आश्वासन देकर संबंध बनाए। लेकिन, जब भी शादी की बात आती, वह टालमटोल करता रहा। शिकायत में बताया गया कि 30 सितंबर की दोपहर सुरेश टाउनशिप वाले मकान पर आया। इस दौरान दोनों के बीच विवाद हुआ। सुरेश ने महिला से कहा कि तुम पनौती हो, अब तुम्हारे साथ नहीं रह सकता, शादी भी नहीं करूंगा। इतना कहकर उसने मारपीट की और घर छोड़कर भाग गया। इसके बाद महिला ने परिजनों को घटना की जानकारी दी और थाने पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई। पुलिस का कहना है कि आरोपी दो साल से शादी के नाम पर महिला को धोखा दे रहा था।

कारोबारी के घर में बड़ा अग्निकांड, बेटी की शादी का सामान जल गया

नगर निगम कर्मचारियों की सतर्कता से टली बड़ी दुर्घटना

इंदौर। कनाडिया क्षेत्र स्थित संचार नगर में गुरुवार सुबह उस वक्त हड़कंप मच गया, जब रियल एस्टेट कारोबारी संजय जैन के घर में आग लग गई। आग की लपटें घर की पहली मंजिल पर स्थित उनकी बेटी जयवी के कमरे से उठीं, जहां 24 नवंबर को होने वाली शादी का सारा सामान रखा गया था। सौभाग्य से बेटी कल रात ही बुरहानपुर में पारिवारिक कार्यक्रम में गई थी, वरना बड़ी घटना हो सकती थी।

आग में उनकी बेटी की शादी के लिए खरीदा गया फर्नीचर, कपड़े और अन्य सामान पूरी तरह जल गया। संजय जैन के परिवार के छह सदस्य दो बेटे शुभम व निखिल, बहू नेहा, अनीता और पोती अमाया धुएं में फंसे। पड़ोसियों और जैन ने मिलकर रस्सी के सहारे सभी को सुरक्षित बाहर निकाला। घटना सुबह करीब 7.30 बजे की है, जब नगर निगम की कचरा संग्रहण गाड़ी वहां से गुजर रही थी तो

कर्मचारियों ने घर से धुआं निकलता देखा। उन्होंने तुरंत घर वालों को जगाया और आग लगने की सूचना दी। उनकी सतर्कता से समय रहते सभी घर वाले सुरक्षित बाहर निकल सके। फायर ब्रिगेड के एएसआई के अनुसार, आग लगने का कारण शॉर्ट सर्किट बताया जा रहा है। सूचना मिलते ही फायर ब्रिगेड की टीम मौके पर पहुंची और 8000 लीटर पानी डालकर आग पर काबू पाया। समय पर कार्रवाई से आग को फैलने से रोका जा सका।

परिवार वालों के अनुसार, जयवी की शादी की तैयारियां लगभग पूरी हो चुकी थी। उसका सारा सामान उसी कमरे में रखा था, जहां आग लगी। आग ने शादी की खुशियों को गहरा आघात पहुंचाया है, हालांकि सभी लोग सुरक्षित हैं, यही सबसे बड़ी राहत की बात है। यह घटना एक बार फिर सावधानी और सतर्कता की अहमियत को साबित करती है। नगर निगम कर्मचारियों की सतर्कता और फायर ब्रिगेड की त्वरित कार्रवाई ने बड़ी अनहोनी को टाल दिया। घटना में कोई शारीरिक चोट नहीं आई।

ट्रकों की 'नो इंट्री' का विरोध, 6 अक्टूबर से बेमुद्दत हड़ताल की चेतावनी दी गई

एसोसिएशन ने कहा, प्रशासन ने सहयोग नहीं किया तो परिणाम गंभीर

इंदौर। भारी वाहनों के शहर में प्रवेश पर लगे नो-इंट्री नियमों के विरोध में ट्रांसपोर्टरों ने बड़ा कदम उठाते हुए आगामी 6 अक्टूबर से बेमियादी हड़ताल का ऐलान कर दिया है। इस दौरान नो-इंट्री क्षेत्रों में स्थित ट्रांसपोर्ट कार्यालयों और गोदामों में माल बुकिंग और डिलीवरी का कार्य पूरी तरह बंद रहेगा।

हाल ही में एयरपोर्ट रोड पर हुए ट्रक हादसे के बाद प्रशासन ने ट्रैफिक सुधारने के उद्देश्य से शहर में भारी वाहनों के लिए सुबह 6 बजे से रात 11 बजे तक नो-इंट्री लागू कर दी है। यह फैसला सड़क सुरक्षा समिति की बैठक में लिया गया था। नियम के तहत अब रात 11 बजे से सुबह 6 बजे तक ही ट्रकों को शहर में प्रवेश की अनुमति होगी। नियम तोड़ने पर भारी जुर्माने और चालानी कार्रवाई का प्रावधान है। बीते 24 घंटों में ही 23 ट्रकों के खिलाफ चालान की कार्रवाई की जा चुकी है।

एसोसिएशन ऑफ़ पार्सल ट्रांसपोर्ट एंड फ्लीट ओनर्स के अध्यक्ष राकेश तिवारी ने बताया कि शहर के प्रमुख मार्गों पर नो-इंट्री का समय बहुत लंबा है, जिससे ट्रांसपोर्ट और व्यापारिक गतिविधियां बाधित हो रही हैं। नो इंट्री का जो समय प्रशासन ने तय किया है, उसमें ट्रांसपोर्ट का पूरा काम करना असंभव है। लोहामंडी जैसे व्यावसायिक क्षेत्र सबसे ज्यादा प्रभावित हैं। जब तक प्रशासन पुराने नियमों को बहाल नहीं करता, तब तक हम नो-एंट्री क्षेत्रों में कार्य नहीं करेंगे।

ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन की मांगें

नो-एंट्री का समय सुबह 6 की बजाय 8 बजे किया जाए, ताकि रात में लोडिंग वाले ट्रक निकल सकें। लोहा मंडी क्षेत्र में अतिक्रमण हटाया जाए, जिससे ट्रकों की आवाजाही आसान हो सके। पीपीपी मॉडल पर तीन इमली क्षेत्र में ट्रक पार्किंग विकसित की जाए। व्यवस्थित ट्रक लाइन के लिए येलो लाइन मार्ग बनाया जाए। ट्रांसपोर्ट नगर, अनाज मंडी, छावनी, देवास नाका, सांवेर रोड जैसे प्रमुख क्षेत्रों तक ट्रकों की निरंतर आवाजाही सुनिश्चित करने की योजना बने। राऊ से इंदौर सब्जी मंडी तक पुराने मार्ग को फिर से शुरू किया जाए।

कहां नहीं कर सकते प्रवेश

प्रशासन ने शहर के 19 प्रमुख मार्गों पर भारी वाहनों की आवाजाही पर रोक लगाई है, जिनमें सुपर कॉरिडोर, राजीव गांधी चौराहा, तेजाजी नगर, बिचौली अंडरब्रिज, फूटी कोठी, बिजासन टी आदि शामिल हैं। यातायात पुलिस ने स्पष्ट कर दिया है कि नो-इंट्री का उल्लंघन करने वाले वाहनों पर सख्त कार्रवाई की जाएगी।

नो-इंट्री क्षेत्रों में अब ट्रकों को सड़क पर खड़े होने की अनुमति नहीं होगी। पार्किंग के लिए सिर्फ निर्धारित स्थल का ही उपयोग करना होगा। बता दें, 15 सितम्बर को हादसे के बाद ट्रेफिक और थाने की पुलिस ने 100 से अधिक ट्रकों पर कार्रवाई की है।

देर रात इंद्रप्रस्थ चौराहे पर हादसा महिला कार चालक फरार हो गई

पुलिस ने दोनों कारों को जब्त कर लिया, तलाश जारी

इंदौर। तेज गति से आ रही कार ने टक्कर मारकर टैक्सी चालक को घायल कर दिया। कार में युवतियां सवार थी। टक्कर के बाद कार चालक युवती भाग निकली। हादसा तुकोगंज थाना क्षेत्र स्थित इंद्रप्रस्थ टॉवर चौराहे पर बुधवार देर रात डेढ़ बजे हुआ। हादसे में टैक्सी में बैठी सवारी को मामूली चोट आई।पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार टैक्सी चालक वसीम खान, जो खजराना इलाके का रहने वाला है, अपनी टैक्सी (एमएच-04-केएफ-0105) से रीगल चौराहे से पलासिया की ओर जा रहा था। जैसे ही वह इंद्रप्रस्थ टॉवर चौराहे पर पहुंचा, गीता भवन की ओर से आ रही तेज रफ्तार कार (एमपी -09-सीके-0072) ने सामने से आकर टैक्सी को टक्कर मार दी। वसीम के मुताबिक, टक्कर के बाद जब उसने कार के अंदर झांका तो उसमें कुछ युवतियां बैठी थीं। जब उसने तेज रफ्तार से गाड़ी चलाने की बात कही, तो वे घबरा गईं और अपने किसी परिचित को फोन किया। थोड़ी ही देर में दूसरी कार वहां आई, जिसमें बैठकर सभी युवतियां मौके से चली गईं। घटना की जानकारी मिलने के बाद पुलिस मौके पर तो पहुंची, लेकिन तब तक युवतियां जा चुकी थीं। पुलिस ने दोनों वाहनों को जब्त कर लिया है। जांच में पता चला है कि जिस कार से टक्कर हुई, वह अतुल गंजीवाल के नाम पर रजिस्टर्ड है। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है और फरार युवतियों की पहचान करने की कोशिश की जा रही है।

संपादकीय

ये जानलेवा कफ सिरप

खांसी के इलाज करने का दावा करने वाले कफ सिरप पीने से मप्र और राजस्थान में 11 बच्चों की मौत बेहद गंभीर मामला है। मीडिया में ये खबर उछलने के बाद राज्य सरकारें कुछ गंभीर हुई हैं और मामले की जांच के आदेश दिए गए हैं। लेकिन असली सवाल यह है कि बाजार में ऐसी जानलेवा दवाइयां बिक कैसे रही हैं? इसके लिए कौन जिम्मेदार है? अब सामने आई जानकारी के मुताबिक जहरीले कफ सिरप पीने से मध्य प्रदेश में 9 और राजस्थान में 3 मासूमों ने दम तोड़ दियाहै। जिन बच्चों की जान गई है, वह सभी सर्दी, खांसी और बुखार से पीड़ित थे। इलाज के लिए इन सभी बच्चों को कफ सिरप दिया गया। इसके बाद इनकी तबीयत और ज्यादा बिगड़ गई। अस्पताल में इलाज के दौरान मौत हो गई। राजस्थान में भरतपुर के पीड़ित परिवार का आरोप है कि नकली कफ सिरप पीने से उसकी जान चली गई। बच्चे को जुकाम की शिकायत होने पर परिजन इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लेकर गए। बताया जाता है कि ये दवाएं निजी डॉक्टरों ने लिखी थीं। अभिभावकों ने घर आके बच्चे को जैसे ही परिजनों ने दवा पिलाई वो सो गया। जब 4 घंटे तक उसे होश नहीं आया तो परिजन उसे सरकारी अस्पताल लेकर पहुंचे। वहां डॉक्टर ने उसे प्राथमिक उपचार के बाद भरतपुर रेफर कर दिया। बच्चे की मौत के बाद परिजनों में गुस्सा है। उनका कहना है कि कफ सिरप के डोज से उनके बच्चे की जान चली गई। अब बच्चे के परिजन इस पूरे मामले में जांच की मांग कर रहे हैं। राजस्थान के ही बयाना से 4 मामले सामने आए हैं। जबकि जयपुर में भी जानलेवा सिरप से डॉक्टर समेत 10 लोग इसकी चपेट में हैं।

मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा में कफ सिरप पीने से बच्चों की मौत की आशंका से सनसनी मची हुई है। छिंदवाड़ा में अब तक कुल 9 बच्चों की मौत हो गई है। दावा किया जा रहा है कि कफ सिरफ पीने से बच्चों की किडनी फेल हो गई। कलेक्टर ने दो कफ सिरप पर बैन लगा दिया है। कफ सिरप से बच्चों की मौत के संदर्भ में जबलपुर के ड्रग एवं औषधि विभाग के अफसरों ने बालाघाट, मंडला, छिंदवाड़ा और जबलपुर में छापा मारा है। स्वास्थ्य विभाग की 5 सदस्यों की टीम ने कटारिया फार्मा की जांच की है। सामने आई जानकारी के मुताबिक जबलपुर की कटारिया फार्मासिटिकल्स ने चेन्नई की कंपनी से 660 कोल्ड्रिफ कफ सिरप की शीशियां मंगाई थीं। छिंदवाड़ा के तीन स्टॉकिस्ट को जबलपुर से सिरप की 594 शीशियां भेजी गईं थीं। 16 शीशियों का सैंपल लेकर जांच के लिए भोपाल भेजा गया है। जबलपुर के थाना ओमती के कटारिया फार्मासिटिकल्स डिस्ट्रीब्यूटर का मामला दर्ज किया गया है। एडीएम परासिया के अनुसार जिला प्रशासन के पास 1420 बच्चों की लिस्ट है, जो सर्दी-बुखार से ग्रसित रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमने प्रोटोकॉल बनाया है कि दो दिन से ऊपर कोई भी बच्चा बीमार रहता है तो उसको हम सिविल हॉस्पिटल में 6 घंटे मॉनिटरिंग में रखते है। हालांकि अभी तक जो सेम्पल जांच के लिए भेजे गए हैं, वो नॉर्मल निकले हैं। इस बीच प्रशासन ने प्राइवेट डॉक्टरों से एहतियात बरतने को कहा है। उनसे कहा गया है कि वायरल पेशंट को सीधे सिविल अस्पताल भेजें। उधर इन शिकायतों के बाद नेशनल सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल (NCDC) की केंद्रीय टीम ने सैंपल इकट्ठा किए हैं। राजस्थान में भी डेक्सट्रोमेथोर्फान हाइड्रोब्रोमाइड सिरप की बिक्री पर रोक लगा दी है। सरकारें अब जागी हैं। लेकिन पहले ही बाजार में ऐसी दवाओं की ब्रिकी पर सख्ती से रोक होती तो 11 मासूमों को इस तरह जान न गंवानी पड़ती।

नजरिया

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी

लेखक राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी रह चुके हैं। केंद्रीय विश्वविद्यालय पंजाब में चेयर प्रोफेसर हैं।

संयुक्त राष्ट्र में दिखी भारत-पाकिस्तान की वास्तविक सोच

भारत की ओर से देश के विदेश मंत्री एस. जयशंकर अपनी बात संयुक्त राष्ट्र महासभा में इस बार सम्मिलित हुए। ऐतिहासिक महासभा में ऐतिहासिक अभिभाषण के साथ एस. जयशंकर ने भारत का पक्ष रखा है वह बहुत ही सुर्ख़ियों में है, खासकर सेवा के कार्य की प्रशंसा हो रही है। भारत विश्व में शांति, विकास और मैत्री का पक्षधर रहा है। सर्व भवन्तु सुखिन: की कामना की गयी है। जबकि विश्व में बढ़ते आतंकवाद और पड़ोसी देश द्वारा भारतीय भूभाग पर समय-समय पर की जाने वाली आतंकवादी घटनाएँ उसके वैश्विक शांति के लिए सदैव चिंता की बात रही है। हाल ही में भारत और पाकिस्तान के बीच हुए आतंकी घटनाओं के कारण ऑपरेशन सिंदूर जो परिस्थितियां दोनों देशों के बीच बनी, उससे पूरी दुनिया अब परिचित हो चुकी है।

संयुक्त राष्ट्र में 80वीं महासभा पूरी दिलचस्प बन गयी है। यहाँ ट्रंप समेत दुनिया के दिग्गज अपनी-अपनी बात कह चुके हैं। ट्रंप द्वारा टेलीप्राम्टर और स्टेयर को लेकर की गयी टिप्पणी सोशल मीडिया में चर्चा के केंद्र में आई। संयुक्त राष्ट्र को दोषारोपण करते हुए ट्रंप ने यह कभी नहीं सोचा कि मेज़बानी करने वाले देश की जिम्मेदारी ज्यादा होती है। वह बोलते हैं तो बोल ही जाते हैं चाहे अपने ही देश की निंदा उसमें क्यों न शामिल हो। विश्व भर से आए 193 देशों के राष्ट्राध्यक्ष या नॉमित लोग इस महासभा को संबोधित कर रहे हैं जिसकी अध्यक्षता युवा नेत्री ऐनालेना बेयरबॉक कर रही हैं। इस महासभा डिबेट में शिरकत कर रहे संयुक्त राष्ट्र सदस्य देशों के ये नेता, युद्धों, निर्धनता, मानवाधिकार उल्लंघन, जलवायु परिवर्तन सहित एसडीजी जैसे अनेक मुद्दों पर अपनी बात दुनिया के साथ साझा करके उस हल को ढूँढने की कोशिश कर हैं जिससे स्थायी शांति की ओर बढ़ा जाए।

भारत की ओर से देश के विदेश मंत्री एस. जयशंकर अपनी बात संयुक्त राष्ट्र महासभा में इस बार सम्मिलित हुए। ऐतिहासिक महासभा में ऐतिहासिक अभिभाषण के साथ एस. जयशंकर ने भारत का पक्ष रखा है वह बहुत ही सुर्ख़ियों में है, खासकर सेवा के कार्य की प्रशंसा हो रही है। भारत विश्व में शांति, विकास और मैत्री का पक्षधर रहा है। सर्वे भवन्तु सुखिन: की कामना की गयी है। जबकि विश्व में बढ़ते आतंकवाद और पड़ोसी देश द्वारा भारतीय भूभाग पर समय-समय पर की जाने वाली आतंकवादी घटनाएँ उसके वैश्विक शांति के लिए सदैव चिंता की बात रही है। हाल ही में भारत और पाकिस्तान के बीच हुए आतंकी घटनाओं के कारण ऑपरेशन सिंदूर जो परिस्थितियां दोनों देशों के बीच बनी, उससे पूरी दुनिया अब परिचित हो चुकी है। संयुक्त राष्ट्र महासभा में एस जयशंकर द्वारा रखे गए भारतीय पक्ष की जितनी प्रशंसा की जाए कम है। उन्होंने भारत की मंशा को अब दुनिया को बता दिया है। ऑपरेशन सिंदूर के बाद विश्व के विभिन्न देशों में भारतीय शिष्टमंडल द्वारा रखे गए पक्ष की भी चर्चा यदि एस जयशंकर महासभा में रखते तो बात कुछ और होती लेकिन फिर भी जितना उन्होंने कहा उतना भी ठीक है।

भारत अंतत: विकास और शांति चाहता है। भारत मैत्रीपूर्ण संबंध चाहता है। भारत धर्म के नाम पर कट्टरपंथी ताकतों से बहुत लंबे समय से लड़ता रहा है, इसके खिलाफ आगे भी उसकी लड़ाई जारी रहेगी जबतक कि सभी शांति के मार्ग पर एक साथ नहीं आ जाते। महासभा की अध्यक्ष ऐनालेना बेयरबॉक का नारा है बेटर टुगेदर, यह बात तो भारतीय शास्त्रों में बहुत पहले ऋग्वेद में कही गयी है-संगच्छध्वं संवदध्वं, जिसका अर्थ है हम सब एक साथ चलें, एक साथ बोलें और हमारे मन एक हों। जयशंकर को यह बताना चाहिए था कि उनके श्लोगन की जड़ें भारत में पहले से विद्यमान हैं तो भारत के बारे में लोगों के भीतर सम्मान और होता। ऐनेलेना भारत से सीधे स्वयं को कनेक्ट करतीं।

महासभा की गतिविधियों में सीधे मुद्दे की बात की जाए तो पाकिस्तान के राष्ट्राध्यक्ष के वक्तव्यों की ओर दृष्टि जाती है। पाकिस्तान के प्रधान मंत्री के एक-एक बयान झूठ व तिलिस्म से भरे दिखे। झूठ महासभा में यदि पाकिस्तान बोल रहा है तो एक तो वह अपने देश के साथ अहित कर रहा है, दूसरी ओर पूरी दुनिया के

सामने अपनी छवि ख़राब कर रहा है। हाल ही में भारत-पाक अंतर्संघर्ष के बारे में उसके द्वारा कही गयी बातों से पाकिस्तान ने यह सिद्ध कर दिया है कि वह झूठ की पोटली वाला देश है। अपने पड़ोसी देश के बारे में ज़हर उगलना किसी भी राष्ट्र को शोभा नहीं देता। पाकिस्तान ने कुछ ऐसा ही किया। शाहबाज़ शरीफ के अभिभाषण पर केवल भारत को कष्ट नहीं है, अपितु बलोच के खिलाफ़ जो शाहबाज़ शरीफ ने बातें की हैं उससे बलोचिस्तान के जनमानस को भी मनोवैज्ञानिक रूप से तकलीफ़ पहुँची है। अद्भुत व्यावसायिकता, बहादुरी और सूझबूझ के साथ कई भारतीय विमानों को मार गिराने की बात हो, या युद्धविराम सुनिश्चित करने में मदद के लिए अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की प्रशंसा, शरीफ ने यह बताया कि वह अमेरिका के पिछलग्गू हैं और कुछ भी नहीं। वह यह भी कहते रहे कि ट्रंप नोबेल पीस अवार्ड के हक़दार हैं। शरीफ़ ने कश्मीर के मसले को भी पुन: महासभा में उठाकर अपने भीतर भरे भारत के प्रति कलुषता को भी स्पष्ट कर दिया। उनकी परिणामोन्मुखी बातचीत की बात तो छलावा ही है, कश्मीर और जल संसाधनों पर विवाद का रोना भी रोया। शरीफ की दृष्टि में सिंधु जल संधि को भारत द्वारा कथित रूप से स्थगित करना युद्ध की कार्रवाई है। वह चाहते हैं कि संयुक्त राष्ट्र की निगरानी में जनमत संग्रह की हो। निष्पक्ष जनमत संग्रह के माध्यम से उन्हें आत्मनिर्णय का मौलिक अधिकार प्राप्त हो। भारत को इस प्रकार अस्थिर, विवादित और दोषी ठहराने से बाज नहीं आये शाहबाज़ शरीफ़। शरीफ ने पाकिस्तान बहुपक्षीय सहयोग के माध्यम से शांति, न्याय और विकास के लिए खड़ा होने की बात की। शरीफ का कहना है कि इस 80वीं वर्षगांठ को केवल इतिहास का स्मरण न बनने दें। आइए हम इतिहास बनाएँ और एक भविष्य की रूपरेखा तैयार करें, जिसमें संयुक्त राष्ट्र वैश्विक भलाई की स्थायी आशा के रूप में हो। लेकिन यदि बाहर कुछ और होगा और भीतर कुछ और तो इससे भी विश्व को परेशानियों के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं मिलेगा। उन्हें इस बात का पता नहीं कि उनकी इस निरर्थक कोशिश से कुछ भी मिलने वाला नहीं है। समस्या यह है कि चालाक पाकिस्तान व पाकिस्तानी प्रधान मंत्री कभी चीन और कभी अमेरिका को अपनी ढाल बनाकर भारत के सामने चुनौती खड़ा करने की नाकाम कोशिश कर रहा है। यह न केवल भारतीय शांति दृष्टि का अपमान है अपितु भारतीय अस्मिता व उसके संप्रभुता से खेलने का भी प्रयास लगा।

संयुक्त राष्ट्र में भारत के बारे में अवांछित बात सुनकर एक बात अब समझ आ गयी है कि पाकिस्तानी प्रधान मंत्री को उनकी भाषा में ही भारत को ज़वाब देना चाहिए। यदि इससे भारत बचता है तो डिप्लोमेसी को चैलेन्ज किया जाता रहेगा। ऐसा लगता है कि भारत की उदारता ही भारत के लिए अब भारी पड़ने लगी है। यद्यपि जयशंकर ने पहलगाम की बात उठाई और कहा कि हम अपने लोगों की रक्षा करने और देश-विदेश में उनके हितों की रक्षा करने के लिए दृढ़ हैं। इसका अर्थ है आतंकवाद के प्रति शून्य बर्दाश्त, अपनी सीमाओं की मज़बूत सुरक्षा, सीमाओं से परे साझेदारी बनाना और विदेशों में अपने समुदाय की सहायता करना उनकी प्राथमिकता है। थोड़ी तल्ख़ भाषा अंतरराष्ट्रीय मंच पर होती तो और अच्छा होता। वैसे भारत की ओर से वैश्विक दक्षिण के 78 देशों में, भारत के वित्त योगदान के साथ जो साझेदारी में चल रही और 600 से अधिक विकास परियोजनाओं को भारत संचालित कर रहा है, यह भारत की वैश्विक छवि है। वर्ष 2024 में अफ़ग़ानिस्तान में आए भूकम्प के दौरान भारत की आपात सहायता, म्याँमार में आए भूकम्प में मदद, गोलान पहाड़ियों से लेकर पश्चिमी सहारा और सोमालिया तक के क्षेत्रों में यूएन शान्तिरक्षक के रूप में सेवाओं, अपनी स्वतंत्रता बनाए रखने में विश्वास और वैश्विक दक्षिण की आवाज़ बनने की बातें दुनिया के दिलों में जगह बना ली हैं, यह भारत की छवि है। सबसे मुख्य बात जो जयशंकर ने की कि संयुक्त राष्ट्र का नौवाँ दशक नेतृत्व और आशा का होना चाहिए। इस आशा और विश्वास के कारण भारत की प्रशंसा वैश्विक स्तर पर हो रही है और पाकिस्तान के नकारात्मक व चापलूसी भरे शब्द निंदा के पात्र बन चुके हैं। इस 80वीं महासभा से चाहे कोई बात निकले या न निकले, एक बात तो निकलकर आई है कि सबने समझ लिया क्या भारत है और क्या पाकिस्तान।

अभिव्यक्ति

अदिति सिंह भदौरिया

लेखक स्तंभकार हैं।

सम्मान- कमजोरी नहीं, संस्कार की पहचान

समाज में एक बड़ी भूल यह है कि लोग अक्सर दूसरों द्वारा दिए गए सम्मान को हल्के में लेते हैं। कई बार किसी व्यक्ति की विनम्रता और आदरपूर्ण शब्दों को लोग उसकी कमजोरी मान लेते हैं, जबकि सच्चाई यह है कि सम्मान देना कभी भी कमजोरी नहीं होता। यह उस व्यक्ति के संस्कारों की गहराई और उसके चरित्र की परिपक्वता को दर्शाता है। जब कोई व्यक्ति आपको 'सर', 'मैडम', 'भाईसाहब' या 'दीदी' जैसे आदरभरे शब्दों से पुकारता है, तो वह यह दिखाता है कि उसके भीतर दूसरों को मान देने की संस्कृति है। यह उसकी पारिवारिक परवरिश और जीवन मूल्यों की झलक है। मगर दुख की बात यह है कि समाज में ऐसे लोग भी मिलते हैं जो इस आदर को समझने के बजाय उसका मज़ाक बना देते हैं।

एक और बड़ी समस्या यह है कि कई लोग दूसरों के सामने उस व्यक्ति को अनदेखा करते हैं जो उन्हें सम्मान देता है, लेकिन अकेले में उसी से प्रेम और अपनापन जताते हैं। यह दोहरा व्यवहार इस बात की पहचान है कि उनका हृदय छोटा है और उनके भीतर आत्मविश्वास की कमी है। दूसरों की नज़रों में 'कूल' दिखने या मज़ाक उड़ाने के लिए वे सार्वजनिक रूप से उसी सम्मानजनक शब्दों को बार-बार दोहराकर खिल्ली उड़ाते हैं। वास्तव में यह उनका परिचय है कि वे परिपक्व नहीं हैं और उनके अंदर वह विशालता नहीं है जो सम्मान स्वीकार कर सके।

जो व्यक्ति दिल से किसी को सम्मान देता है, वह जब देखता है कि उसी सम्मान का उपयोग मज़ाक बनाने में हो रहा है, तो उसका हृदय गहराई से आहत होता है। वह यह सोचने पर मजबूर हो जाता है कि शायद उसकी आदर देने की आदत ही गलत थी।

दरअसल, सम्मान देना एक सुंदर भाव है, लेकिन जब वही सम्मान उपहास का कारण बन जाए तो देने वाले का विश्वास टूट जाता है। यह स्थिति अत्यंत दुखद है, क्योंकि समाज में वैसे भी सच्चा आदर देने वाले बहुत कम लोग बचे हैं।

यहां यह कहना भी उचित होगा कि कुछ गलती उस व्यक्ति

की भी होती है जो बिना सोचे-समझे किसी को भी सम्मान देने लगता है। जैसे महंगी चीज़ हर किसी की पहुँच में नहीं होती, वैसे ही सम्मान भी हर किसी को नहीं देना चाहिए। सम्मान वही पात्र है जिसके पास उसे संभालने की क्षमता हो। यदि आप हर किसी को आदर देंगे, तो कई लोग उसकी कद्र नहीं करेंगे और आपको ही छोटा साबित करने में लग जाएंगे। इसलिए समझदारी यही है कि सम्मान वहाँ दें जहाँ वह वास्तव में योग्य हो और उसका मूल्य समझा जा सके।

सम्मान का असली सौंदर्य तभी है जब वह सच्चे मन से दिया जाए और उसी ईमानदारी से स्वीकार भी किया जाए। यह न तो लेन-देन की वस्तु है और न ही दिखावे का माध्यम। यह व्यक्ति के संस्कार, शिक्षा और मानसिकता का परिचायक है।

किसी को सम्मान देना आपके भीतर की विनम्रता और सभ्यता की सबसे बड़ी निशानी है। और यदि कोई इसका मज़ाक बनाता है, तो वास्तव में वह अपने छोटेपन का परिचय दे रहा है।

इसलिए हमें यह समझना चाहिए कि सम्मान देना कमजोरी नहीं है, बल्कि संस्कार है। दूसरों को नीचा दिखाने या आदर की खिल्ली उड़ाने से आप बड़े नहीं हो जाते, बल्कि अपना स्तर गिराते हैं। सच्चा इंसान वही है जो सम्मान को स्वीकार कर सके, उसे लौटाकर और गहरा बना सके। और सम्मान देने वाले को भी चाहिए कि वह सोच-समझकर सम्मान दे, क्योंकि यह भी एक अमूल्य धरोहर है जिसे हर कोई संभाल नहीं सकता।

आखिरकार, किसी की परवरिश और उसके संस्कार की सबसे सुंदर झलक उसके व्यवहार से दिखती है। और जो व्यक्ति दूसरों को आदर दे सकता है, वही जीवन के असली मायनों को समझता है।

सौ वर्षों से तीन स्तंभों पर बढ़ रहा है संघ

संघ शताब्दी वर्ष

अवधेश कुमार

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ स्थापना के 100 वर्ष पूरे कर चुका है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर गहराई से अध्ययन करने वाले जिन लोगों ने भी उसकी लंबी यात्रा पर दृष्टि रखी है उन सबका एक ही निष्कर्ष है कि केवल भारत नहीं, संपूर्ण विश्व में राजनीतिक,गैर राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, स्वयंसेवी, एनजीओ, थिंक टैंक आदि को दृष्टि में रखकर इसे नहीं समझा जा सकता। अर्थात् यह अन्य संगठनों या संस्थाओं की तरह संगठन और संस्था नहीं है। इसके संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने भारत या समाज के अंदर एक संगठन की जगह संपूर्ण समाज के साथ एकाकार होने वाले या उसके पर्याय के तौर पर संगठन की कल्पना की और उस चरित्र को हर परिस्थिति में बनाए रखा। इसका सबसे बड़ा प्रमाण क्या हो सकता है?

आप सार्वजनिक तौर पर किसी पार्टी, संगठन, संस्था पर आरोप लगाइए वह उपलब्ध माध्यमों से खंडन करने, विरोध करने और आरोप लगाने वालों के विरुद्ध प्रत्यारोप करने आ जाएगा। यह आम स्वाभाविक चरित्र है। ऐसा कोई दिन नहीं जब संघ पर सीधे हमले नहीं होते, उसकी निंदा या आलोचना नहीं होती। क्या कभी आपने संघ के अधिकारियों द्वारा पत्रकार वार्ता बुलाकर या बयान जारी कर पक्ष रखने, खंडन करने या प्रत्यारोप की भूमिका में देखा है? अन्य को छोड़ दीजिए तो यही एक पहलू इसे सभी संगठनों से बिल्कुल अलग चरित्र का सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है।

यही संघ संस्थापक के दूरदृष्टि आश्चर्यचकित करती है। संघ की बैठकों में अधिकारी बताते हैं कि अगर हमारी कोई निंदा करे, विरोध करे तो उसका उत्तर देने में समय नहीं लगाना है, अपना काम करते रहना है। जब दूसरे सरसंचालक माधव सदाशिव गोलवलकर या गुरु गोलवलकर के आवास पर हमले हुए और स्वयंसेवकों ने विरोध किया तो उन्होंने ऐसा करने से रोका और कहा कि विरोध करने वाले भी हमारे अपने हैं। कल हमारा समर्थन करते थे आज विरोध कर रहे हैं तो वह भी हमें स्वीकार करना चाहिए। इस तरह संघ का चरित्र विकसित हो गया कि आलोचना और निंदा करने वाले को भी अपना मानकर ही व्यवहार करना है। तीसरा विषय है विचारधारा का। अगर वर्तमान विचारधारा के ढांचे को देखेंगे तो एक ही शब्द है, हिंदुत्व. इसके अनुसार हिंदुओं का संगठन और हिंदू राष्ट्र के रूप में भारत की रचना की कल्पना। शाखाओं से लेकर शिक्षा वर्गों एवं कार्यक्रमों में हिंदुत्व का अर्थ यह बताया जाता है कि सभी के अंदर एक ही तत्व है इसलिए कोई और कुछ भी हमसे अलग नहीं है। तो जैसा व्यवहार हम अपने साथ करते हैं ,अपने को उन्नत करने के लिए परिश्रम करते हैं वही सोच और व्यवहार सबके साथ करना है। यह भी कि कोई इसे हिंदू राष्ट्र कहे, कोई भारत कहे, कोई हिंदुस्तान कहे कुछ भी कहे उससे अंतर नहीं आता, इस राष्ट्र का चरित्र वही है। हिंदुत्व अर्थात सर्वधर्म समभाव और सब के सुखी होने,सबके निरोग होने सबके भद्र होने का व्यापक विचार। संक्षेप में कहा जाए तो 100 वर्षों की यात्रा में संघ इन्हीं तीन स्तंभों पर आगे बढ़ता रहा है। इसीलिए इतनी प्रतिकूलताओं, हमलों, निंदा व प्रतिबंधों के बावजूद वह अविचल है तथा स्वयंसेवकों ने समाज के हर क्षेत्र में अपनी दृष्टि से कार्य खड़ा किया है। इसी कारण आज संघ मातृसंगठन के रूप में बट वृक्ष के रूप में खड़ा है और विश्व के 100 से ज्यादा देशों तक कार्य पहुंचा है।

संघ संस्थापक की दूरदृष्टि देखिए। संघ कार्य के लिए प्रचारकों की परंपरा, जो परिवार से बाहर रहकर सन्यासी की तरह 24 घंटे संगठन के लिए ही काम करेंगे। पारिवारिक व्यक्ति या परिवार बसाने की कामना करने वाले भी पूर्णकालिक कार्यकर्ता के रूप में निश्चित अवधि तक समय देंगे और तब केवल संघ कार्य ही करेंगे। जब आपका कोई निजी स्वार्थ नहीं तो भारत राष्ट्र ही सर्वस्व की भावना से सैकड़ों प्रचारक एक सोच और योजना से काम करेंगे, संगठन विस्तार करेंगे तो लक्ष्य निश्चित प्राप्त होगा। डॉक्टर हेडगेवार अपने आरंभिक काल में ही हिंसक क्रांतिकारी संगठनों, अहिंसक कांग्रेस, समाज सुधार आंदोलन आदि के साथ प्रत्यक्ष कार्य करते रहे और उसके अनुभव के आधार पर उनके लगा कि अगर अंग्रेजों से मुक्ति हो भी गई तो जब तक भारत राष्ट्र की सही समझ रखने वाले प्रतिबद्ध शत- प्रतिशत जीवन लगाकर काम करने वाले लोग नहीं होंगे, भारत को जैसा होना चाहिए जहां होना चाहिए वह नहीं होगा और फिर यह गुलाम नहीं होगा इसकी भी गारंटी नहीं रहेगी। तभी उन्होंने संघ की स्थापना की और फिर इसका क्रमिक विकास हुआ। अंत में एक अत्यंत महत्वपूर्ण पहलू की ओर आइए। स्वतंत्रता के पूर्व संघ के स्वयंसेवकों की प्रतिज्ञा में हिंदू राष्ट्र को स्वतंत्र करने की बात थी लेकिन उन्होंने संगठन को प्रत्यक्ष कभी आंदोलन या विरोध प्रदर्शन में शामिल नहीं होने दिया। उन्होंने देख लिया था कि अगर संघ सीधे आंदोलनों, विरोध प्रदर्शनों, समाज सुधार के कामों में लग गया तो यह खत्म हो जाएगा। इसलिए जब वे नमक सत्याग्रह में गए तो ससरसंचालक पद से त्यागपत्र दिया ताकि कोई भ्रम न रहे कि संगठन के रूप में संघ इस तरह का कार्य नहीं करेगा लेकिन स्वयंसेवक कर सकते हैं। इसीलिए जब आलोचक और विरोधी पूछते हैं कि संघ ने स्वतंत्रता आंदोलन में कब भाग लिया, संघ ने कौन सा आंदोलन किया तो वे उसके चरित्र के विपरीत बात करते हैं। संघ की कल्पना रही है कि स्वयंसेवक, जहां भी रहे वहां हवा और विद्युत की तरह प्रभाव डालकर परिणाम लाये परंतु प्रत्यक्ष शायद दिखें भी नहीं। बिजली दिखती नहीं है लेकिन बल्ब जलता है, पंखे चलते हैं, गाड़ियां चलतीं हैं। हवा भी दिखती नहीं है लेकिन अगर हवा नहीं हो तो दुनिया नष्ट हो जाएगी। सच यह है जहां भी स्वयंसेवक हैं, उनने अनियोजित -नियोजित जितने कार्य किए हैं कि उनका विवरण इकट्ठा करना मुश्किल है। सच्चाई यह है कि भारत में ऐसा कोई आंदोलन, सामूहिक बड़ा कार्य, परिवर्तन, सकारात्मक उपलब्धि ऐसी नहीं रही जिसमें संघ के स्वयंसेवकों की भूमिका नहीं। चूंकि स्वयंसेवक राजनीति, समाज, संस्कृति, तकनीक, विज्ञान, शिक्षा, रक्षा, आंतरिक सुरक्षा, कृषि, उद्योग, मनोरंजन, कला यानी समाज जीवन के हर क्षेत्र में हैं और उनके लक्ष्य निश्चित हैं तो वो अपनी भूमिका निभाते रहते हैं। वहां संघ का कोई बैनर नहीं हो सकता।

जो संगठन समाज के पर्याय के रूप में स्वयं को बढ़ा रहा हो या समाज के साथ एकाकार रहता हो वह न अपनी उपलब्धियां के बारे में बात करेगा न इसकी आवश्यकता उसे महसूस होगी। आप संघ से जुड़े नहीं है लेकिन स्वयंसेवकों को जानते हैं तो जरा शांत होकर उनकी गतिविधियों,समाज में उनके योगदान आदि पर दृष्टि दौड़ाइए। आप देखेंगे कि जहां एक शाखा लगती है उसमें नियमित स्वयंसेवकों की संख्या भले कम हो लेकिन धीरे-धीरे समाज पर उसका प्रभाव पड़ता है, घरों में, एक दूसरे के साथ संबंधों में, अलग-अलग जीवन के अंगों में ऐसे परिवर्तन होते रहते हैं जो हमें भी महसूस नहीं होता कि कैसे और कब हो गया। उनके चलने, उठने ,बैठने, खान-पान, किसी सामूहिक कार्यक्रम में भूमिका, व्यवहार से पूरा समाज प्रभावित होता है और कुछ उसके अनुरूप काम करने लगते हैं तो कुछ उनका समर्थन करते प्रशंसा करते हैं। स्थानीय स्तर पर राजनीतिक विरोधी भी ऐसे कार्यों में उनके सहयोगी या समर्थक के रुप में दिखते हैं। आप कल्पना करिए इस तरह संगठन ने नीचे से लेकर ऊपर तक कितने कार्य किए होंगे और कैसे परिणाम लाए होंगे।

शताब्दी वर्ष में भी संघ का यही चरित्र सामने है। वह पंच परिवर्तन की बात कर रहा है। ये हैं, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक समसरता, स्व आधारित व्यवस्था, कुटुंब प्रबोधन तथा नागरिक कर्तव्य। अर्थात् स्वयंसेवक लोगों के बीच इन्हीं विषयों को लेकर जाएंगे जो एक राष्ट्र के रूप में भारत के लिए आवश्यक है। इसके लिए विस्तृत गृह संपर्क अभियान, हिन्दू सम्मेलन, प्रबुद्ध नागरिक गोष्ठियां और समाज में आपसी सद्भाव संबंधी सभाओं - बैठकों का आयोजन होगा। तो शताब्दी वर्ष के पांच परिवर्तन और कार्यक्रम भी संघ के चरित्र को ही दिग्दर्शित करता है। वस्तुत: उसका हर कार्य अपने तीन मुख्य स्तंभों के अनुरूप ही रहेगा।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

गांधी दर्शन

प्रक्षाली देसाई

लेखक गाँधी की 'नई तालीम' से प्रेरित 'सम्यक बुनियादी शाला' की संचालक हैं।

एआई के दौर में महात्मा गांधी के प्रबंधकीय कौशल का महत्व

गांधीजी के जीवन में निर्णायक मोड़ उस समय आया था, जब उन्हें दक्षिण अफ्रीका के प्रिटोरिया स्टेशन पर अपमानित कर ट्रेन से बाहर फेंक दिया गया था। उस क्षण उनके मन में यह सवाल खड़ा हुआ था कि क्या अन्याय से डरकर भागना चाहिए या उसका डटकर सामना करना चाहिए। यहीं से उनके भीतर यह बोध विकसित हुआ कि सच्चा नेतृत्व केवल नियमों और आदेशों पर आधारित नहीं होता, बल्कि उसमें संवेदनशीलता, नैतिक साहस और भावनात्मक प्रतिबद्धता भी आवश्यक है। यही सोच उन्हें 'मोहन' से 'महात्मा' की ओर ले गई।

आजकल प्रबंधन को हर क्षेत्र में सफलता का प्रमुख आधार माना जाता है। यदि हम इतिहास पर दृष्टि डालें तो पाएंगे कि आधुनिक प्रबंधन के अनेक सिद्धांतों को महात्मा गांधी ने अपने आंदोलनों के माध्यम से बहुत पहले ही अमल कर लिया था। उन्होंने जनसंगठन, संसाधन प्रबंधन, संवाद कला, संकट प्रबंधन और रणनीतिक दृष्टि का ऐसा समन्वय किया कि सत्याग्रह केवल राजनीतिक संघर्ष का साधन नहीं रहा, बल्कि वह मानवीय नेतृत्व और व्यवस्थापन का जीवंत विद्यालय बन गया।

गांधीजी के जीवन में निर्णायक मोड़ उस समय आया था, जब उन्हें दक्षिण अफ्रीका के प्रिटोरिया स्टेशन पर अपमानित कर ट्रेन से बाहर फेंक दिया गया था। उस क्षण उनके मन में यह सवाल खड़ा हुआ था कि क्या अन्याय से डरकर भागना चाहिए या उसका डटकर सामना करना चाहिए। यहीं से उनके भीतर यह बोध विकसित हुआ कि सच्चा नेतृत्व केवल नियमों और आदेशों पर आधारित नहीं होता, बल्कि उसमें संवेदनशीलता, नैतिक साहस और भावनात्मक प्रतिबद्धता भी आवश्यक है। यही सोच उन्हें 'मोहन' से 'महात्मा' की ओर ले गई।

दक्षिण अफ्रीका में 1893 से 1914 तक का संघर्ष उनके प्रबंधकीय कौशल का पहला प्रमाण था। वहाँ उन्होंने भारतीयों पर लागू अन्यायपूर्ण कानूनों का सामना किया। 'नटाल इंडियन कांग्रेस' की स्थापना की और लोगों को संगठित कर 'गिरमिटिया कानून' के विरुद्ध व्यापक आंदोलन चलाया। यह आंदोलन केवल व्यक्तिगत प्रतिशोध का साधन नहीं था, बल्कि सामूहिक अधिकारों और मानवीय गरिमा की रक्षा का प्रयास था। गांधीजी ने यहाँ भागीदारी नेतृत्व अपनाया और निर्णय लेने की प्रक्रिया में सभी को सम्मिलित किया।

संवाद के लिए गांधीजी ने 'इंडियन ओपिनियन' अखबार का सहारा लिया और सरकार, प्रेस व जनता तीनों से बहुस्तरीय संवाद स्थापित किया। संसाधनों की पूर्ति के लिए उन्होंने समुदाय से दान एकत्र कर 'ट्रस्टीशिप' का सिद्धांत प्रस्तुत किया। 'टॉलस्टॉय फार्म' और 'फीनिक्स आश्रम' की स्थापना कर उन्होंने अनुशासन और प्रशिक्षण की व्यवस्था की। अहिंसा और सत्य जैसे मूल्यों का उन्होंने पहली बार राजनीतिक रणनीति के रूप में प्रयोग किया और लोगों के भय को 'नैतिक बल' में बदल दिया। इस अनुभव ने उनके आगामी आंदोलनों के लिए एक ठोस आधार तैयार कर दिया।

भारत लौटने के बाद 1917 में बिहार का चंपारण गांधीजी की प्रयोगशाला बना। यहाँ अंग्रेज ज़मींदार किसानों से ज़बरन नील की खेती करवाते थे। गांधीजी ने गाँव-गाँव घूमकर किसानों से संवाद किया, सर्वेक्षण कराया और साक्ष्य जुटाए। यह वस्तुत: 'फील्ड रिसर्च' और 'डेटा संग्रहण' की प्रक्रिया थी। उन्होंने स्थानीय नेताओं, जैसे - डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, आचार्य कृपलानी और मजरूल हक के अलावा छात्रों को भी आंदोलन से जोड़ा। इस प्रकार 'टीम-बिल्डिंग' और स्थानीय 'नेटवर्किंग' की सशक्त मिसाल पेश की।

स्वयं किसानों के बीच रहकर उन्होंने सेवक नेतृत्व का परिचय दिया। किसानों ने उन्हें अपना हमदर्द और सच्चा साथी माना। जब ब्रिटिश सरकार ने उन्हें चंपारण छोड़ने का आदेश दिया, तो उन्होंने शांतिपूर्वक इंकार कर दिया। यह उनका 'जोखिम प्रबंधन' था। आंदोलन के बाद उन्होंने शिक्षा, स्वच्छता और स्वास्थ्य सुधार जैसे स्थायी कार्यक्रम शुरू किए। इस प्रकार चंपारण केवल किसानों की समस्या का समाधान नहीं रहा, बल्कि ग्रामोत्थान और क्षमता निर्माण का केंद्र बन गया।

1918 में गुजरात के खेड़ा जिले में भयंकर अकाल पड़ा। किसान कर अदा करने में असमर्थ थे, लेकिन सरकार उन्हें राहत देने को तैयार नहीं थी। गांधीजी ने आंदोलन का नेतृत्व स्वयं करने की बजाय इसे सरदार वल्लभभाई पटेल और उनके सहयोगियों को सौंपा। गाँव-गाँव समितियाँ बनीं, जनसभाएँ हुईं और व्यक्तिगत संवाद द्वारा किसानों में साहस जागा। सामूहिक चंदा और पारस्परिक सहयोग से आंदोलन आगे बढ़ा। यह गांधीजी के 'विकेंद्रीकृत प्रबंधन' का अद्भुत उदाहरण था, जहाँ नेता केवल प्रेरक होता है, वास्तविक नेतृत्व स्थानीय स्तर पर पनपता है।

इसी वर्ष गांधीजी ने अहमदाबाद में मिल मालिकों और मजदूरों के बीच मध्यस्थता की। मजदूरों ने वेतन वृद्धि की माँग करते हुए हड़ताल कर रखी थी। महिला नेत्री अनसूया साराभाई के नेतृत्व में मजदूर एकजुट थे। गांधीजी ने दोनों पक्षों से संवाद कर यथार्थवादी माँगों को सामने रखा और वार्ता की राह खोली। जब गतिरोध बढ़ा तो उन्होंने उपवास कर नैतिक दबाव बनाया। उन्होंने किसी त्वरित जीत की बजाय छोटे-छोटे मुद्दों पर सहमति बनाकर आंदोलन को आगे बढ़ाया। यही वार्ता प्रबंधन की सच्ची कला थी। परिणामस्वरूप 1920 में 'मजदूर महाजन संघ' की स्थापना हुई, जो भारत का पहला संगठित श्रमिक संगठन बना।

1930 का 'नमक सत्याग्रह' गांधीजी के प्रबंधकीय कौशल का सर्वोत्तम उदाहरण था। अंग्रेजों ने नमक पर कर लगाया था, जो हर व्यक्ति की अनिवार्य आवश्यकता थी। गांधीजी ने इस सरल किंतु गहरे असर वाले मुद्दे को चुना। 78 चुनिंदा सत्याग्रहियों के साथ उन्होंने 'साबरमती आश्रम' से दांडी तक 240 मील लंबी पदयात्रा की। प्रत्येक गाँव में पहले से योजना बनाई गई थी, जहाँ कार्यकर्ता सफाई, चरखा कातने, शिक्षा और अछूत उद्धार जैसे रचनात्मक कार्यक्रम चलाते रहे। संदेश था - 'नमक कर अन्याय है और हम इसे तोड़ेंगे।' अंतरराष्ट्रीय मीडिया ने इस यात्रा को पूरी दुनिया तक पहुँचाया। दांडी पहुँचकर गांधीजी ने स्वयं नमक बनाया और सरकार को खुली चुनौती दी। लाखों लोगों ने गिरफ्तारी दी, लेकिन आंदोलन चलता रहा। यही नेतृत्व का विकेंद्रीकरण था, जिसने आंदोलन को स्थायित्व दिया। अंतत: गांधी-इरविन समझौते ने कांग्रेस को वैधानिक मान्यता दिलाई और स्वतंत्रता संग्राम को वैश्विक स्तर पर विश्वसनीयता प्रदान की।

1942 का 'भारत छोड़ो आंदोलन' गांधीजी की रणनीतिक दूरदृष्टि और प्रबंधन का उच्चतम शिखर था। 8 अगस्त को मुंबई के गोवालिया टैंक मैदान से उन्होंने 'करो या मरो' का आह्वान किया। यह केवल नारा नहीं था, बल्कि पूरे आंदोलन का स्पष्ट लक्ष्य और भावनात्मक संदेश था। संक्षिप्त और सटीक नारा जन-जन तक पहुँचा और पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में बाँध दिया। समय भी रणनीतिक दृष्टि से उपयुक्त था क्योंकि द्वितीय विश्वयुद्ध में अंग्रेज पहले से ही कमजोर हो चुके थे। नेताओं की गिरफ्तारी के बावजूद आंदोलन गाँव-गाँव में फैल गया। यह विकेंद्रीकृत नेतृत्व की ही सफलता थी कि बिना किसी केंद्रीय निर्देश के आंदोलन चलता रहा। इस आंदोलन ने जनता के भीतर त्याग, साहस और संकल्प का संचार किया।

गांधीजी के आंदोलनों से हमें स्पष्ट होता है कि नेतृत्व और प्रबंधन का वास्तविक आधार केवल तकनीक या औपचारिक संरचना नहीं, बल्कि पारदर्शिता, सत्य, अहिंसा, अनुशासन और समयबोध है। उनका संदेश सरल होता था, किंतु वही सरलता आंदोलन को व्यापक प्रभाव प्रदान करती थी। संसाधनों का पारदर्शी उपयोग जनसमर्थन अर्जित करता था और अनुशासन आंदोलन को दीर्घकाल तक स्थायित्व देता था।

आज के 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' के युग में जब हम जटिल चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, गांधीजी के मूल्य - सत्य, अहिंसा, आत्मानुशासन, धैर्य और प्रेम - ऐसे स्थायी सूत्र हैं जो हर कठिनाई का समाधान खोजने में सक्षम हैं। महात्मा गांधी के सत्याग्रह आंदोलनों की यही विशेषता रही कि उन्होंने जनता को केवल राजनीतिक स्वतंत्रता का लक्ष्य नहीं दिया, बल्कि प्रबंधन और नेतृत्व की ऐसी प्रेरणा दी जो आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी उस दौर में थी। उनके आंदोलनों ने यह सिद्ध कर दिया कि सही उद्देश्य, स्पष्ट संदेश, नैतिक आधार और सामूहिक भागीदारी के बल पर किसी भी अन्यायपूर्ण व्यवस्था की नींव हिलाई जा सकती है। (सप्रेस)

गांधी विचार

अरुण कुमार डनायक

लेखक गांधी विचारों के अध्येता हैं।

हिन्दू धर्म के विरोधी नहीं, सुधारक थे गांधीजी

गांधीजी वर्णाश्रम को मानव-जीवन का स्वाभाविक विभाजन मानते थे, जिसमें चार वर्ण केवल व्यवसाय और कर्तव्यों के सूचक हैं। लेकिन जन्माधारित जाति-व्यवस्था में ऊंच-नीच के भेदभाव और उपजातियों के विभाजन को उन्होंने अन्यायपूर्ण ठहराया। वे अंतरजातीय विवाह और खानपान की स्वतंत्रता के पक्षधर थे। उनके अनुसार वर्णाश्रम का सही अर्थ आत्मसंयम और शक्ति के नैतिक प्रयोग में है, न कि ऊँच-नीच की दीवार खड़ी करने में। आगे चलकर उनके विचारों में और अधिक परिवर्तन भी आया और वे बराबरी के समर्थक बने।

महात्मा गांधी का व्यक्तित्व भारतीय सभ्यता और संस्कृति की गहरी जड़ों से जुड़ा था। सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता का भाव रखते हुए भी वे स्वयं को सदा 'सनातनी हिन्दू' कहते थे। हिन्दू धर्म की परम्परागत जड़ताओं और रूढ़ियों की तीखी आलोचना करने के कारण वे जीवन पर्यंत कट्टरपंथी हिन्दुओं के निशाने पर रहे, यहाँ तक कि कई आलोचकों ने उन्हें हिन्दू मानने से ही इंकार कर दिया। गांधीजी की आलोचना आज भी थमी नहीं है; उन पर अक्सर मुस्लिम तुष्टिकरण का आरोप लगाया जाता है और यहाँ तक कहा जाता है कि भारत विभाजन के समय उन्होंने जिन्ना के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। अक्सर उन पर यह आरोप लगाया गया कि वे मुसलमानों की आलोचना नहीं करते और केवल हिन्दू समाज की बुराइयों पर प्रहार करते हैं। वस्तुत: यह उनका नैतिक साहस था कि उन्होंने अपने ही धर्म की कमियों को पहले चिन्हित किया और सुधार के लिए आवाज़ उठाई।

सितम्बर 1921 में तमिलनाडु तत्कालीन मद्रास राज्य की यात्रा के दौरान जब उन्होंने जाति-भेद, अस्पृश्यता और धार्मिक आडम्बरों को देखा, तो गहरी व्यथा व्यक्त की। विभूति, चन्दन और कुमकुम के दिखावटी उपयोग तथा मंदिरों पर अपव्यय की आलोचना की, जिस पर परंपरावादियों ने आक्रोश प्रकट किया। इसके उत्तर में गांधीजी ने 6 अक्टूबर 1921 के यंग इंडिया में लिखा- 'मैं अपने को सनातनी हिन्दू इसलिए कहता हूँ कि मैं वेद, उपनिषद, पुराण आदि में विश्वास करता हूँ; अवतार और पुनर्जन्म में आस्था रखता हूँ; वर्णाश्रम धर्म के शुद्ध वैदिक रूप का समर्थक हूँ; गोरक्षा को व्यापक मानवीय कर्तव्य मानता हूँ; और मूर्ति-पूजा का निषेध नहीं करता।' साथ ही उन्होंने स्पष्ट किया कि वे अंधविश्वास और रूढ़ियों के समर्थक नहीं हैं। उनका उद्देश्य परम्परा की आत्मा को बचाए रखते हुए सुधार करना था।

गांधीजी मानते थे कि केवल वेद ही नहीं, बल्कि बाइबल, कुरआन और ज़ेंद अवेस्ता भी ईश्वरीय प्रेरणा से रचे गए हैं। उनके अनुसार शास्त्रों की व्याख्या पांडित्यपूर्ण भाष्य से नहीं, बल्कि नैतिक विवेक और आत्मबुद्धि से होनी चाहिए। गीता और तुलसीकृत रामायण उनके प्रिय ग्रंथ थे। गीता के 'स्थितप्रज्ञ' का आदर्श उनके जीवन का आधार बना और कठिन क्षणों में उन्हें दिशा दी। रामचरितमानस और उपनिषदों से उनकी प्रार्थना और संघर्ष को निरंतर प्रेरणा मिली। गांधीजी का हिन्दू दर्शन के पाँच यम नियमों-सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह-पर अटूट विश्वास था। यद्यपि वे गुरु-शिष्य परम्परा के हिमायती थे, फिर भी यह स्पष्ट कहते थे कि पूर्ण ज्ञान और पवित्रता का संयोग एक ही व्यक्ति में मिलना आज कठिन है, और इन दोनों गुणों के अभाव में कोई भी व्यक्ति गुरु कहलाने का अधिकारी नहीं हो सकता।

गांधीजी वर्णाश्रम को मानव-जीवन का स्वाभाविक विभाजन मानते थे, जिसमें चार वर्ण केवल व्यवसाय और कर्तव्यों के सूचक हैं। लेकिन जन्माधारित जाति-व्यवस्था में ऊंच-नीच के भेदभाव और उपजातियों के विभाजन को उन्होंने अन्यायपूर्ण ठहराया। वे अंतरजातीय विवाह और खानपान की स्वतंत्रता के पक्षधर थे। उनके अनुसार वर्णाश्रम का सही अर्थ आत्मसंयम और शक्ति के नैतिक प्रयोग में है, न कि ऊँच-नीच की दीवार खड़ी करने में। आगे चलकर उनके विचारों में और अधिक परिवर्तन भी आया और वे बराबरी के समर्थक बने।

गांधीजी के लिए गाय करुणा और निरपराध जीवन की रक्षा का प्रतीक थी। वे गोरक्षा को हिंसा से नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि और आत्मत्याग से संभव मानते थे। उनका विश्वास था कि प्रेम और आग्रह से मुसलमान भाई भी गौहत्या छोड़ सकते हैं। उन्होंने कहा-सच्चे हिन्दू की पहचान न तिलक और मंत्रों से है, न जाति और तीर्थाटन से; उसकी पहचान है-गौसेवा की क्षमता। गांधीजी ने हिन्दू मंदिरों में देवदासी-प्रथा, पशुबलि और अस्पृश्यता जैसी बुराइयों की कठोर आलोचना की। उन्होंने हिन्दू स्त्रियों की दुर्दशा-अशिक्षा, बाल विवाह और विधवा-जीवन की यातना-को सुधार का विषय बनाया और महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण हेतु बहुत से सुझाव दिए, उन्हें कताई बुनाई के कार्य से जोड़ने हेतु सशक्त अभियान चलाया । वे मूर्ति-पूजा के विरोधी नहीं थे; स्वयं को 'मूर्तिपूजक और मूर्तिभंजक दोनों' कहते थे। उनके अनुसार मंदिर और मूर्ति-पूजा साधना के माध्यम हैं, अंधविश्वास के नहीं।

गांधीजी मानते थे कि हिन्दू धर्म किसी संकीर्ण वर्जनशीलता पर आधारित नहीं है। इसमें सभी नबियों और पैगम्बरों के लिए स्थान है। वे बार-बार कहते थे कि हिन्दू धर्म का सौंदर्य उसकी सहिष्णुता और सब मतों को स्थान देने की क्षमता में है। यहाँ तक कि उन्होंने कहा-यदि अस्पृश्यता हिन्दू धर्म का अंग है, तो वे स्वयं को हिन्दू कहने से इंकार कर देंगे।

गांधीजी पर अक्सर मुस्लिम तुष्टिकरण का आरोप लगाया गया। इस पर उन्होंने अमृतसर (5 दिसम्बर 1924) की सभा में उत्तर दिया-'मैं हिन्दू हूँ और अपने धर्म को भलीभाँति जानता हूँ, इसलिए उसकी बुराइयों पर बोल सकता हूँ। मुसलमानों के धर्म की गहरी जानकारी न होने के कारण उनकी आलोचना करना उनकी भावनाओं को ठेस पहुँचाना होगा।' वे मुसलमानों द्वारा की गई हिंसा से भी असहमत थे, पर प्रतिहिंसा का मार्ग अपनाने का विरोध करते थे। उनका आग्रह था कि हिंसा का सामना, अहिंसा के सिद्धांत आत्मबल और त्याग से किया जाए। आज जब समाज जाति, संप्रदाय और आडम्बरों की संकीर्णताओं से जूझ रहा है, तब गांधीजी के हिन्दू धर्म संबंधी विचार पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। उन्होंने यह दिखाया कि हिन्दू धर्म की आत्मा किसी बाहरी कर्मकाण्ड या कठोर रूढ़ि में नहीं, बल्कि सत्य, अहिंसा, करुणा और आत्मसंयम में निहित है। गांधीजी ने हमें सिखाया कि धर्म का वास्तविक उद्देश्य आत्मशुद्धि और सहअस्तित्व है, न कि पूजा-पाठ के बाहरी आडम्बर, विभाजन और वैमनस्य। उन्होंने अस्पृश्यता, जातिवाद और कुरीतियों को चुनौती देकर यह साबित किया कि धर्म तभी जीवित और उपयोगी रह सकता है जब वह समयानुकूल सुधार को स्वीकार करे। आज की पीढ़ी के लिए गांधीजी का संदेश यही है कि यदि हम हिन्दू धर्म के शाश्वत मूल्यों को अपने जीवन का आधार बनाएँ, तो न केवल समाज में नैतिक बल और सहिष्णुता बढ़ेगी, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए एक बेहतर भविष्य का मार्ग प्रशस्त होगा। गांधीजी का जीवन और विचार इस बात का साक्षी हैं कि हिन्दू धर्म का मर्म इंसान के भीतर के प्रकाश को जगाने और दूसरों के जीवन को आलोकित करने में है।

विश्व पशु दिवस

प्रमोद दीक्षित मलय

लेखक शैक्षिक संवाद मंच के संस्थापक हैं।

पशुओं को क्रूरता-पीड़ा नहीं, करुणा और प्यार दें

पिछले दिनों सोशल मीडिया के माध्यम से मिले पशुओं पर मानव की क्रूरता और शोषण के कुछ वीडियो देखकर मन व्यथित हुआ, चीत्कार कर उठा। मनुष्य के रूप में हम कितना निकृष्ट काम कर रहे हैं। मैंने देखा कि एक व्यक्ति अपनी कार से जंगल में उतर कर अपने दो पालतू कुत्तों को पेड़ से बांधकर घर भाग जाता है और कुत्ते किकिहाते उछलते रहते हैं। एक अन्य व्यक्ति चलती कार से खिड़की को खोल पालतू कुत्ते को सड़क पर छोड़ तेज रफ्तार से बढ़ जाता है और वह कुत्ता बहुत दूर तक कार के पीछे-पीछे दौड़ता है, गिरता है, फिर उठकर दौड़ता है। इन दोनों लोगों ने बड़े प्यार से कुत्ते के पिल्ले पाले होंगे पर अब वे उनके दिनचर्या में बाधक बन रहे होंगे तो बेजुबान जानवरों के प्रति ऐसा अमानवीय क्रूर व्यवहार कहां न्यायोचित है। यह मनुष्य का पतन है, जीवों के प्रति हिंसा है। कोई भी व्यक्ति किसी प्राणी को पीड़ा, दुख, पिटाई, कष्ट देकर कभी सुखी-संतुष्ट नहीं हो सकता। एक अन्य वीडियो में एक व्यक्ति एक भैंसे वाली गाड़ी पर उसकी वहन क्षमता से बहुत अधिक भार लादे हुए हैं और भैंसा को आगे बढ़ने के लिए लगातार उसके पुट्ठे पर कीलयुक्त नुकीली छड़ी चुभाते चमड़े की बेल्ट से पीठ पर मार रहा है। आप अवलोकन करें तो हमारे आसपास ऐसे तमाम दृश्य दिखाई पड़ जाएंगे जिन्हें देखकर देह सिहर उठेगी, हृदय कांप जाएगा। वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व में भोजन, वस्त्र, औषधि, सौंदर्य उत्पाद, सजावटी वस्तुओं के निर्माण हेतु पशुओं का शिकार किया जा रहा है।

वह 1991 के मार्च महीने के अंतिम सप्ताह का कोई दिन था। वातावरण में फागुन की मादकता घुली हुई थी। सूरज रात्रि विश्राम के लिए अपनी किरणें समेटने लगा था। मैं अपने कस्बे में संचालित एक कोचिंग इंस्टीट्यूट में कक्षा 10 के विद्यार्थियों का हिंदी का पीरियड पूरा घर के लिए निकल पड़ा था, तब मैं ऊंची कक्षा में विद्यार्थी था। कोचिंग की गली के मुहाने पर सड़क की बड़ी नाली के ऊपर रखे बेतरतीब लम्बे पत्थरों की दरार में एक गधा का पिछला बायां पैर बुरी तरह फंसा हुआ था। वह पैर निकालने की जितनी भी कोशिश करता, पैर उतना ही फंसता जा रहा था। गधा दर्द से कराह रहा था, लोग आ-जा रहे थे पर किसी को उस पर दया नहीं आ रही थी। मैं उसके बगल से निकल आगे दस कदम ही बढ़ा था कि मुझे अपनी अम्मा की सीख सहसा याद आई कि पशु-पक्षियों से प्रेम एवं करुणा का व्यवहार करना चाहिए। कभी उनको पीटना या चोट पहुंचाना उचित नहीं। संकट में उनकी मदद करनी चाहिए, कि तभी गधा दर्द के कारण जोर से रेंका। मेरे कदम स्वत: रुक गये और मैं यंत्रवत् मुड़ कर उसके निकट चला आया। देखा कि गधे का पैर दो पत्थरों की संकरी दरार में फंसा है, खुर वाला चौड़ा हिस्सा नीचे होने से पैर ऊपर नहीं आ रहा। मैं उसका पैर निकालने का निश्चय कर बैठ गया और हाथों से पैर पकड़ पीछे की ओर खींचने लगा। गधा तो जानवर ही था, उसे क्या पता कि मैं उसकी मदद कर रहा हूं, उसे दर्द के बंधन से मुक्त करने वाला हूं। इसलिए उसने पूरी ताकत से पैर को आगे की ओर खींचा और कुछ अजीब सी आवाज निकाल मेरे मुंह पर अपनी पूंछ मारी। ऐसा भी हो सकता है, इसकी मुझे कल्पना भी नहीं थी। मैं दूर हट गया, गधा दर्द से तड़प रहा था, पैर से खून रिसने लगा था। अब तक कुछ तमाशबीन जुट गये थे। मैंने मदद करने के लिए बुलाया पर कोई आगे नहीं बढ़ा। मैं फिर जुट गया, इस बार गधे ने पलट कर अपने मुंह से मुझे काटने की कोशिश की, और बचाव में मैं गिर पड़ा। मेरे चारों ओर हंसी के गोले फूट पड़े। एक बार तो मुझे बहुत शर्म भी आई कि कहां फंस गया पर अम्मा की सीख ने हिम्मत दी और अबकी बार ईश्वर का स्मरण कर दोनों हाथों से फुर्ती से गधे का पैर पकड़ कर पीछे की ओर बल लगाकर झटके से खींचा। जैसे चमत्कार हुआ, पैर पत्थरों से बाहर आ गया। गधा एकदम से भागा और फिर रुक कर पीछे मुड़ा और चारों पैर पटकते हुए जोर से कुछ-कुछ घोड़े जैसा हिनहिनाया, जैसे मेरा आभार व्यक्त कर रहा हो और फिर भाग गया। बहुत सालों बाद समझ में आया कि वह गधा नहीं खच्चर था। खच्चर गधा से बड़ा होता है तथा घोड़ी और गधे के संसर्ग से जन्म लेता है। खच्चर प्राकृतिक रूप से ही संतानोत्पत्ति में असमर्थ होते हैं।

उपर्युक्त प्रसंग मैंने आत्मश्लाघा में नहीं लिखा अपितु पशु-पक्षियों, पेड़-पौधों के प्रति अपनेपन का भावबीज माता-पिता एवं परिवार द्वारा कैसे रोपित किया जा सकता है, उसका एक उदाहरण मात्र दिया है। यह भाव परिवार में आज तक बना हुआ है। जब गतवर्ष इस लेखक के बच्चों ने गली के एक खुजली वाले मरगिल्ले पिल्ले को अपना कर घर-परिवार का प्यारा सदस्य 'मुन्नू' बना लिया और इस 8 अप्रैल को मुन्नू का बर्थडे मनाकर उसे प्रेम, करुणा एवं आत्मीयता के सुधाजल से सिंचित किया। मेरी तो यह बहुत छोटी सी भूमिका है किंतु आज हजारों पशुप्रेमी घायल पशुओं को आश्रय दे चिकित्सा करते हुए समुचित देखभाल कर रहे हैं। प्रत्येक दिन सैकड़ों की संख्या में गाय, बैल, कुत्ते, बिल्ली, सियार, लोमड़ी, हिरन, नीलगाय, घोड़े, नेवले जैसे पालतू और जंगली जानवर सड़कों में वाहनों की टक्कर से हताहत होते हैं, जानकारी होते ही पशुप्रेमी जिन्हें यथासंभव तुरंत इलाज कर बचाने का प्रयास करते हैं। कुछ लोग संगठित होकर बेसहारा जानवरों के लिए चारा-भूसा, दाना-पानी और आश्रय की व्यवस्था कर रहे हैं। ये लोग मानव होकर भी देवदूत हैं। वे अपने कार्यों के द्वारा दुनिया को मौन संदेश दे रहे होते हैं कि पशु-पक्षियों के बिना हम मनुष्य अपूर्ण हैं।

पिछले दिनों सोशल मीडिया के माध्यम से मिले पशुओं पर मानव की क्रूरता और शोषण के कुछ वीडियो देखकर मन व्यथित हुआ, चीत्कार कर उठा। मनुष्य के रूप में हम कितना निकृष्ट काम कर रहे हैं। मैंने देखा कि एक व्यक्ति अपनी कार से जंगल में उतर कर अपने दो पालतू कुत्तों को पेड़ से बांधकर घर भाग जाता है और कुत्ते किकिहाते उछलते रहते हैं। एक अन्य व्यक्ति चलती कार से खिड़की को खोल पालतू कुत्ते को सड़क पर छोड़ तेज रफ्तार से बढ़ जाता है और वह कुत्ता बहुत दूर तक कार के पीछे-पीछे दौड़ता है, गिरता है, फिर उठकर दौड़ता है। इन दोनों लोगों ने बड़े प्यार से कुत्ते के पिल्ले पाले होंगे पर अब वे उनके दिनचर्या में बाधक बन रहे होंगे तो बेजुबान जानवरों के प्रति ऐसा अमानवीय क्रूर व्यवहार कहां न्यायोचित है। यह मनुष्य का पतन है, जीवों के प्रति हिंसा है। कोई भी व्यक्ति किसी प्राणी को पीड़ा, दुख, पिटाई, कष्ट देकर कभी सुखी-संतुष्ट नहीं हो सकता। एक अन्य वीडियो में एक व्यक्ति एक भैंसे वाली गाड़ी पर उसकी वहन क्षमता से बहुत अधिक भार लादे हुए हैं और भैंसा को आगे बढ़ने के लिए लगातार उसके पुट्ठे पर कीलयुक्त नुकीली छड़ी चुभाते चमड़े की बेल्ट से पींठ पर मार रहा है। आप अवलोकन करें तो हमारे आसपास ऐसे तमाम दृश्य दिखाई पड़ जाएंगे जिन्हें देखकर देह सिहर उठेगी, हृदय कांप जाएगा। वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व में भोजन, वस्त्र, औषधि, सौंदर्य उत्पाद, सजावटी वस्तुओं के निर्माण हेतु पशुओं का शिकार किया जा रहा है। पालतू पशुओं को पिंजड़ों-जंजीरों में रखना और प्रशिक्षण के समय भूखा रखने, पिटाई करने और अंग भंग करने जैसे व्यवहार न केवल हिंसा हैं बल्कि पीड़ा, दर्द और कराह से भरे हैं। पशुओं की रक्षा करें, प्यार दें, सम्मान दें। पशुओं में भी भावनाएं हैं वे प्यार महसूस करते हैं और प्यार जताते भी हैं।

पशुओं के प्रति हिंसा, शोषण एवं क्रूरता के विरुद्ध आत्मीयता, करुणा एवं प्रेमपूर्ण व्यवहार करने, पशु अधिकारों के संरक्षण एवं कल्याण करने हेतु जागरूकता के प्रसार हेतु प्रत्येक वर्ष 4 अक्टूबर को विश्व पशु दिवस मनाया जाता है। सर्वप्रथम 24 मार्च, 1925 को बर्लिन (जर्मनी) में यह आयोजन किया गया। इटली के प्रकृति एवं पशु प्रेमी संत फ्रांसिस की स्मृति में 4 अक्टूबर, 1929 को इटली में आयोजित पशुप्रेमी सम्मेलन में हेनरिक जिमरमैन के प्रस्ताव पर प्रत्येक वर्ष 4 अक्टूबर को विश्व पशु दिवस मनाया जाने लगा। 2003 से नेचरवॉच फाउंडेशन द्वारा आयोजन किया जाता है, 2018 से एक थीम पर कार्यक्रम होते हैं। वर्ष 2024 की थीम थी- दुनिया उनका भी घर है तथा वर्ष 2025 में - जानवरों को बचाओ, ग्रह को बचाओ, थीम निर्धारित है। निश्चित रूप से, इस धरती पर पशुओं का समान अधिकार है। उनके प्राकृतिक आवास, भोजन एवं पारिस्थितिकी को बचाये रखते हुए हमें पशुओं के प्रति सहज प्यार, करुणा और अपनेपन का भाव रखना होगा, तभी विश्व पशु दिवस मनाने की सार्थकता सिद्ध होगी।

पीडब्ल्यूडी को अब दोबारा भेजना होगा प्रपोजल, मंडी के सामने लगता है बार-बार जाम

कृषि उपज मंडी की सड़क का ड्राइंग डिजाइन दूसरी बार रिजेक्ट

बैतूल। बडोरा में ट्रैफिक जाम की समस्या को दूर करने मंडी के पीछे के हिस्से में 90 लाख से एप्रोच रोड बनानी है। इसका ड्राइंग डिजाइन 6 महीने पहले अप्रैल 2025 में भेजी थी जिसे एसई कार्यालय से खारिज कर दिया था, क्योंकि इस 250 मीटर सडक़ के बीच में जो नाला था इस नाले पर पडऩे वाले पुल की ड्राइंग डिजाइन की टेक्नीकल मंजूरी लेनी थी वह नहीं ली थी। इसके बाद पीडब्ल्यूडी ने एक महीने पहले दोबारा ड्राइंग डिजाइन बनाकर भेजा, लेकिन इसे हाल ही में खारिज कर दिया है। इस बार अनुमति लेने के लिए ड्राइंग डिजाइन तो भेजा लेकिन इसमें नाले का उच्चतम जलस्तर और कैचमेंट एरिया नहीं दिखाया था कि पानी फैलता कहां तक जाएगा। अब पीडब्ल्यूडी तीसरी बार इसका ड्राइंग डिजाइन बनाकर भेजेगी। इधर यह सडक़ नहीं बनने के कारण मंडी में आने और जाने के रास्ते एक ही है इस कारण वाहनों के आमने सामने आने से जाम लगते हैं। यह काम 6 महीने में पूरा किया जाना था लेकिन वर्क ऑर्डर के बाद जून में इसकी टाइम लिमिट निकल गई है।

फिर ड्राइंग-डिजाइन हुई खारिज - बडोरा मंडी के सामने ट्रैफिक जाम की

समस्या को दूर करने के लिए पीछे के हिस्से में बनाई जाने वाली 90 लाख की एप्रोच रोड का काम एक बार फिर ड्राइंग डिजाइन खारिज हो जाने के कारण लंबा खिंच गया है। बीते 6 महीने में यह दूसरी बार ड्राइंग-डिजाइन मंजूर नहीं हुई है। इस बार कारण है 250 मीटर की सडक़ पर जो नाले की पुलिया है उसके नाले के पानी का कैचमेंट एरिया सही तरीके से नहीं दिखाया जाना। इस इसका पानी कितनी ऊंचाई तक जाता है और कितनी दूर तक फैलता है इसका स्पष्ट उल्लेख ड्राइंग-डिजाइन में नहीं होने के कारण हाल ही में एसई कार्यालय ने इसे खारिज कर दोबारा ड्राइंग डिजाइन बनाने को कहा है।

वर्तमान में पीछे की आधी सड़क खोदकर छोड़ी - अब पीछे के हिस्से में सडक़ आधी खुदी पड़ी है। और इधर सामने के हिस्से में वाहनों के कारण जाम लग रहे हैं। यहां पर किसान और अनाज व्यापारी दोनों परेशान हैं। दो साल से अलग- अलग प्लान जरूर बनाए, लेकिन काम नहीं हुआ। पूर्व में मंडी के पीछे 1 किलोमीटर लंबी सडक़ बनाकर फोरलेन से इसे जोडऩे प्लानिंग की। लेकिन 7 जमीनों का अधिग्रहण करवाने में अड़चन आ रही थी, इसीलिए इसे ठंडे बस्ते में डालकर 250 मीटर लंबी सडक़ बनाने का निर्णय लिया। लेकिन यह सडक़ भी अब ड्राइंग डिजाइन में अटक गई है।

लंबी-लंबी कतारों से लगता है जाम

खरीफ फसल की कटाई के बाद कृषि उपज मंडी में उपज की की आवक होने लगेगी। ऐसे में वाहन चालकों को फिर जाम जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा, क्योंकि मंडी में आने-जाने के लिए अभी एकमात्र मार्ग है और यह मार्ग भी बडोरा चौक पर है। इसी मार्ग से अन्य वाहन भी निकलते है, जबकि उपज लेकर आने वाले किसानों के ट्रेक्टर-ट्रॉली भी मार्ग पर खड़े रहते है। जिससे बार-बार जाम जैसे हालात निर्मित होते है। बताया जा रहा है कि एप्रोच मार्ग अभी तक बन जाना था, लेकिन ड्राइंग-डिजाइन ही अभी तक फाइनल नहीं हुई। जिसके कारण आने वाले दिनों में फिर किसानों के साथ-साथ वाहन चालकों को बडोरा में जाम जैसी दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।

इनका कहना है -

नाले पर पुलिया बनाने अलग से मंजूरी लेने ड्राइंग डिजाइन बनाकर भेजा था। इसे मंजूरी नहीं मिली है, कैचमेंट एरिया दिखाने समेत अन्य संशोधन करके दोबारा इसे भेजने की तैयारी की जा रही है। कुछ चीजों को दुरुस्त करके दोबारा इसे भेजा जाएगा।

- डीएस परमार, एसडीओ, पीडब्ल्यूडी

बैतूल में होगा एक राष्ट्र-एक चुनाव परामर्श सम्मेलन

4 अक्टूबर को बुद्धिजीवियों, जनप्रतिनिधियों और नागरिकों की होगी भागीदारी

बैतूल। लोकतंत्र को सुदृढ़ बनाने तथा चुनावी प्रक्रिया को सरल और पारदर्शी बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल मानी जा रही 'एक राष्ट्र-एक चुनाव' की अवधारणा पर विचार और विमर्श के लिए बैतूल के अटल बिहारी वाजपेयी सभागार (पीएमश्री जेएच कॉलेज बैतूल) में राष्ट्रव्यापी विचार एवं परामर्श सम्मेलन का आयोजन 4 अक्टूबर को दोपहर 1 बजे किया जा रहा है। एक राष्ट्र एक चुनाव अभियान के जिला संयोजक श्री अतीत पवार ने बताया कि सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में हेमंत खंडेलवाल (प्रदेश अध्यक्ष, भाजपा मध्यप्रदेश) उपस्थित रहेंगे, वहीं मुख्य वक्ता के रूप में उच्च न्यायालय मध्यप्रदेश के सेवानिवृत्त न्यायाधीश एवं एक राष्ट्र एक चुनाव मध्यप्रदेश के प्रदेश संयोजक रोहित आर्य अपने विचार रखेंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता केंद्रीय जनजातीय कार्य राज्य मंत्री एवं बैतूल-हरदा-हरसूद सांसद दुर्गादास उइके करेंगे। गौरतलब है कि एक राष्ट्र -एक चुनाव की परिकल्पना देश में लोकतांत्रिक व्यवस्था को अधिक सशक्त, पारदर्शी बनाने तथा विकसित भारत की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा।

महिला और बच्चा कुएं में डूबे, दोनों की मौत

बैतूल। निमझिरी गांव में एक 45 वर्षीय महिला और 5 साल के मासूम बच्चे की कुएं में डूबने से मौत हो गई। पुलिस ने शुक्रवार को दोनों शवों का पोस्टमार्टम कराया और परिजनों को सौंप दिया। जानकारी के अनुसार प्रेमवती (45), पति सुखराम, मानसिक रूप से अस्वस्थ थी। परिजनों ने बताया कि गुरुवार शाम वह अपने देवर के बेटे हरीश (5) के साथ घर के पीछे बने कुएं की ओर गई थीं। कुछ देर बाद दोनों कुएं में डूब गए। बोडखी चौकी प्रभारी अमित पवार ने बताया कि प्राथमिक जांच में यह दुर्घटना प्रतीत होती है। आशंका है कि हरीश खेलते-खेलते कुएं में गिर गया और उसे बचाने के लिए प्रेमवती भी कूद पड़ीं, जिससे दोनों की डूबने से मौत हो गई। घटना की जानकारी मिलते ही ग्रामीण मौके पर पहुंचे और दोनों को कुएं से बाहर निकाला। उन्हें अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। गांव के सरपंच रामदीन पिपरदे ने बताया कि मृतका प्रेमवती का 17 वर्षीय बेटे की एक साल पहले सडक़ हादसे में मौत हो गई थी। तभी से वह मानसिक तनाव में थीं और बीमार रहने लगी थीं। वहीं मासूम हरीश अपने माता-पिता का इकलौता बेटा था। उसकी आठ बहनें हैं। इस हादसे से पूरे परिवार पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है। पुलिस ने दोनों शवों का पोस्टमार्ट्म कराकर परिजनों को सौंपा। इसके बाद गांव में उनका अंतिम संस्कार कर दिया गया। इस दुखद घटना से निमझिरी गांव में शोक की लहर है।

रिटायर्ड रेंजर की पत्नी की सड़क हादसे में मौत

बैतूल। बैतूल के हमलापुर निवासी और वन विभाग के रिटायर्ड रेंजर शिवपाल साकरे की पत्नी हस्ली बाई साकरे (65) की गुरुवार शाम सडक़ हादसे में मौत हो गई। नागपुर ले जाते समय रास्ते में ही उन्होंने दम तोड़ दिया। अस्पताल पुलिस चौकी शुक्रवार को मृतका का पोस्टमार्टम करवा रही है। पुलिस के अनुसार मृतका पारिवारिक आयोजन में हिस्सा लेने गांव गई थीं। वह अपने बेटे राजू के साथ बाइक से कुमुदरा से लौट रही थीं। भयावाड़ी के पास बाइक स्पीड ब्रेकर से उछल गई, जिससे वह सडक़ पर गिर पड़ीं और गंभीर रूप से घायल हो गईं। परिजन पहले उन्हें निजी राठी अस्पताल ले गए। हालत नाजुक होने पर उन्हें प्राइवेट एंबुलेंस से नागपुर रेफर किया गया, लेकिन रास्ते में ही उनकी मौत हो गई। इसके बाद शव को वापस बैतूल लाकर अस्पताल की मर्चुरी में रखवाया गया। शाम होने के कारण पोस्टमार्टम नहीं हो सका था। घटना की सूचना मिलने पर अस्पताल चौकी पुलिस ने शव का पोस्टमार्ट्म कराने की कार्रवाई शुरू कर दी है। मामले में मर्ग कायम कर केस डायरी कोतवाली पुलिस को भेजी जाएगी।

अवैध रूप से शराब बेचने वाले 2 आरोपी गिरफ्तार

बैतूल। सारनी पुलिस ने अवैध रूप से शराब बेचने वाले दो लोगों को गिरफ्तार किया है। पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार नाव घाट सारणी में दुर्गा विसर्जन ड्यूटी के दौरान पुलिस को मुखबिर द्वारा सूचना मिली थी कि सारणी तरफ एक सफेद रंग बोलेरो क्र. एमएच 29 एल 0052 में अवैध रूप से शराब भरकर ग्रामीण क्षेत्र में बेचने के लिए लेकर जा रहे है। सूचना पर पुलिस ने बोलेरो को रोक कर चेक किया, जिसमें अवैध शराब 8 खाकी रंग के कार्टून, जिसमें लिमोन्ट बियर

लिखा है, प्रत्येक में 12 बियर कुल 96 बाटल प्रत्येक में 650 एमएल कुल 62.400 लीटर एवं 2 देशी प्लेन शराब के खाकी रंग के कार्टून के 4 पैकेट प्रत्येक पैकेट में 50 क्वार्टर प्रत्येक में कुल 200 क्वाटर प्रत्येक में 180 एमएल शराब कुल 36 लीटर शराब, आफिसर च्वाईस के तीन कार्टून प्रत्येक कार्टून में 48 क्वाटर कुल 144 क्वाटर प्रत्येक में 180 एमएल कुल 25.920 लीटर एवं गोवा लाल के डेढ़ पेटी एक में 50 क्वार्टर एवं एक में 25 क्वार्टर कुल 75 क्वाटर प्रत्येक में 180 एमएल कुल 13500 एमएल कुल 137.820 लीटर कुल कीमत 55090 रूपये की पाई जाने पर संतोष वर्मा (60) निवासी शॉपिंग सेंटर सारणी और शिवराम उर्फ गोलू पिता रामकिशन मवासे (30) निवासी डांगवा थाना सारणी को गिरफ्तार कर उनके विरूध्द धारा 34(2) आबकारी एक्ट का कायम कर विवेचना में लिया गया। इस कार्रवाही में थाना प्रभारी जयपाल इनवाती, उपनिरीक्षक आशीष कुमरे, प्रधान आरक्षक श्रीराम उईके, आरक्षक अनुराग इरपाचे, देवा धुर्वे की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

जिले में 12 अक्टूबर से 1.68 लाख बच्चों को दी जाएगी पोलियो की खुराक

बैतूल। जिले में राष्ट्रीय पल्स पोलियो अभियान का अतिरिक्त चरण 12 अक्टूबर को रविवार से शुरू होगा। इसी के तहत जिला स्तरीय कार्यशाला 3 अक्टूबर को पुराना एएनएम प्रशिक्षण केंद्र टिकारी में आयोजित की गई। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. मनोज कुमार हुरमाड़े ने बताया कि राष्ट्रीय पल्स पोलियो अभियान के अतिरिक्त चरण के तहत 12 अक्टूबर को प्रथम दिवस बच्चों को बूथ पर पोलियो की खुराक दी जाएगी, जबकि दूसरे और तीसरे दिन 13 और 14 अक्टूबर को घर-घर जाकर 0 से 5 वर्ष तक के बच्चों को दवा पिलाई जाएगी। डॉ. हुरमाडे ने लोगों से अपील की कि वे बच्चों को पोलियो की खुराक अवश्य पिलाएं और इस अभियान में स्वास्थ्य विभाग का सहयोग करें। उन्होंने कहा कि पोलियो मुक्त भारत के लक्ष्य को प्राप्त करना हम सभी की जिम्मेदारी है और इसके लिए हर बच्चे को दवा पिलाना अनिवार्य है। जिला सर्विलेंस ऑफिसर डब्ल्यूएचओ डॉ. अविनाश कनेरे ने बताया कि जिले में अनुमानित कुल 1 लाख 68 हजार 416 बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाने का लक्ष्य रखा गया है। इसके लिए बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन, क्रॉसिंग प्वाइंट, हाई-रिस्क एरिया, ईंट भट्टे, निर्माण स्थल, मेले, झुग्गी-झोपड़ी और घुमक्कड़ आबादी सहित सभी संवेदनशील क्षेत्रों को चिन्हित किया गया है, ताकि कोई भी बच्चा पोलियो से बचाव की खुराक से वंचित न रह जाए। कार्यशाला में जिला स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. राजेश परिहार, जिला कार्यक्रम प्रबंधक डॉ. विनोद शाक्य, बीएमओ, उप जिला मीडिया अधिकारी महेशराम गुबरेले, एमएंडईओ मनोज चढ़ोकार, बीपीएम, बीईई, बीसीएम, डाटा मैनेजर तापीदास चढ़ोकार, शहरी क्षेत्र से पंजाबराव सेलकरे, कोल्ड चेन मैनेजर दीपक झारिया एवं दीपक वर्मा सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

शुक्रवार सुबह तक हुआ देवी प्रतिमाओं का विसर्जन

पुलिस की रही कड़ी सुरक्षा, अखाड़ों ने किया प्रदर्शन

बैतूल। देवी प्रतिमाओं के विसर्जन का सिलसिला गुरुवार दोपहर से शुरू होकर शुक्रवार सुबह तक चला। शहर के विभिन्न मोहल्लों और क्षेत्रों से भव्य शोभायात्राएं निकाली गईं, जिनमें पारंपरिक अखाड़ों का दमदार प्रदर्शन देखने को मिला। ढोल-नगाड़ों और भक्ति गीतों के बीच उत्साह और श्रद्धा का माहौल बना रहा। विसर्जन के दौरान बच्चा जेल चौक स्थित देवी काली की प्रतिमा का चल समारोह रात 12 बजे शुरू हुआ। इससे पहले हजारों भक्तों की मौजूदगी में भव्य आरती और पूजन संपन्न हुआ। श्री हनुमान व्यायाम शाला के कलाकारों ने जिम्नास्ट और अन्य करतब भी प्रस्तुत किए। इस अवसर पर देवी और भगवान शंकर की प्रतिमाओं का भी चल समारोह निकाला गया। पुलिस प्रशासन ने त्योहार को शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराने के लिए कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की। हर मार्ग पर पुलिस बल तैनात रहा, जिसके कारण अधिकांश कार्यक्रम शांति और अनुशासन के साथ पूरे हुए। हालांकि, विसर्जन के दौरान इक्का-दुक्का स्थानों पर मारपीट की घटनाएं भी सामने आईं, जिन पर पुलिस ने तुरंत हस्तक्षेप कर स्थिति को नियंत्रित किया। इन छोटी-मोटी घटनाओं के बावजूद, संपूर्ण आयोजन बड़े पैमाने पर शांतिपूर्ण माना गया। शहर के टिकारी, कोठीबाजार और अन्य क्षेत्रों से निकली प्रतिमाएं मुख्य मार्ग होते हुए विसर्जन स्थल तक पहुंचीं। श्रद्धालुओं ने वहां देवी प्रतिमाओं को श्रद्धापूर्वक विदा किया। प्रशासन ने विसर्जन स्थलों पर भी बेहतर व्यवस्थाएं सुनिश्चित की थी।

विसर्जन जुलूस के दौरान चाकूबाजी, दो युवक घायल

बैतूल। गुरुवार रात विसर्जन जुलूस में चाकू बाजी की दो अलग-अलग घटनाओं में दो युवक घायल हो गए। इनमें एक को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस ने हमलावर की पहचान कर ली है। लेकिन घायल युवक इससे इनकार कर रहा है। एएसआई जगदीश रायकवार के मुताबिक रात करीब ढाई बजे शहर में निकले विसर्जन जुलूस के दौरान युवक पर चाकू से हमला हो गया। पेट में गंभीर चोट लगने से युवक को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस ने दो आरोपियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है। जानकारी के अनुसार घायल युवक हर्षवर्धन चौधरी (28) विसर्जन जुलूस में जय भोले बाबा समिति के चल समारोह में शामिल था। इसी दौरान टिकारी चौक क्षेत्र में बसोड़ी मोहल्ले के पास झगड़ा हुआ। इसी दौरान चाकू से हमला कर दिया गया। हमले में हर्षवर्धन के पेट में गंभीर चोट लगी। उसे तत्काल अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उसका इलाज जारी है। प्रारंभिक जांच में पुरानी रंजिश की बात सामने आ रही है। हालांकि अस्पताल में भर्ती हर्षवर्धन ने बताया कि जुलूस के दौरान भीड़ में किसी ने अचानक चाकू मारा और वह नहीं देख पाया कि हमला किसने किया। उसे एक व्यक्ति पर शक है, लेकिन उसने नाम बताने से इंकार कर दिया। इधर हमलापुर में भी युवक राजा पवार (23) पर किसी ने ब्लेड से हमला किया। उसे भी नहीं पता कि भीड़ में उसे किसने मारा। पुलिस का कहना है कि आसपास के सीसीटीवी फुटेज खंगाले जाएंगे, जिससे हमलावरों की पुष्टि हो सके।

एएनएम का वेतनमान बढ़ाकर 3200 ग्रेड पे किया जाए

एएनएम संघ ने प्रभारी मंत्री श्री पटेल को सौंपा ज्ञापन

बैतूल। संयुक्त एएनएम एसोसिएशन संविदा-नियमित कर्मचारी संघ ने जिले के प्रभारी मंत्री नरेंद्र शिवाजी पटेल को ज्ञापन सौंपकर महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं की लंबे समय से लंबित समस्याओं के समाधान की मांग की। संघ की जिला अध्यक्ष श्रीमती अर्चना पाटिल ने बताया कि एएनएम ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की रीढ़ हैं। गांव-गांव तक विभागीय योजनाओं को सफलतापूर्वक लागू करने और मातृ-शिशु स्वास्थ्य की निगरानी का दायित्व एएनएम निभाती हैं। बावजूद इसके उन्हें न तो पर्याप्त सुविधाएं मिल रही हैं और न ही उचित मान-सम्मान। ज्ञापन के माध्यम से संघ ने बताया कि स्वास्थ विभाग के अंर्तगत एएनएम संवर्ग द्वारा जमीनी स्तर पर कार्य किया जाता है एवं

विभाग की समस्त योजनाओं का क्रियान्वयन कर हितग्राही तक लाभ पहुंचा कर विभाग के लक्ष्यों की पूर्ति की जाती है। वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा सार्थक उपस्थिति के नाम पर मानसिक एवं आर्थिक रूप से प्रताड़ित किया जा रहा है। जबकि सभी को विदित है कि एएनएम के कार्य एवं कार्य क्षेत्र दोनों ही जोखिम पूर्ण हैं। मातृ एवं शिशु सुरक्षा टीकाकरण एवं अन्य राष्ट्रीय कार्यक्रमों को एएनएम द्वारा संपादित किया जाता है। इसीलिए एएनएम को सार्थक उपस्थिति से प्रथक किया जाए। मध्यप्रदेश शासन द्वारा समय-समय पर कई तरह के अभियान चलाए जाते है, जिसका संपादन एएनएम द्वारा सफलतापूर्वक किया जाता है, लेकिन उसका सम्मान एवं प्रोतसाहन राशि अन्य केडर को दी जाती है और एएनएम को नजर अंदाज किया जाता है। अगर लक्ष्य की पूर्ति न हो तो एएनएम को मानसिक और आर्थिक रुप से प्रताड़ित किया जाता है। अतः निवेदन है कि एएनएम को पूर्व की भांति नर्सिंग केडर में वापस लिया जाए एवं नाम परिवर्तित कर ग्रामीण स्वास्थ संयोजक किया जाए। संविदा एएनएम को शिक्षा विभाग की तरह संविलियन किया जाए। साथ ही नियमित कर्मचारियों की भांति मेडिकल एवं अर्जित अवकाश आदि का लाभ दिया जाए। 2021 तक आवश्यक सामग्री क्रय के लिए मिलने वाला फंड एएनएम को प्रथक से दिया जाए और एएनएम की स्थानीय समस्याओं का निराकरण किया जाए।

संघ शताब्दी वर्ष पर बडोरा में निकला पथ संचलन

400 से अधिक स्वयंसेवकों की गरिमामयी सहभागिता

बैतूल। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण होने पर विजयदशमी पर्व के अवसर पर बैतूल जिले के भैंसदेही खंड के विजयग्राम मंडल और बैतूल नगर की श्री राम बस्ती बडोरा में संघ का पथ संचलन निकाला गया। इस गरिमामयी आयोजन में 400 से अधिक स्वयंसेवकों ने पूर्ण गणवेश में अनुशासन के साथ सहभागिता की। कार्यक्रम की अध्यक्षता नगर संघ चालक संजय घिडोडे ने की, जबकि मुख्य अतिथि शंकर नागले, बस्ती प्रमुख यादोराव देशमुख एवं मुख्य वक्ता नरेश लहरपुरे, जिला प्रचार प्रमुख मंचासीन रहे। कार्यक्रम की शुरुआत भारत माता एवं शस्त्र पूजन से हुई। इसके पश्चात अमृतवचन, एकल गीत की प्रस्तुति दी गई, तत्पश्चात नरेश लहरपुरे ने अपने प्रेरणादायी वक्तव्य में कहा कि असत्य पर सत्य की, अधर्म पर धर्म की, अंधकार पर प्रकाश की और रावण पर श्रीराम की विजय का यह पर्व हम सबके लिए आदर्श बनना चाहिए। उन्होंने संघ की स्थापना से लेकर वर्तमान तक की यात्रा पर विस्तार

से प्रकाश डालते हुए कहा कि वर्ष 1925 में विजयादशमी के दिन डॉक्टर केशव बलिराम हेडगेवार ने नागपुर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की नींव रखी थी। मात्र 15 वर्षों में उन्होंने संघ को पूरे देश में विस्तार दिया। द्वितीय सरसंघचालक श्री गुरुजी ने अपने 33 वर्षों के कार्यकाल में समाज जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में जागरण किया। बाला साहब देवरस ने समाज की चुनौतियों को पहचाना और समाधान की दिशा में कार्य किया। प्रोफेसर राजेंद्र सिंह एवं सुदर्शन जी ने संघ की गुणवत्ता और व्यापकता को विस्तार दिया। वर्तमान सरसंघचालक श्री मोहन भागवत के नेतृत्व में संगठनात्मक दृष्टि से समयानुसार बदलाव कर समाज को नई दिशा देने का प्रयास किया गया। उन्होंने कहा कि जिस संगठन की स्थापना पर कभी उपहास और उपेक्षा की गई थी, आज उसी संघ की समाज में स्वीकार्यता और प्रभाव इतना व्यापक हो गया है कि विरोध करने वाले भी आज सहयोगी बन रहे हैं। शताब्दी वर्ष में पंच-परिवर्तन के माध्यम से परम वैभव का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। संघ ने बीते 100 वर्षों में व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र निर्माण के जो कार्य किए हैं, उनका सार सामाजिक समरसता, कुटुंब प्रबोधन, स्वदेशी, पर्यावरण संरक्षण और नागरिक शिष्टाचार जैसे व्यवहारिक मूल्यों में निहित है। कार्यक्रम के समापन पर भारत माता की प्रार्थना की गई।

देवी विसर्जन के दौरान तालाब में डूबी दो बालिका सुरक्षित, एक की तलाश जारी

मुलताई। निकटतम ग्राम सोनौली में खुशी का माहौल उस वक्त मातम में बदल गया, जब देवी विसर्जन के लिए तालाब पर गई तीन लड़कियां तालाब में डूब गई। जिसमें से दो बालिकाओं को ग्रामीणों द्वारा बचा लिया, किंतु एक बालिका अभी लापता बताई जा रही है। जिसकी तलाश की जा रही है। घटना की जानकारी मिलने के बाद आला अधिकारी घटनास्थल पर पहुंच गए हैं। राज्य आपदा बल एसडीआरएफ की टीम घटनास्थल पर पहुंच गई है और लापता बालिका की तलाश कर रही है। घटना के संबंध में प्राप्त जानकारी के अनुसार सोनोली गांव में शुक्रवार दोपहर करीब 12 बजे ग्रामीण देवी प्रतिमाओं

के विसर्जन के लिए ग्राम के तालाब पर पहुंचे थे। इसी दौरान लक्ष्मी (12), मुस्कान (18) और मोनिका मराठी (11) तालाब में नहाने उतर गईं। बच्चियां गहराई में चली गईं और डूबने लगीं। चीखने की आवाज सुनकर मौके पर मौजूद लोग तुरंत पानी में कूदे। मुस्कान और मोनिका को सुरक्षित बाहर निकाल लिया, लेकिन लक्ष्मी का कोई पता नहीं चला, जिसकी तलाश की जा रही है। हादसे की सूचना मिलने पर तहसीलदार संजय बारिया और थाना प्रभारी देवकरण डहेरिया स्टाफ के साथ मौके पर पहुंचे। तुरंत एसडीआरएफ की टीम को बुलाया, जो बालिका की तलाश कर रही है। ग्रामीणों का कहना है कि तालाब काफी गहरा है और इसके किनारों पर सुरक्षा के कोई इंतजाम नहीं हैं। विसर्जन कार्यक्रम के दौरान बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे, लेकिन हादसा इतनी तेजी से हुआ कि किसी को संभलने का मौका नहीं मिला।

होटल में काम करते हैं लक्ष्मी के पिता- लक्ष्मी के पिता राजेंद्र उमरता मुलताई के होटल में काम करते हैं। उन्होंने कहा- बेटी सहेलियों के साथ विसर्जन के लिए गई थी। मैं उस वक्त घर पर था। मुझे बताया गया कि वह तालाब में नहाने उतरी थी। उसके साथ दो और लड़कियां भी तालाब में गई थीं। उन्हें बचा लिया गया, लक्ष्मी बेटी लापता है।

इनका कहना है

ग्राम सोनोली तालाब में डूबी लड़की की तलाश की जा रही है, अब तक बालिका का शव तलाश दल को नहीं मिला है।

- देवकरण डेहरिया, थाना प्रभारी मुलताई

दृष्टिकोण

मालिनी गौतम

लेखक साहित्यकार हैं।

हमारे समाज का दर्पण बन गया है नवरात्र

नवरात्र शुरू होते ही पूरा देश मानो किसी सामूहिक उत्साह से भर जाता है। गली-मोहल्ले, घर-बाज़ार, मंदिर-पंडाल सब जगह ऐसा लगता है जैसे भक्ति की बाढ़ आई हो। ढोल-नगाड़ों से लेकर भजन मंडलियों तक शोर इतना कि नींद भी अगर आती है तो ढोल की थाप पर ही आती है। हर कोई अपने-अपने ढंग से देवी माँ का आह्वान कर रहा होता है, लेकिन असली खेल कहीं और चलता है।

सबसे पहले चर्चा होती है उपवास की। अब उपवास यानी व्रत का अर्थ बदल गया है। पहले लोग फलाहार पर रहते थे- थोड़ा फल, दूध और पानी। अब फलाहार की परिभाषा यह है- साबूदाने की खिचड़ी, आलू की सब्ज़ी, कुट्टू के आटे के पूरियाँ, पनीर टिक्की, दही वड़ा और मिठाई। जिसे देखो वही व्रत का नाम लेकर ऐसा जश्न मना रहा है कि बगल वाला रोज़ा रखने वाला मुसलमान भी सोच ले कि हमसे ज्यादा कठिनाई तो इन्हीं के व्रत में है। कोई गर्व से कहता है, 'मैं तो पूरे नौ दिन व्रत रखता हूँ।' पर प्लेट में आलू की पाँच सब्ज़ियाँ और मिठाई देखकर लगता है जैसे यह कोई उपवास नहीं बल्कि फूड फेस्टिवल चल रहा है।

ऑफिस वालों की भी बड़ी दिलचस्प कहानी है। कुछ लोग व्रत रखकर चेहरा उतना लटकाते हैं जितना फाइलों का बोझ भी नहीं लटका सकता। दिन भर कहते फिरते हैं, 'आज बहुत थकान है, आज तो बस माता रानी के भरोसे काम होगा।' जबकि डेस्क के नीचे से कभी साबूदाने की खिचड़ी, कभी फ्रूट सलाद, कभी पनीर टिक्की निकलती रहती है। बाकी लोग समझ नहीं पाते कि यह व्रत है या पाँच-स्टार होटल का टेस्टिंग मेन्यू। और जो व्रत नहीं रखते, वे भी पीछे नहीं रहते। दोपहर में गोलगप्पे, शाम को दही-कचौरी और घर जाकर हलवा। पूछो तो जवाब मिलता है- 'अरे भाई, माता रानी का प्रसाद है।' यानी खाओ और पचाओ, सब धर्म के नाम पर मान्य।

अब मोहल्ले की गरबा प्रतियोगिता का हाल सुनिए। असली भक्ति का मंच वहीं सजता है। पहले तो लगता है कि यह देवी का डांडिया है, लेकिन पास से देखने पर लगता है कि यह फैशन शो और नृत्य प्रतियोगिता का मिला-जुला संस्करण है। औरतें नौ दिन तक हर रोज़ अलग ड्रेस पहनती हैं। पहले दिन नीली, दूसरे दिन लाल, तीसरे दिन हरीज़। इतनी बारीक रंग-तालिका कि इंद्रधनुष भी शर्मा जाए। आधा समय डांडिया खेलने में नहीं, बल्कि मोबाइल पर सेल्फी लेने में जाता है। भक्ति कम, कैमरे के सामने मुस्कान ज़्यादा। हर कोई यही चाहता है कि उनकी फोटो फेसबुक, इंस्टाग्राम पर सबसे चमकदार दिखे।

मोहल्ले के बुज़ुर्ग लोग भी पीछे नहीं रहते। कुछ तो ढोल की थाप पर दो मिनट कूद-फांद करके घर जाते हैं और अगले दिन डॉक्टर के पास। वहीं किशोर और जवान लड़के-लड़कियों के लिए यह 'भक्ति का बहाना' और 'फ्रेंडशिप का मौका' होता है। डांडिया की लाठी टकराने में जितनी दिलचस्पी नहीं होती, उतनी आँखों की लाठी भिड़ाने में होती है।

पंडालों का हाल भी ग़ज़ब है। देवी माँ की मूर्ति के साथ-साथ वहाँ प्रायोजकों की तख्तियाँ भी सजती हैं। मूर्ति के नीचे लिखा होता है- 'यह पंडाल प्रस्तुत है XYZ बिल्डर्स की ओर से' या 'इस वर्ष की आरती प्रायोजक- ABC स्वीट्स।' यानी अब देवी माँ भी ब्रांड एंबेसडर हो गई हैं। जिन दुकानदारों को पूरे साल ग्राहक नहीं मिलते, वे भी इन नौ दिनों में 'नवरात्र स्पेशल ऑफर' निकालकर धर्म और व्यापार का अद्भुत संगम करते हैं।

विडंबना देखिए कि नवरात्र का असली संदेश आत्मसंयम और साधना है। देवी की आराधना का अर्थ है भीतर की शक्ति को पहचानना, मन को काबू में रखना, दुर्गुणों पर विजय पाना। लेकिन हम उसे पार्टी, मेला और दिखावे में बदल देते हैं। उपवास पेट को साधने का था, अब जीभ को फैलाने का बहाना बन गया है। भक्ति भीतर की शांति के लिए थी, अब फोटोशूट और सजावट की प्रतियोगिता हो गई है।

नवरात्र के नौ दिन पूरे होते-होते लोग सोचते हैं-'बस अब विजयदशमी आए और हम अपनी असली जीत मनाएँ।' जीत का मतलब? छोले-भटूरे, कचौरी-जलेबी और नॉनवेज़ का भव्य भोज। नौ दिन की कथित साधना का पर्दा वहीं गिर जाता है और अगले साल फिर यही नाटक नए जोश से दोहराया जाता है।

असल सच्चाई यह है कि नवरात्र हमारे समाज का दर्पण बन गया है। इसमें हमारी भक्ति भी झलकती है और हमारा दिखावा भी। हमारे भीतर की धार्मिक आस्था भी, और हमारी व्यापारिक चालाकी भी। हम देवी माँ से शक्ति माँगते हैं, पर अपने आलस्य और पाखंड को छोड़ने की शक्ति कभी नहीं माँगते। देवी से हम प्रगति का आशीर्वाद चाहते हैं, लेकिन दूसरों से प्रतिस्पर्धा और तुलना करने की आदत नहीं छोड़ते।

कहने को तो ये नौ दिन व्रत और संयम के होते हैं, पर असली तपस्या शायद यही है कि इंसान अपने भीतर झाँके, अपनी कमजोरियों पर वार करे और अपने मन को साफ़ करे। बाहर की सजावट, बाहर का ढोल-नगाड़ा, बाहर का मेकअप,ये सब थोड़ी देर के लिए है। असली नवरात्र तब है जब आदमी अपने भीतर की काली शक्तियों को जीत ले।

पर खैर, ये सब दर्शन की बातें हैं। आम आदमी के लिए तो नवरात्र वही रहेगा- ढोल-नगाड़ों का शोर, पंडालों की चमक, गरबा का रंग, उपवास की प्लेट में पकवान और सोशल मीडिया पर ढेरों फोटो। और हम सब मिलकर अगले साल फिर यही कहेंगे- ज़ोर से बोलो 'जय माता दी!'

नवरात्रि के गढ़कालिका मेला प्रांगण में नगर पालिका द्वारा आयोजित कवि सम्मेलन में कवियों ने रचनाओं की प्रस्तुति से मोहा मन

धार। शारदीय नवरात्रि के परम पुनीत पर्व के अंतिम दिवस पर नगरपालिका परिषद धार के तत्वावधान में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन आयोजित किया गया।

कवि सम्मेलन का संचालन करते हुए कवि शरद जोशी 'शलभ' ने श्रोताओं का अभिनन्दन करते हुए कवि सम्मेलन की काव्यमय रुपरेखा प्रस्तुत की। कवि सम्मेलन का प्रारम्भ कवयित्री अर्चना हृदय मुकाती धार के द्वारा प्रस्तुत सस्वर सरस्वती वन्दना से हुआ। राष्ट्रीय हास्य कवि महेश अनघड़ ने ... भगवा पहचान है सनातन की भाई, हर हिन्दू इस पर वारि वारि जाता है। कवि संदीप यादव ने...अपनी रचना पढ़ी...

यहां आकर तो मन प्रसन्न हो गया।
जब जपा नाम मां का भजन हो गया।
कवि गोपाल कावलिया धाकड़ ने ...
हर कचरा कूड़ा नहीं होता।
हर आदमी बुरा नहीं होता। भाव अभिव्यक्त किए।
कवि अजय पाटीदार ने धार की भोजशाला पर रचना पढ़ी...
वेदों के अध्ययन की अनुपम पाठशाला है।
हमारी भोजशाला है।
कवि महेश दांगी उटपटांग ने ..
खड्ग लेकर हाथों में गर्दन अलग कर दो हैवान की।
बता दो सारे जग को बेटों से कम नहीं बेटी हिन्दुस्तान की।

राष्ट्रीय कवि पंकज प्रसून ने, पाप की नाभि में लगे बाण के लिए। हम लड़ेंगे अपने स्वाभिमान के लिए, अत्यंत ही सधे हुए स्वर में रचना प्रस्तुत कर उपस्थित श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया। कवयित्री अर्चना हृदय मुकाती ने ...बेटियों को न समझो बोझ इनसे हर घर में रौनक है। रचना मधुर स्वर में प्रस्तुत की। वृन्दावन से आमंत्रित कवयित्री रचना बैरागी ने सुन्दर श्रृंगारिक रचनाएं प्रस्तुत कर वातावरण को सरस बना दिया ।कवि सम्मेलन के सूत्रधार अन्तरराष्ट्रीय कवि शिव शैलेन्द्र यादव धार ने अपने चिर परिचित दबंग स्वर में रचना प्रस्तुत करते हुए कहा...मोदी ने ऐसी मारी मार गया मच गया मातम सीमा पार पीएम मोदी भारत वाला, जिसने पाकिस्तान धो डाला। रचना प्रस्तुत की। कवि शरद जोशी 'शलभ' ने कवि सम्मेलन का समापन गीत .. सारी दुनिया में है इसकी बड़ी निराली शान...हमारा भारत महान, हमारा प्यारा हिन्दुस्तान। ओजस्वी स्वर में प्रस्तुत किया। इस अवसर राष्ट्रवादी संस्था शहादत को नमन के संस्थापक सेवा निवृत्त नौसेना अधिकारी यादव भी मंच पर विराजमान रहे। धार नगर पालिका परिषद के द्वारा कवियों को प्रतीक चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया।

पूर्व केंद्रीय मंत्री विक्रम वर्मा ने जीएसटी का स्लोगन देकर किया स्वागत

धार। पूर्व केंद्रीय मंत्री विक्रम वर्मा ने केट के प्रदेश मंत्री महेशचंद्र महेश्वरी को जीएसटी का स्लोगन वाला स्टीकर घटी जीएसटी मिला उपहार धन्यवाद मोदी सरकार देकर स्वागत किया। इस अवसर पर विक्रम वर्मा ने कहा कि मोदी सरकार ने आम उपभोक्ताओं को दिवाली के उपहार के रूप में जीएसटी घटाकर वस्तुओं के भाव में कमी की है। उन्होंने वोकल पर लोकल वस्तुओं के व्यापार को बढ़ाने पर ध्यान

दिलाया और कहा कि देश की बनी चीज देश में ही उपयोग हो होता है तो रोजगार उत्पन्न होगा जिससे व्यापार बढ़ता है जिससे हम समृद्ध होंगे अन्य देशों पर निर्भर नहीं रहेंगे ताकि विदेशी ताकत हमें उनके ऊपर निर्भर ना रख सके।

धार गायत्री शक्तिपीठ पर पंचकुंडीय यज्ञ और कन्या भोज के साथ सम्पन्न हुआ नवरात्रि उत्सव

संस्कार और संस्कृति की रक्षा ही समाज को श्रेष्ठ बनाती हैं : डॉ. अनिल पारे

धार। धार गायत्री शक्तिपीठ पर शारदीय नवरात्रि पर्व साधना, अराधना, उपासना जप, तप, के साथ श्रृद्धा, भक्ति और हर्ष उल्लास से मनाया गया। अनुष्ठान का समापन विजयादशमी को पंच कुण्डी यज्ञ के द्वारा किया गया। जिसमें बड़ी संख्या में परिजनों ने गायत्री महामंत्र और अन्य मंत्रों के साथ आहुतियां दीं। आचार्य प्रज्ञा बैरागी द्वारा यज्ञ सम्पन्न करवाया गया। पूर्णाहुति, कन्या पूजन और कन्या भोज के साथ नवरात्रि उत्सव समारोह का समापन हुआ।

श्रेष्ठ साहित्य का अध्ययन, चिंतन और मनन ही

हमारे साथ-साथ आगामी पीढ़ी के भविष्य को संवार सकती है। संस्कार और संस्कृति सनातन धर्म का आधार है इसे बचाए रखने के लिए अनगिनत महापुरुषों ने अपना बलिदान दिया है ताकि आने वाली पीढ़ी अपने संस्कार, संस्कृति और इतिहास पर गर्व कर सके। यह उदगार धार गायत्री शक्तिपीठ पर विजयादशमी पर आयोजित शारदीय नवरात्रि पर्व समापन समारोह में सेवानिवृत्त न्यायाधीश डॉ अनिल पारे ने व्यक्त किए। डॉ पारे ने कहा कि वेद, पुराण, रामायण, गीता आदि वो ग्रंथ है जो युगों से मानव जाति के कल्याण का आधार है। पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा ग्रंथों की साधना, आराधना और उपासना के माध्यम से समाज कल्याण और युग परिवर्तन साहित्य का सृजन सरल शब्दों में किया गया है । स्वाध्याय और सत्संग हमें आगे बढ़ाना सिखाता है चाहे सतयुग हो या कलयुग। हर युग में दो तरह के लोग होते आए हैं एक व्यवस्था बनाते हैं दूसरे व्यवस्था को बिगाड़ते हैं। हमें समाज कल्याण के कार्यों के प्रति लगन अच्छे साहित्य से ही मिल सकती हैं।

डॉ. पारे ने रामचरितमानस के रचयिता तुलसीदास, विवेकानंद , स्वामी राम कृष्ण परमहंस ,वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई, शहीद भगत सिंह, वीर सावरकर, पंडित मदन मोहन मालवीय, पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम आजाद सहित अनेक विद्वानों और क्रांतिकारियों के जीवन के अनेक उदाहरण देते हुए और संस्कार, संस्कृति के लिए दिए गए बलिदानों का उल्लेख करते हुए उपस्थित परिजनों को प्रेरित किया कि दरिद्र सेवा ही नारायण सेवा है हम प्रतिदिन ऐसा कार्य अवश्य करें जिससे किसी निर्धन या असहाय के चेहरे पर मुस्कान आ सके।

समारोह के प्रारंभ में न्यायविद डॉ अनिल पारे का स्वागत धार शक्तिपीठ के प्रमुख ट्रस्टी रमेश चंद सचान द्वारा तिलक लगा कर किया ।

प्रभारी मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने किया शस्त्र पूजन, विजयादशमी पर पुलिस लाइन में दिखा उत्साह

आयोजन देश की सांस्कृतिक और पारंपरिक विरासत को दर्शाता हुआ, पुलिस बल के शौर्य और समर्पण के प्रति सम्मान व्यक्त करने का अवसर बना

धार। विजयादशमी के पावन पर्व पर, धार ज़िले के प्रभारी मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने पुलिस लाइन में आयोजित भव्य समारोह में विधि-विधान से शस्त्र पूजन किया। यह आयोजन देश की सांस्कृतिक और पारंपरिक विरासत को दर्शाता हुआ, पुलिस बल के शौर्य और समर्पण के प्रति सम्मान व्यक्त करने का अवसर बना।

शस्त्र पूजन समारोह में प्रभारी मंत्री के साथ-साथ केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर, विधायक नीना वर्मा, कलेक्टर प्रियंक मिश्रा और पुलिस अधीक्षक (एसपी) मयंक अवस्थी, नीलेश भारती, चंचल पाटीदार सहित कई गणमान्य जनप्रतिनिधिगण,नागरिक एवं वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित रहे।

प्रभारी मंत्री विजयवर्गीय ने इस अवसर पर सभी को विजयादशमी की शुभकामनाएँ दीं और कहा कि यह पर्व बुराई पर अच्छाई, असत्य पर सत्य और अन्याय पर न्याय की जीत का प्रतीक है। उन्होंने देश और ज़िले की शांति, सुरक्षा और सुव्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस बल के साहस और निष्ठा की सराहना की। इस धार्मिक आयोजन में, पारंपरिक रीति-रिवाजों का पालन करते हुए, मंत्रोच्चार के बीच पुलिस के शस्त्रों का पूजन किया गया। पुलिस अधीक्षक मयंक अवस्थी ने कहा कि यह पूजा हमारी परंपरा का हिस्सा है और यह बल के जवानों को अपने कर्तव्य के प्रति समर्पित रहने की प्रेरणा देती है। उन्होंने ज़िले की कानून व्यवस्था को सुदृढ़ बनाए रखने के संकल्प को दोहराया।कलेक्टर प्रियंक मिश्रा ने भी सभी ज़िलावासियों को शुभकामनाएँ दीं और बताया कि यह पर्व हमें आत्म-नियंत्रण और धर्म की रक्षा के लिए प्रेरित करता है। केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर और विधायक नीना वर्मा ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए और ज़िले के विकास एवं सुरक्षा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। इस भव्य आयोजन में पुलिस विभाग के अन्य वरिष्ठ अधिकारी, कर्मचारी भी शामिल हुए।

व्यंग्य

जवाहर चौधरी

लेखक व्यंग्यकार है

लव-लुहान समय में

जी हाँ आप ठीक समझ रहे हैं, अपना देश सिनेमा प्रधान है और बच्चा बच्चा लव-लंगूर । बजट छोटा हो या कि बड़ा, हीरो- हीरोइन लवलुहान होने का ही पैसा लेते हैं। सिनेमा के हिसाब से देखें तो देश में लव के आलावा कुछ होता ही नहीं है। किताबें उठाएंगे तो ज्यादातर में लव रिसता मिलेगा। धार्मिक किताबों में तो इतना लव है कि पढ़ने वाला प्रेमी हो पड़े। लेकिन ट्विस्ट ये है कि आप लव पढ़ सकते हैं, परदे पर देख सकते हैं लेकिन कर नहीं सकते हैं। किसी को भी करो, लव करते ही बवाल मच जाता है। मान्यता है कि भक्त टाइप आदमी लव नहीं करते हैं। और सच्चा भक्त वह होता है जो दूसरे को भी लव नहीं करने दे। लव करने से समाज कमजोर होता है और अपने लक्ष्य से भटक जाता है।

'वे' बहुत बड़े वाले 'वे' हैं । आज 'वे' लव के वायरस से बचाव की समझाइश दें रहे हैं -- 'देखिये नौजवानों ये समय बहुत चुनौती भरा है। नई पीढ़ी को पता होना चाहिए कि विकास पथ पर दौड़ रहे समाज के लिए लव सबसे बड़ी बाधा है। लव के कारण देश और धरम खतरे में है। आप जानते ही हो लव अंधा होता है, वह विवेक हर लेता है। लोग धरम देखते हैं न जाति, न छोटा बड़ा देखते हैं न ऊँच नीच बस लव करने लगते हैं। लव से हजारों साल से चला आ रहा सिस्टम खराब हो रहा है। इसलिए कसम खाओ कि खुद लव नहीं करोगे और किसीको करने भी नहीं दोगे। इस पवित्र भूमि पर कोई लव नहीं करेगा। और तो और अपने भगवान, खुदा, गॉड जो भी हैं उनको भी लव नहीं करना है। इनकी

पूजा की जाती है, इनसे प्रार्थना की जाती है, लव नहीं किया जाता। पूजा करने से माहौल बनता है और लव करने से बिगड़ता है। हमें माहौल होना बस। माहौल बनने से ही बात बनती है, सरकार भी बनती है। कुर्सी का खेल बच्चों का खेल नहीं है। औघड़ श्मशान जगाता है तब उसे शक्ति मिलती है।

वह लव करता तो एक बीवी और चार बच्चों के सिवा और क्या मिलता उसे! इसलिए लव नहीं करना। यह हिदायत है गांठ बांध लो और माहौल पर फोकस करो। माहौल के लिए कुछ भी करना पड़े वह करो सिवाय लव के।'

प्रधानजी बड़ी जिम्मेदारी के साथ मौजूद हैं और पाठ पढ़ा रहे हैं। लव को समाज से पूरी तरह खत्म करने का बीड़ा उन्होंने उठाया है। वे मानते हैं कि समाज के पतन का कारण लव है। एक बार देश लवहीन हो जाए तो उनकी टीम चैन की सांस ले। उनके सत्ता में आने के बाद भी लोग अगर लवलीन हैं तो शरम की बात है। वे बड़ा लक्ष्य ले कर चल रहे हैं और उन्हें सफलता भी मिल रही है। किसी शायर ने कहा है 'मैं अकेला ही चला था जानिब ए मंजिल, लोग जुड़ते गए कारवाँ बनता गया'।

इधर आई लव फलाँ से लेकर आई लव ढ़िकाँ तक के ढ़ोल बज रहे हैं। अरे भई सब अपने अपने वाले को लव करें तो किसी को क्या दिक्कत हो सकती है! कल को कोई आकर आपका दरवाजा पीटने लगे कि तुम अपने बाप से लव करते हो यह बंद करो। तुम अपने बाप को इसलिए लव नहीं कर सकते क्योंकि मैं अपने बाप को लव करता हूँ।

एक मोहल्ले में दो बाप लवर नहीं हो सकते क्या! तो मुद्दा लव का है लेकिन लोग नफरत और गुस्से से भरे हुए हैं। पुलिस तो लव के नाम से वैसे ही भड़कती है। इसलिए मौका मिलते ही वह लव लफंगों को अच्छी तरह बजा रही है। असलियत जानने वाले मानते हैं की यहां लव का मतलब लव नहीं पॉलिटिक्स है। ऊपर वाला भी जानता है की लव-अव कुछ नहीं है, बस माहौल बिगाड़ा जा रहा है। दावे किए जा रहे हैं कि तेरे लव से मेरा लव बड़ा है। लव नहीं हुआ टीवीतोड़ किरकिट मैच हो गया! हम करेंगे पर तुझे नहीं करने देंगे चाहे सब लवलुहान क्यों न हो जाएं।

12 सिरप जांच को भेजी, 3 की रिपोर्ट आई

नरसिंहपुर (नप्र)। छिंदवाड़ा में बच्चों की मौत के मामले को लेकर प्रदेश भर में सवाल उठ रहे हैं। इस बीच प्रदेश के डिप्टी सीएम एवं स्वास्थ्य मंत्री राजेंद्र शुक्ल ने मामले पर बयान दिया है। उन्होंने बताया कि जांच के लिए भेजी गई 12 सिरप में से तीन की रिपोर्ट आ चुकी है, जिनमें कोई आपत्तिजनक तत्व नहीं मिला है।

स्वास्थ्य मंत्री शुक्रवार को नरसिंहपुर जिले के गोटेगांव पहुंचे थे। यहां उन्होंने कैबिनेट मंत्री प्रह्लाद सिंह पटेल की माताजी के निधन पर शोक संवेदना व्यक्त की और परिजनों से मुलाकात कर उन्हें ढांढस बंधाया।

मीडिया से चर्चा के दौरान स्वास्थ्य मंत्री ने छिंदवाड़ा की घटना पर जानकारी दी। उन्होंने बताया कि 12 प्रकार की सिरप जांच के लिए भेजी गई थीं, जिनमें से तीन की रिपोर्ट प्राप्त हो चुकी है। इन रिपोर्ट में बच्चों की मौत की पुष्टि करने वाला कोई तत्व नहीं पाया गया है। मंत्री ने आशंका जताई कि यदि कोई दवा प्रतिबंधित होती है तो वह बाजार में उपलब्ध नहीं होती, लेकिन इस बार दवाओं की किसी विशेष लॉट में गड़बड़ी की संभावना है। उन्होंने स्पष्ट किया कि विस्तृत जांच रिपोर्ट आने के बाद ही स्थिति पूरी तरह स्पष्ट होगी। उसी आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

मुरैना सोलर-प्लस-स्टोरेज परियोजना में 2.70 रुपए प्रति यूनिट टैरिफ

भोपाल (नप्र)। नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा मंत्री राकेश शुक्ला ने आज मुरैना सोलर पार्क के संबंध में मीडिया से चर्चा करते हुए कहा कि मुरैना में विकसित हो रही प्रदेश की पहली सोलर-प्लस-स्टोरेज परियोजना में 2.70 रुपए प्रति यूनिट की टैरिफ मिली है। यह देश की पहली परियोजना है जिसमें 3 रुपए प्रति यूनिट से कम पर फर्म और डिस्पोजेबल रिन्युएबल एनर्जी उपलब्ध होगी।

यह परियोजना 95 प्रतिशत वार्षिक उपलब्धता के साथ भारत की पहली सोलर-प्लस-स्टोरेज परियोजना बन गई है। अब तक देशभर की परियोजनाओं में केवल 50 प्रतिशत पीक ऑवर्स उपलब्धता और 85 प्रतिशत वार्षिक उपलब्धता हो पाती थी। मुरैना परियोजना इस ट्रेंड को बदलते हुए पीक ऑवर्स में 95 प्रतिशत आपूर्ति के नए मानक स्थापित करेगी।

राजधानी के एक होटल में पत्रकारों से चर्चा में शुक्ला ने कहा कि मुरैना सोलर पार्क को रीवा अल्ट्रा मेगा सोलर लिमिटेड द्वारा क्रियान्वित किया गया है जिसने पहले भी नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं को विकसित किया है। मुरैना परियोजना से जनरेट बिजली राज्य द्वारा खरीदी जाएगी। मुरैना सोलर पार्क में 2 यूनिट स्थापित की जा रही हैं, हर यूनिट से तीनों चरणों में 220 मेगावाट क्षमता ऊर्जा का उत्पादन होगा। इस नवाचार से बैटरी का उपयोग दिन में दो बार होगा, जिससे लागत में कमी आएगी। कुल मिलाकर सुबह और शाम के पीक ऑवर्स में 440 मेगावाट सप्लाई होगी।

पहला चरण- वास्तविक समय पर सौर ऊर्जा (220 मेगावाट तक)

दूसरा चरण-शाम के पीक ऑवर्स में 2 घंटे (बैटरी में संचित सौर ऊर्जा से)

तीसरा चरण- सुबह के पीक ऑवर्स में 2 घंटे (रात्रि में ग्रिड से चार्ज बैटरी से)

दो परियोजनाओं का मिश्रण है मुरैना परियोजना

मुरैना परियोजना दो परियोजनाओं का मिश्रण है। जिसमें पहला एक सामान्य सिंगल-चार्ज कम्पोजिट सोलर प्रोजेक्ट है। जिसमें बैटरी को सोलर एनर्जी से चार्ज जाता है। दूसरा स्टोरेज एज ए सर्विस प्रोजेक्ट है, जिसमें अतिरिक्त ग्रिड पावर से रात के समय बैटरी दोबारा चार्ज की जाएगी। इससे सुबह के पीक ऑवर्स की आपूर्ति की जाएगी। इस परियोजना का सबसे बड़ा लाभ यह है कि बैटरी दिन में दो बार उपयोग की जाएगी। मुरैना परियोजना पीक ऑवर्स और दिन के समय में समान स्तर की आपूर्ति (हर इकाई से 220 मेगावाट) के लिए एक बेंचमार्क स्थापित करती है।

पांच डॉक्टरों की पैनल ने शुरू किया बच्ची का पीएम

भोपाल में झांकी पंडाल में खेलते वक्त लगी थी गोली, पुलिस ने घटना का रिक्रिएशन किया

भोपाल (नप्र)। भोपाल के कोलार इलाके में गुरुवार को जिस बच्ची की झांकी पंडाल में गोली लगने से मौत हुई, उसके शव का पोस्टमॉर्टम शुरू हो गया है। हमीदिया अस्पताल में पांच डॉक्टरों की पैनल शव का पीएम कर रही है। एक्सरे में साफ हो गया है कि गोली बच्ची की गर्दन और कंधे के बीच ऊपर से घुसी और कमर में जाकर धंस गई है।

पुलिस पीएम रिपोर्ट मिलने के बाद अज्ञात के खिलाफ हत्या का केस दर्ज करने की तैयारी में है। शुक्रवार की सुबह पुलिस ने घटना का रीक्रिएशन किया। एफएसएल की टीम ने भी मौका मुआयना कर लिया है। पुलिस के मुताबिक शशि हाइटेक सिटी, राजहर्ष कोलार निवासी सुनील रजक पानी सप्लाई करने का काम करते हैं। परिवार में पत्नी और तीन बच्चे हैं। उसकी 10 साल की बेटी रिया रजक चौथी कक्षा की स्कूली छात्रा थी। गुरुवार दोपहर करीब साढ़े 12 बजे रिया दूसरे बच्चों के साथ राजहर्ष कॉलोनी स्थित झांकी के पास खेल रही थी। उसी दौरान अचानक वह गश खाकर गिर गई। लोगों ने देखा कि रिया के बाएं कंधे और गर्दन के बीच गहरा जख्म है और खून बह रहा है। फौरन बच्ची को जेके अस्पताल ले जाया गया, जहां करीब दो घंटे बाद उसकी मौत हो गई।

सिटी स्कैन से नहीं हुआ खुलासा- एसआई जितेन्द्र केवट का कहना है कि डॉक्टर ने बच्ची का सिटी स्कैन कराया था लेकिन उसमें कुछ भी स्पष्ट नहीं हो सका है। एफएसएल पार्टी के डॉक्टर का भी कहना है कि पोस्टमॉर्टम होने के बाद ही मौत के कारण साफ हो सकेंगे। घटनास्थल और आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों के फुटेज खंगाले जा रहे हैं। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि कोई वस्तु ऊपर की ओर से आकर बच्ची के कंधे पर लगी है। पुलिस को अब पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट का इंतजार है।

खंडवा में दुर्गा विसर्जन पर दुख:द हादसा

डैम के बैकवाटर में ट्रैक्टर-ट्रॉली पलटी, 11 की मौत, ढलान पर ट्रैक्टर न्यूट्रल किया, फिर पलट गया

खंडवा (नप्र)। खंडवा में दुर्गा विसर्जन के दौरान डैम के बैकवाटर में ट्रैक्टर-ट्रॉली पलट जाने से 11 लोगों की जान चली गई। ट्रॉली में दुर्गा प्रतिमा के साथ करीब 30 लोग सवार थे। इन लोगों ने विसर्जन के लिए बैकवाटर को चुना था, जहां ढलान पर ड्राइवर ने ट्रैक्टर को न्यूट्रल कर दिया। ढलान खत्म होते ही ट्रैक्टर बेकाबू होकर पानी में समा गया।

हादसा जिस गांव के बाहर हुआ, वहां के लोग तत्काल इकट्ठा हुए और तैराक युवकों ने 12-15 लोगों को बाहर निकाल लिया। बाकी लोग ट्रैक्टर-ट्रॉली के नीचे दब गए। हादसे के करीब डेढ़ घंटे बाद प्रशासन मौके पर पहुंचा। ग्रामीणों और प्रशासन ने मिलकर क्रेन की मदद से ट्रैक्टर-ट्रॉली को पानी से निकाला। इसके बाद लोगों ने तैरकर 10 शव और 3 घायलों को बाहर निकाला। एसडीआरएफ की टीम पहुंची और सर्चिंग करने के बाद आखिरी शव निकाला। आखिरी शव 8 साल की बच्ची का था, जो बैकवाटर में पुलिया के नीचे फंसी हुई थी। जान गंवाने वालों में 8 बच्चियां शामिल हैं। तीन गंभीर घायलों का इलाज खंडवा जिला अस्पताल में चल रहा है।

पीएम मोदी ने हादसे पर दुख जताया

खंडवा हादसे पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दुख जताया है। मृतकों के परिजनों को दो लाख रुपए और घायलों को 50-50 हजार रुपए की राशि देने का ऐलान किया है। इससे पहले मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव भी मृतकों के परिजनों को 4-4 लाख रुपए का मुआवजा देने की घोषणा कर चुके हैं। इधर, प्रशासन ने मृतकों के परिजनों से बैंक खाते और दस्तावेज ले लिए हैं। पंधाना एसडीएम दीक्षा भगोरे ने बताया, पीएम की घोषणा अनुसार मृतकों के परिजनों को 4-4 लाख रुपए की राशि स्वीकृत की जा चुकी है। रात 2 बजे प्रशासन ने गांव में भोजन के पैकेट और शवों के अंतिम संस्कार के लिए पिकअप वाहनों से लकड़ियां भिजवाई।

रास्ते में ट्रैक्टर पंक्चर हो गया, फिर दूसरा बुलाया

हादसे में जान गंवाने वाले सभी लोग पाडलफाटा गांव के रहने वाले थे। हादसा जामलीखुर्द गांव के पास अर्दला डैम के बैकवाटर में हुआ। मृतकों के गांव से घटनास्थल की दूरी करीब 8 किलोमीटर है। दुर्गा विसर्जन से पहले गुरुवार को ग्रामीणों ने सुबह की आरती की, फिर हवन-पूजन के बाद गांव में शोभायात्रा निकाली।इस दौरान बच्चों और महिलाओं ने गांव में खूब नाच-गाना किया। फिर हर बार की तरह तय हुआ कि विसर्जन के लिए अर्दला डैम पर जाना है। ट्रैक्टर में महिलाओं को छोड़कर बच्चे और गांव की शादीशुदा बेटियों सहित कुछ युवा सवार हो गए।

बैकवाटर तरफ मूर्ति लेकर गए

गांव से अर्दला डैम के लिए निकलने लगे तो रास्ते में 5 किलोमीटर जाकर काकोड़ा गांव में ट्रैक्टर पंक्चर हो गया। इसके बाद काकोड़ा गांव से ही एक किसान के ट्रैक्टर को लिया और ट्रॉली में लगा दिया। इसके बाद डैम के लिए आगे बढ़े। दीवाल गांव से होकर अर्दला डैम की पाल पर गए। यहां पाल पर 20 फीट के करीब गहराई होने के कारण उन्हें विसर्जन के लिए स्थान उपयुक्त नहीं लगा। फिर उन्होंने ऐसी जगह चुनी, जहां डैम का बैकवाटर हो, ताकि वहां आसानी से मूर्ति का विसर्जन कर सके।

ड्राइवर ने ढलान पर ट्रैक्टर न्यूट्रल किया

बैकवाटर की यह जगह उन्हें जामलीखुर्द गांव में मिली। जामली गांव की दूरी आधा किलोमीटर के करीब है, लेकिन ट्रैक्टर जाने का रास्ता नहीं था, ऐसे में दो किलोमीटर का फेर लगाते हुए ट्रैक्टर को जामली गांव ले गए। गांव के बाहर ही बैकवाटर है। ड्राइवर ने ट्रैक्टर को बैकवाटर की तरफ लिया। सामने 50 मीटर की ढलान थी। ग्रामीण बताते हैं कि ड्राइवर ने ढलान देखकर ट्रैक्टर को न्यूट्रल कर लिया।

ढलान खत्म होते ही ट्रॉली पलट गई

ढलान खत्म हुई, उससे पहले पानी आ गया और पानी के भीतर पुलिया थी। पुलिया के पास जाकर ट्रैक्टर रुका, लेकिन तब तक वह बेकाबू हो चुका था। ट्रॉली वाला हिस्सा बैकवाटर की गहराई में पलटी खा गया। ट्रॉली के गहराई में उतरते ही ट्रैक्टर भी गिर गया। ट्रैक्टर में करीब 30 लोग सवार थे, तैरकर कुछ युवा बाहर आ गए तो कुछ को ग्रामीणों ने बाहर निकाला। बाकी बच्चे थे, जो ट्रॉली के नीचे दबकर डूब गए। इस तरह कुल 11 लोगों के शव बाहर निकाले गए।

एक ही वक्त जली 11 चिताएं, खंडवा हादसे के पीड़ित परिवारों से मिले सीएम यादव

खंडवा में विसर्जन के दौरान हुए हादसे में जान गंवाने वाले 11 लोगों का शुक्रवार को अंतिम संस्कार कर दिया गया। गुरुवार को जहां शोभायात्रा में सभी डीजे पर डांस कर रहे थे, आज वहीं परिजन का रो-रोकर बुरा हाल है। पूरे गांव में शोक का माहौल है।जिस 8 साल की चंदा का शव सबसे आखिरी में पानी से निकाला गया था, उसकी दो छोटी बहनें हैं। दोनों बहनें चंदा के शव के आसपास खेलती रहीं। वे इस बात से अनजान हैं कि उनकी बड़ी बहन चंदा की मौत हो चुकी है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव शाम 3.40 बजे खंडवा के पाडलफाटा गांव पहुंचे। यहां प्रशासन ने एक टेंट के नीचे सभी पीड़ित परिवारों को बुलवा लिया था। सीएम ने करीब 25 मिनट तक पीड़ित परिवारों से चर्चा की।

उन्होंने कहा कि मृतकों के परिजनों को 4-4 लाख रुपए की मुआवजा राशि दी गई है।घायलों को 50 हजार रुपए और गंभीर घायलों को एक-एक लाख रुपए की राशि दी जाएगी। साथ ही जामली के जिन ग्रामीणों ने लोगों की जान बचाई हैं, उन युवाओं को भी पुरस्कृत किया जाएगा।

मंत्री डॉ. शाह ने मृतकों के परिजन से भेंट कर संवेदना प्रकट की, हर संभव मदद का दिया आश्वासन

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के निर्देश पर जनजातीय कार्य मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह ने शुक्रवार को पन्धाना तहसील के ग्राम जामली राजगढ़ में ट्रैक्टर ट्रॉली दुर्घटना के मृतकों के परिजन के घर जाकर संवेदना प्रकट की। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार पीड़ित परिवारों के साथ है। मंत्री डॉ. शाह ने मृतकों के परिजन को हर संभव मदद प्रदान किये जाने के लिए आश्वस्त किया। उन्होंने दुर्घटना के घायलों के हर संभव इलाज के लिए भी अधिकारियों को निर्देश दिए।

'मछली' परिवार, हाईकोर्ट में सुनवाई से पहले पेश करेंगे दस्तावेज

13 अक्टूबर को होगी अगली सुनवाई, सरकारी जमीन पर काबिज लोगों को मिल सकती है राहत

भोपाल (नप्र)। यौन शोषण और ड्रग्स तस्करी के मामले में फंसे भोपाल के मछली परिवार प्रकरण में 13 अक्टूबर को जबलपुर हाईकोर्ट में सुनवाई होगी। इससे पहले जिला प्रशासन हाईकोर्ट में दस्तावेज पेश करेगा। ये दस्तावेज नियम-कायदों से जुड़े हैं। हाईकोर्ट ने राज्य सरकार, भोपाल कलेक्टर, डीसीपी क्राइम और तीनों बैंकों के अधिकारियों को रिकॉर्ड के साथ प्रस्तुत होने और कार्रवाई की वैधता स्पष्ट करने को कहा था।

पिछले सप्ताह मामले पर सुनवाई हो चुकी है। सुनवाई के दौरान राज्य सरकार की ओर से हाईकोर्ट में जबाव पेश करते हुए बताया गया था कि कानून के दायरे में रहकर ही कार्रवाई की गई है। जस्टिस विशाल मिश्रा की कोर्ट ने राज्य सरकार से विस्तृत जवाब मांगते हुए फैसला सुरक्षित रखा है।

बता दें कि मछली परिवार की साजिदा बी के साथ 9 अन्य सदस्यों ने हाईकोर्ट में याचिका दायर करते हुए बताया था कि सरकार ने कार्रवाई के दौरान संपत्ति को नुकसान पहुंचाया है। जिसे लेकर यह याचिका दायर की गई।

सभी दस्तावेज तैयार

स्थानीय अफसरों का कहना है कि कार्रवाई नियमों के अनुसार ही की गई थी। हाईकोर्ट में अपना पक्ष रखा है। दस्तावेज भी तैयार है। जल्द ही हाईकोर्ट के समक्ष प्रस्तुत किए जाएंगे।

यह है मामला

बता दें कि भोपाल के आनंदपुरा में रहने वाली साजिदा बी एवं अन्य 7 लोगों की ओर से हाईकोर्ट में याचिका दायर करते हुए बताया गया कि उनके नाम एफआईआर में नहीं है और न ही उनके खिलाफ कोई अपराध की जांच चल रही है। इसके बावजूद भी यासीन के खिलाफ एफआईआर दर्ज होते ही उनकी संपत्ति तोड़ी गई। बैंक खाता भी फ्रीज किए गए। यहां तक कि उनके ई-मेल भी ब्लॉक कर दिए गए।

अभियुक्त नहीं फिर भी मकान तोड़ा

याचिकाकर्ता की ओर से बताया गया था कि किसी आपराधिक मामले में अभियुक्त नहीं हैं। फिर भी उनके मकानों को तोड़ा गया। 21 अगस्त 25 को जब प्रशासन ने संपत्ति ध्वस्त करने को लेकर कार्रवाई की थी तो कोई भी वैद्य नोटिस या उचित प्रक्रिया नहीं अपनाई गई थी।

याचिकाकर्ता ने कोर्ट को बताया कि अन्य सरकारी जमीन पर रह रहे हैं, लेकिन केवल उन्हें ही निशाना बनाया गया। कोर्ट ने स्पष्ट किया कि बिना अभियोग के घरों को तोड़ना, बैंक खाता फ्रीज करना और हथियार लाइसेंस निलंबित करना संवैधानिक अधिकारों का हनन है।

इधर, पशुपालन विभाग की जमीन पर काबिज लोगों को मिल सकती है राहत

दूसरी ओर, अनंतपुरा कोकता स्थित पशुपालन विभाग की 6 एकड़ से ज्यादा जमीन पर जिन लोगों का कब्जा सामने आया है, उन्हें जिला प्रशासन बड़ी राहत दे सकता है। बता दें कि सीमांकन के बाद कब्जेदारों को बेदखल करने गोविंदपुरा तहसीलदार सौरभ वर्मा की कोर्ट में सुनवाई शुरू हुई है। इसमें रहवासियों और कब्जेदारों ने मालिकाना हक के दस्तावेज भी पेश किए हैं।

सुनवाई पूरी होने के बाद सरकारी जमीन पर काबिज लोगों को बेदखल किया जाएगा। फिर कब्जेदारों को धारणाधिकार योजना के तहत नियमित किया जा सकता है। कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह ने इस जमीन पर काबिल लोगों को राहत देते हुए धारणाधिकार का फायदा देने की बात कही है।

यह है नियम

राजस्व विभाग के अनुसार, धारणाधिकार योजना के तहत 31 दिसंबर 2014 के पहले जो भी व्यक्ति सरकारी जमीन पर काबिज हो। जमीन का उपयोग चाहे आवासीय और या फिर व्यवसायिक के रूप में किया जा रहा हो। उसे इस योजना के तहत सरकार मालिकाना हक देती है। इसके लिए एक तय प्रीमियम की राशि तहसीलों में जमा करना होती है। उसके लिए जरूरी प्रक्रिया और दस्तावेजों को पेश करना होता है। उसकी जांच के बाद इस योजना का फायदा आम लोगों को दिया जाता है। इस मामले में अफसरों ने ये तैयार की है कि इस योजना के तहत आम लोगों को नियमित किया जाएगा। ताकि किसी प्रकार से विवाद की स्थिति निर्मित न हो।

हाल ही में सरकार ने इस योजना में बदलाव कर कट ऑफ डेट 2014 से जिसे बदलकर अब 31 दिसंबर 2020 कर दिया गया है। यानी इस डेट तक बसे हुए लोगों को इस योजना का लाभ दिया जा सकता है। हालांकि, अभी यह पूरी तरह से तय नहीं हुआ है।

मछली परिवार को भी मिल सकता है फायदा

यदि इस योजना पर अमला होता है तो अतिक्रमणकारियों की लिस्ट में शामिल मछली परिवार समेत 40 अतिक्रमणकारियों को इस योजना का फायदा मिलेगा। इसमें डायमंड सिटी कॉलोनी, कोर्टयार्ड प्राइम सहित अन्य कॉलोनियों और निजी कॉलोनियों के लोगों को सीधा फायदा होगा।

ये मिला था कब्जा

नगर निगम की 50 दुकानें, एसटीपी प्लांट, एचपी पेट्रोल पंप, कोर्टयार्ड प्राइम का गेट, पहुंच मार्ग और पार्क, डायमंड सिटी कॉलोनी का पहुंच मार्ग और बीस मकान, द ग्रीन स्केप मेंशन शादी हाल रिसोर्ट, बीपीएस स्कूल, राजधानी परिसर पहुंच मार्ग, कोकता मुख्य बायपास 400 फीट, फर्शी पत्थर की दुकान, चार एकड़ 30 डेसीमल जमीन पर खेती, शंकराचार्य फार्म का पहुंच मार्ग और एक एकड़ पर फार्म हाउस और पक्का निर्माण सामने आया है।

'भावांतर' की रिलॉन्चिंग के विरोध में किसानों की ट्रैक्टर रैलियां

किसान बोले- जब एमएसपी लागू तो भावांतर क्यों; 2017 में शिवराज ने शुरु की थी स्कीम

भोपाल (नप्र)। शिवराज सरकार द्वारा 2017 में शुरू की गई भावांतर योजना मप्र की मोहन सरकार फिर से शुरू करने जा रही है। सोयाबीन के लिए आज से पंजीयन शुरू होंगे। इस योजना के विरोध में मप्र के अलग-अलग इलाकों में किसान ट्रेक्टर रैलियां निकाल रहे हैं। हरदा, नरसिंहपुर, नर्मदापुरम सहित कई जिलों में किसान भावांतर के खिलाफ रैलियां निकाल चुके हैं।

योजना का किसान क्यों कर रहे विरोध

किसानों का कहना है कि मध्यप्रदेश में 2017 में लागू की गई भावांतर भुगतान योजना किसानों के लिए लाभकारी साबित नहीं हुई। किसानों के अनुभव कड़वे रहे और इस कारण इसे आगे नहीं बढ़ाया गया। इसके बावजूद इस वर्ष राज्य सरकार ने इसे फिर से शुरू कर दिया है। किसानों का कहना है कि यह योजना उनके हित में नहीं बल्कि शोषण के लिए है। जब पहले से ही न्यूनतम समर्थन मूल्य मौजूद है तो फिर अलग से भावांतर भुगतान योजना क्यों? सरकार यह स्पष्ट नहीं कर पा रही कि यह योजना किसानों के लिए फायदेमंद है या उद्योगों और व्यापारियों के लिए।

सरकार पहले मुआवजा दे

किसानों का कहना है कि जब फसलें बर्बाद हो चुकी हैं तो सरकार का पहला कर्तव्य मुआवजा देना है। और जो उत्पादन बचा है, उसका सही मूल्य दिलाने के लिए एमएसपी के ऊपर बोनस देना चाहिए। तभी किसानों को वास्तविक राहत मिलेगी। सोयाबीन उत्पादक किसान अब गांव-गांव में प्रदर्शन कर रहे हैं और सरकार को चेतावनी दे रहे हैं कि यदि मांगें नहीं मानी गईं तो प्रदेश स्तर पर बड़ा आंदोलन होगा।

सीएम यादव ने की थी घोषणा

सीएम डॉ. मोहन यादव ने आठ दिन पहले सागर में एक कार्यक्रम के दौरान कहा कि न्यूनतम समर्थन मूल्य से कम कीमत पर सोयाबीन बिकता है तो हमारी सरकार इस योजना के तहत किसानों के घाटे की भरपाई करेगी। सीएम सागर जिले के सुरखी विधानसभा क्षेत्र के जैसीनगर में एक सभा को संबोधित कर रहे थे। सीएम डॉ. मोहन यादव ने कहा- प्रधानमंत्री मोदी ने सोयाबीन का समर्थन मूल्य 5328 रुपए भाव तय कर दिया है।